डॉ0 नारायण दत्त श्रीमाली

१०० स्वर्णिम सूत्र

विशेषतः आपके लिए

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

जी हां . . . ! गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनें

एक ऐसी आध्यात्मिक पत्रिका, जो परिचय कराती है साधनात्मक जगत के विभिन्न आयामों से, जिसमें दिये गए सारगर्भित लेखों में बतायी गयी साधनाओं को जान कर आप, अपने व्यक्तित्व को निखार सकते हैं। सभी लेख जीवन की यथार्थता का बोध कराते हुए।

इसमें प्रतिमाह आप के लिए हैं –

तथ्य, साधनात्मक लेख, विभिन्न सम्भ्रान्त व्यक्तियों के जीवन को सफल बनाते अनुभव, राजनीतिक उथल-पुथल, शेयर मार्केट का भविष्य तथा अनेक रोचक कथा एवं विविध स्थायी स्तम्भ। बहुत सी विविधताओं को अपने में समेटे है यह पत्रिका।

इसीलिए तो यह प्रिय है आपके परिवार के प्रत्येक सदस्य की।

वार्षिक सदस्यता शुल्क – 195/– डाक खर्च अतिरिक्त।

आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड स्पष्ट अक्षरों में भर कर हमारे पास भेज दें . . . शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

:: सम्पर्क इस पते पर करें ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ.श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट, कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291–32209, फैक्स : 0291–32010

आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के 100 स्वर्णिम सूत्र

आशीर्वाद

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

संकलन - सम्पादन
श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली
एवं
श्री अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक
मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान
डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर – 342001 (राजस्थान)
फोन : 0291–32209, फेक्स : 0291–32010

नवीन संस्करण : गुरु जन्मोत्सव **1998**

प्रति : **1100**

मूल्य : **50/-**

मुद्रक : सहारा इण्डिया मॉस
कम्यूनिकेशन, नोएडा

पूज्य गुरुदेव के द्वारा दिये गये प्रवचन, कैसेट, "मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान" पत्रिका के पुराने अंकों से लिये लेखों तथा नवीनतम ज्ञान से संजोकर यह पुस्तक तैयार की गई है।
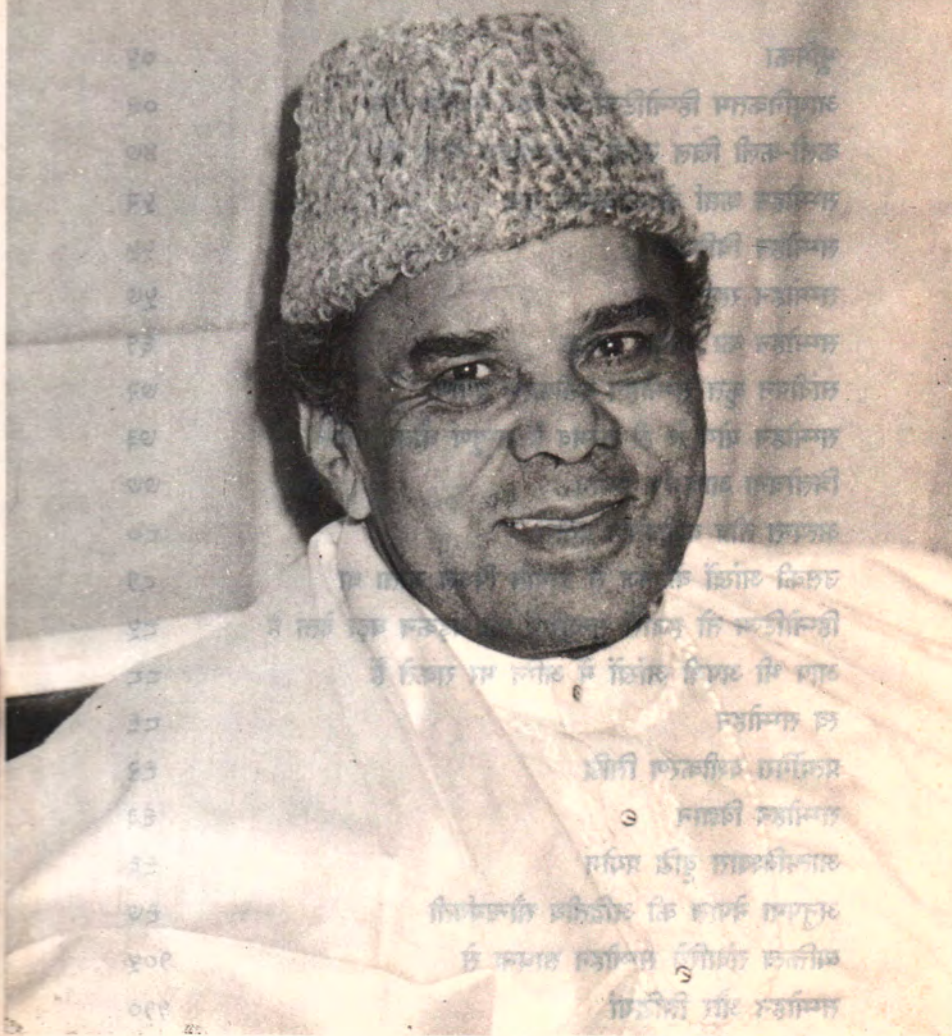
पूज्य गुरुदेव
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

अनुक्रम

भूमिका. . .

सम्मोहन विज्ञान आज विश्व का श्रेष्ठतम विज्ञान है, और पूरे विश्व में इस बात को स्वीकार किया जाता है, कि यह एक क्रांतिकारी विज्ञान है, जिसके माध्यम से असम्भव को भी सम्भव किया जा सकता है।

संसार में ऐसा कोई देश नहीं है, जहां पर इसके बारे में कोई शोध नहीं हो रही हो या इसके माध्यम से लाभ नहीं उठाया जा रहा हो। अमेरिका में तो बिना बेहोश किये केवल सम्मोहन के माध्यम से ही बड़े से बड़े ऑपरेशन किये जाते हैं, जिससे कि बेहोशी या एनिस्थीज़िया देने से जो रक्त में समस्याएं पैदा होती हैं, वे समस्याएं मिट जाती हैं, और रोगी स्वयं अपने-आप को ऑपरेशन करता हुआ देखता है, मगर उसे किसी प्रकार की पीड़ा नहीं होती।

इसके अलावा दूसरों के मन को जान लेना, चोरी या चोरों को पकड़ लेना, उनसे चोरी कबूल करवा लेना, या पुरुषों और स्त्रियों में जो कुंठाएं व्याप्त हो गई हैं, उन कुंठाओं को दूर करना, या जिनको भूत, प्रेत, पिशाच आदि का डर बना रहता है, या जो अपने-आप में समस्या ग्रस्त होते हैं, उनके लिए सम्मोहन विज्ञान अपने-आप में वरदायक बनकर आया है।

मैंने कई देशों का भ्रमण किया है, और सम्मोहन से सम्बन्धित जितने अच्छे विद्वान हैं, उन सबसे मैं मिला हूं। अमेरिका के डॉ० हल्बर्ट, लन्दन के डॉ० ऐबलिश, जर्मनी के प्रोफेसर ब्रेम बिम सम्मोहन के अद्वितीय विद्वान हैं, और उन्होंने सम्मोहन के माध्यम से कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं। एक स्थान से बैठे हुए दूसरे स्थान पर रोगी को सम्मोहित करके ऑपरेशन करवाने में भी सफलता पाई है, उदाहरण के लिए अमेरिका के डॉक्टर ने एक स्त्री, जो कि इंग्लैंड के ऑपरेशन थिएटर में थी, अमेरिका में बैठे-बैठे ही उसके चित्र के माध्यम से उसको सम्मोहित किया और उसका सफल ऑपरेशन बिना एनिस्थीज़िया के किया।

भारत में इस पर जितना कार्य होना चाहिए था, उतना कार्य नहीं हो पाया है, फिर भी आज से कई साल पहले **डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** ने **"प्रैक्टिकल हिप्नोटिज्म"** के माध्यम से इसे पूर्णता देने का प्रयास किया था, कि किस प्रकार से सम्मोहन विज्ञान या जिसको "हिप्नोटिज्म" कहते हैं, हमारे जीवन के लिए आशाप्रद है।

मैं भारत के भी कई सम्मोहन वेत्ताओं से मिला हूं, मगर दुःख के साथ मुझे यह कहना पड़ रहा है, कि उनमें से अधिकांश प्रथम स्तर के सम्मोहन विज्ञानी हैं, हो सकता है, कि कुछ अच्छे सम्मोहन कर्ता हों, जो मेरी नजर में नहीं आये हों या मैं उनसे भेंट नहीं कर पाया हूं, परन्तु जिनसे भी मैं मिला वे सिर्फ करतबबाज मिले, ऊपरी स्तर पर तो वे सम्मोहन करने में सफल हो जाते हैं, मगर उनको रोगी या सामने वाले व्यक्ति को भावना देकर के उनके मन

की गांठें खोल देना या उनके मानसिक तनाव को दूर कर देना, ऐसी स्थितियां अभी तक वे नहीं कर पाए हैं, और जब तक गहराई के साथ सम्मोहन को नहीं समझा जाएगा, तब तक सम्मोहन का पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता।

सम्मोहन के माध्यम से दूर बैठे हुए व्यक्ति को भी भावना दी जा सकती है, उसको अनुकूलता प्रदान की जा सकती है, उसका ऑपरेशन किया जा सकता है, बिछड़े हुए प्रेमियों को मिलाया जा सकता है, खोये हुए बालकों का पता लगाया जा सकता है, मिर्गी और हिस्टीरिया जैसे रोगों को दूर किया जा सकता है, असाध्य बीमारियों को हिप्नोटिज्म के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है। टी०बी० और कैंसर जैसी बीमारियों को भी हिप्नोटिज्म के माध्यम से दूर करने में सफलता पाई गई है।

इसके अलावा सबसे बड़ी मानव-मन की जो ग्रन्थियां हैं– पति-पत्नी के बीच में मतभेद, बिगड़ती लड़की को रास्ते पर लाना, उद्दन्ड लड़कों को नियंत्रण में रखना, जो चोरी करने वाले नौकर हैं या मालिक और नौकरों के बीच में बिगड़ते हुए सम्बन्ध हैं, इन सभी मामलों में हिप्नोटिज्म अपने-आप में एक सफल और श्रेष्ठ विज्ञान बन पाया है।

अगर सही अर्थों में कहा जाय, तो आज केवल सम्मोहन विज्ञान ही अपने-आप में एक ऐसी विधा है, जिसके माध्यम से बिना चीर-फाड़ किये या बिना किसी को तकलीफ दिए हम पूर्णतः सफल हो सकते हैं, इसीलिए सम्मोहन विज्ञान को आज का श्रेष्ठ विज्ञान कहा गया है।

मैंने यह अनुभव किया है, कि भारतवर्ष में "डॉक्टर नारायण दत्त श्रीमाली जी" सम्मोहन के क्षेत्र में एक प्रबुद्ध, उद्भट और अद्वितीय विद्वान हैं। ऐसा कह कर मैं उनकी तारीफ नहीं कर रहा हूं, मैंने उनके इस रूप को देखा है, और अनुभव किया है, कि वे इसके माध्यम से, जो मैंने ऊपर नाम गिनाए हैं, उनसे भी ज्यादा ऊंचे स्तर के सम्मोहन विज्ञानी हैं।

मैंने सैकड़ों रोगियों को उनके पास आते हुए और उनके रोगों को मिटाते हुए अनुभव किया है, मैंने उन्हें जो कुंठाग्रस्त लड़के या लड़कियां हैं, उनकी मानसिक समस्याओं को दूर करते हुए पाया है, जिन बालकों का विकास नहीं हो रहा था या जो मंद बुद्धि थे, उनको तीव्र बुद्धि बनाने में उन्होंने सफलता पाई है, और मैंने उन्हें किसी वजह से यदि लड़की और लड़के में, प्रेम के क्षेत्र में, युद्ध के क्षेत्र में, मुकदमे में या जीवन के अन्य क्षेत्रों में जो कुछ विषमताएं या कुंठाएं थीं, उन सब को दूर करते हुए अनुभव किया है, इसके बावजूद भी वे अत्यन्त सरल और सात्विक प्रकृति के हैं, और उनमें घमंड छू तक नहीं गया है।

मैंने यह अनुभव किया है, कि उन्होंने कुछ ऐसे विद्यार्थी तैयार किये हैं, जो सम्मोहन के क्षेत्र में सफलता पा रहे हैं, परन्तु थोड़ी सी सफलता पाने के बाद में वे अपने-आप को धुरन्धर हिप्नोटिस्ट या सम्मोहन विज्ञानी मानने लग जाते हैं, और वे आगे के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर पाते, इस बात का डॉक्टर श्रीमाली जी को भी बहुत दुःख है, मगर यदि इस व्यक्ति को सही ढंग से पहिचानें, तो हम सैकड़ों-हजारों लोगों की समस्याओं को दूर

कर सकते हैं, और उन्हें एक सुखी एवं आनन्दप्रद जीवन दे सकते हैं।

मैं पिछले कई वर्षों से डॉक्टर श्रीमाली जी के सम्पर्क में हूं, और मैंने यह अनुभव किया है, कि उन्होंने बिना कुछ भी लिये हजारों केस या हजारों समस्याएं सुलझाई हैं। वे कहते हैं, कि *"सम्मोहन विज्ञान अपने-आप में कोई कमाने की वस्तु नहीं है। सम्मोहन विज्ञान के माध्यम से मैं कमाई करूं, यह मेरा उद्देश्य या लक्ष्य नहीं है। मैं तो इस विज्ञान को सही रूप से भारत में स्थापित करना चाहता हूं। मैं यह भारत को समझा देना चाहता हूं कि जो विश्व में इस पर शोध हो रही है, वे हमसे बहुत आगे के स्तर पर पहुंच गए हैं और यदि समय रहते थोड़ा सा ध्यान दें, तो हम भी सम्मोहन के क्षेत्र में विशेष सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं या सम्मोहन विज्ञान को काफी ऊंचाई पर ले जा सकते हैं।"*

इस उम्र में भी बिलकुल तत्पर, कर्मठ और निरन्तर कार्य करते हुए मैंने उन्हें देखा है, मगर पिछले कुछ वर्षों से उन्होंने इस कार्य को बंद कर दिया है। उनका कहना है, कि "अब मैं दूसरे क्षेत्रों में ज्यादा काम करना चाहता हूं। सम्मोहन के क्षेत्र में मुझे जो कुछ करना था, मैंने किया है, और अभी इसमें काफी काम बाकी है, मगर दूसरे विषयों को भी स्पष्ट करना, दूसरे विषयों में भी काम करना मेरे लिए आवश्यक हो गया है।" इसलिए अब वे किसी प्रकार से सम्मोहन के कार्य को नहीं करते हैं, फिर भी यदि वे देखते हैं, कि कोई समस्या बहुत अधिक उलझी हुई है, और इससे परिवार टूटने या बिखरने लगा है, तो वे इस मामले में सहायता कर लेते हैं, फिर भी यह उनकी इच्छा है, कि वे किसी व्यक्ति का सम्मोहन के माध्यम से कार्य करें या नहीं करें, मगर मैंने यह अनुभव किया है, कि उन्हें सम्मोहन का बहुत गहरा और अद्वितीय ज्ञान है। उन्होंने एक बार चर्चा के दौरान मुझे बताया था, कि "यदि कुछ व्यक्ति इस सम्मोहन विज्ञान को मुझसे सीख लें, तो एक बहुत बड़ी उपलब्धि हो सकेगी, और यह विद्या अपने-आप में पूर्णरूप से जीवित हो सकेगी।"

मैं समझता हूं, कि अगर अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी और जापान में इस विज्ञान को बहुत अधिक महत्व दिया जा रहा है, तो समय रहते हमें भी सावधान होना चाहिए, और इस विज्ञान का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाना चाहिए। मगर इस बात का ध्यान रहे, कि सम्मोहन के माध्यम से कोई गलत काम नहीं किया जाय, सम्मोहन का कोई दुरुपयोग नहीं किया जाय, नैतिक और कानूनी दृष्टि से किसी भी प्रकार का ऐसा कोई कार्य सम्मोहन विज्ञानी नहीं करे, जिससे कि समाज के किसी वर्ग को कोई नुकसान पहुंचता हो। यह तो एक परोपकारी कार्य है, जिसके माध्यम से हम ज्यादा अच्छा व्यक्ति, अच्छा समाज, अच्छा देश, अच्छा राष्ट्र बना सकते हैं, अतः इसीलिए यह विज्ञान अपने-आप में उपयोगी है. . . और यही डॉक्टर श्रीमाली जी की धारणा है, चिन्तन है, विचार है और इच्छा है।

इस पुस्तक को लिखने की आवश्यकता इसलिए पड़ी, क्योंकि काफी समय से शिष्यों की मांग आ रही थी, कि सम्मोहन के बारे में डॉक्टर श्रीमाली जी हमारा मार्गदर्शन करें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में समय-समय पर सम्मोहन विज्ञान पर लेख प्रकाशित होते रहे हैं। इस पुस्तक में उन लेखों का उपयोग भी किया है, और डॉक्टर श्रीमाली जी से सम्पर्क स्थापित कर, जो इसके स्वर्णिम सूत्र हैं, उनको भी इस पुस्तक में पहली बार देने का प्रयास किया है।

इस प्रकार यह पुस्तक अपने-आप में प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी और अनुकूल बन पाई है। यदि कोई साधक स्वतः उपाय करे, स्वतः ही इसके बारे में चिन्तन करे या स्वतः ही इसे सीखने का प्रयास करे, तो वह सीख सकता है, और यदि किसी अच्छे सम्मोहन विज्ञानी के पास जाकर के भी वह सम्मोहन विज्ञान को समझना चाहे या सीखना चाहे, तो सीख सकता है।

जैसा कि मैंने ऊपर बताया है, कि मैं लगभग पूरे विश्व का दौरा कर चुका हूं, और मेरी रुचि पिछले चालीस वर्षों में यही रही है, कि मैं सम्मोहन के क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा जानकारी प्राप्त करूं, और मैंने यह अनुभव किया है, कि पश्चिम में जो उच्चकोटि के सम्मोहन विज्ञानी हैं, उनसे कई गुना श्रेष्ठ ज्ञान डॉक्टर श्रीमाली जी के पास में है, यह कहते हुए मुझे किसी भी प्रकार का कोई संकोच नहीं है। यह अलग बात है, कि वे प्रदर्शन से दूर रहते हैं। यह अलग बात है, कि उन्होंने कभी अपने-आप को इस प्रकार से प्रस्तुत नहीं किया, अपने-आप की अहमन्यता नहीं दिखाई, मगर उनके पास जो अगाध ज्ञान है तथा सम्मोहन विज्ञान के तीन स्तर ही नहीं, अपितु सम्मोहन विज्ञान के सातों स्तर का उन्हें पूर्ण ज्ञान है। वे पत्थर को भी यदि चाहें, तो नियंत्रण में ला सकते हैं, और किसी भी प्रकार की कुंठा या किसी भी प्रकार की समस्या को इस विज्ञान के माध्यम से सुलझा सकते हैं।

उनके ये सूत्र अपने-आप में महत्वपूर्ण हैं, और यह पुस्तक प्रत्येक गृहस्थ और प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। उनको चाहिए, कि वे इस पुस्तक के माध्यम से सीखने का प्रयास करें, परन्तु यह भी आवश्यक है, कि बिना किसी योग्य सम्मोहन कर्ता के स्वयं प्रयास सोच-विचार कर ही करें, क्योंकि कई बार इससे आंखों को नुकसान पहुंच सकता है। **"सूर्य त्राटक"** तो बिना योग्य सम्मोहन कर्ता के करना ही नहीं चाहिए, क्योंकि वही समझा सकता है, कि किस प्रकार से सूर्य को देखकर के त्राटक को सम्पन्न किया जा सकता है।

हम डॉक्टर श्रीमाली जी के आभारी हैं, कि उन्होंने हमें इसके सौ सूत्रों को देने का प्रयास किया है, साथ ही साथ इस पुस्तक में मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, जो पत्रिका प्रकाशित होती है, उसके लेखों को संग्रहित किया है, और इस प्रकार से इस पुस्तक को हमने सर्वांगपूर्ण बनाने का प्रयास किया है, जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति को इससे ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके और प्रत्येक व्यक्ति इसका ज्यादा से ज्यादा उपयोग कर सके।

मुझे विश्वास है, कि यदि समाज में एक नई चेतना और समाज की समस्याओं व पारिवारिक समस्याओं को सुलझाने में यह पुस्तक लाभप्रद सिद्ध हुई, तो मैं अपने-आप को सौभाग्यशाली समझूंगा।

❊

आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के 100 स्वर्णिम सूत्र

सम्मोहन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी है, और आज के युग में तो जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए आवश्यक हो गया है, कि इस अद्भुत, रहस्यमय, अलौकिक और पूर्ण सफलता देने वाले **'हिप्नोटिज्म'** को या **'सम्मोहन विज्ञान'** को पूर्णता के साथ सीखा जाय।

पर यह आवश्यक है, कि किसी अच्छे, योग्य व्यक्ति के पास, जिसको इसका पूरा ज्ञान हो, उसके पास बैठ कर, और उससे यह विद्या पूर्णता के साथ सीखने से ही जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है।

अब मैं आपको सम्मोहन के क्षेत्र के वे सौ स्वर्णिम सूत्र बता रहा हूं, जो कि इस विद्या में पूर्णतः सहायक हैं। मैंने अपने जीवन में सैकड़ों-हजारों मनुष्यों की समस्याओं को सुलझाया है, उनकी मानसिक ग्रन्थियों का खुलासा किया है, और उनके जीवन में जो बाधाएं, अड़चनें, कठिनाइयां आ रही थीं, उनको दूर करने का प्रयत्न किया है। इस दृष्टि से पूरे भारतवर्ष में सम्मोहन के क्षेत्र में मुझे सम्मान के साथ याद किया जाता है। मेरे अनुभवों में जो कुछ सूत्र स्पष्ट हुए हैं, वे मैं आगे की पंक्तियों में दे रहा हूं, जिनका उपयोग करने से व्यक्ति जल्द ही सम्मोहन कर्ता बन सकता है, और पूर्णता के साथ दूसरों की भलाई कर सकता है।

१. सम्मोहन कर्ता को चाहिए, कि वह सुरुचि पूर्ण वस्त्र पहिने, वे न तो भड़कीले व चमकीले हों और न फटे हुए दरिद्री युक्त। वह जो भी वस्त्र पहिने वे साफ-सुथरे और सलीके से पहिने हुए हों, जिससे कि सामने वाले पर अच्छा प्रभाव पड़ सके।

२. सम्मोहन कर्ता के लिए यह आवश्यक है, कि उसका व्यक्तित्व अपने-आप में प्रभावकारी और प्रभावपूर्ण हो, जिससे कि उसके सामने जो व्यक्ति बैठा है, वह उसको यह विश्वास दिला सके, कि उसे सम्मोहन का ज्ञान है, और इस सम्मोहन के माध्यम से वह उसकी समस्याओं को दूर कर सकता है।

३. सम्मोहन कर्ता को कोई नाटक नहीं करना चाहिए, और ऐसा एहसास भी नहीं दिलाना चाहिए, कि वह झूठ बोल रहा है, या छल कर रहा है, या स्वार्थ पूर्ति के लिए कोई उपयोग कर रहा है, क्योंकि सम्मोहन में किसी विशेष मंत्र की आवश्यकता नहीं होती, यह तो एक क्रिया है, एक तरीका है, जिसके माध्यम से सामने वाले व्यक्ति की समस्याओं को सुलझाया जा सकता है।

४. सम्मोहन कर्ता को इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि जिस व्यक्ति पर या स्त्री पर सम्मोहन करना है, उसके साथ पहले पांच-सात, दस मिनट तक बातचीत करे, उसकी पूरी समस्या को ध्यान पूर्वक सुने, और इसके बाद उसको यह स्पष्ट बता दे, कि मैं सम्मोहन के माध्यम से तुम्हारी समस्याओं को दूर कर रहा हूं, उसको यह विश्वास दिला सके, कि वह कोई जादू, टोना, तांत्रिक प्रयोग या मंत्र-बल का प्रयोग नहीं कर रहा है, अपितु इस महत्वपूर्ण विज्ञान के माध्यम से उसकी समस्या को सुलझा रहा है।

५. सम्मोहन के क्षेत्र में त्राटक का विशेष महत्व है। **'त्राटक'** का तात्पर्य यह है, कि जो सम्मोहन सीखना चाहता है, उसे इस बात का अभ्यास करना चाहिए, कि वह बिना पलक झपकाये बराबर किसी एक बिन्दु पर देख सके। बिन्दु और उसके बीच में लगभग दो फीट की दूरी हो और आंखों के सामने लाल रंग की एक बिन्दी बनी हुई हो, जिस पर वह एकाग्रता के साथ देखने का अभ्यास करे, यह सम्मोहन की प्रारम्भिक अवस्था है। इस में यह जरूरी है, कि पलकें नहीं झपकें। प्रारम्भ में कुछ समस्याएं आती हैं,
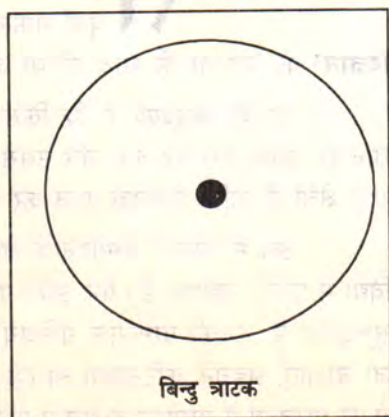
बिन्दु त्राटक

और न चाहते हुए भी पलक झपक जाती है, परन्तु पूर्ण सफलता के लिए यह आवश्यक है, कि वह एकटक, बिना पलक झपकाये एक ही बिन्दु पर पूर्णता के साथ ध्यान केन्द्रित करे, यह **"बिन्दु त्राटक"** कहलाता है।

६. बिन्दु त्राटक के बाद यह आवश्यक है, कि वह **"दीप त्राटक"** करे। दीप त्राटक का तात्पर्य है, कि वह अपने सामने एक मोमबत्ती लगा ले, और जिस प्रकार से एक बिन्दु पर बिना पलक झपकाए देखने का अभ्यास किया था, ठीक उसी प्रकार मोमबत्ती की जलती हुई लौ पर भी देखने का अभ्यास करे। वह इस बात का ध्यान रखे, कि यह देखने की क्रिया निरन्तर रहे और पलक नहीं झपके। लगभग ३२ मिनट के त्राटक को 'पूर्ण त्राटक' कहा जाता है। हो सकता है, कि प्रारम्भ में एक या दो मिनट बाद आंखों में पानी आने लगे या आंखें जलने जैसी हो सकती हैं, तो पास में स्वच्छ रुमाल रख ले और आंखों को पोंछ ले तथा पानी से आंखों पर छींटे मारकर, नेत्रों को स्वच्छ कर ले और चार-पांच मिनट आंखों को स्वच्छ करके बैठ जाए, जिससे कि आंखों को विश्राम मिल सके, और फिर वापिस अभ्यास करे।

दीप त्राटक

यह 'दीप त्राटक' थोड़ा कठिन अवश्य है, परन्तु यह सम्मोहन का प्रारम्भिक तरीका है, प्रारम्भिक क्रिया है।

७. दीप त्राटक के बाद **"सूर्य त्राटक"** का अभ्यास भी किया जाता है, परन्तु अपने गुरु या योग्य सम्मोहन कर्ता के माध्यम से अथवा उसके पास बैठकर ही सूर्य त्राटक करना चाहिए, क्योंकि यह एक कठिन क्रिया है, और यदि सही तरीके से सूर्य त्राटक नहीं किया जाय, तो आंखों को नुकसान पहुंच सकता है, परन्तु बिन्दु त्राटक या दीप त्राटक करने पर किसी भी प्रकार का

सूर्य त्राटक
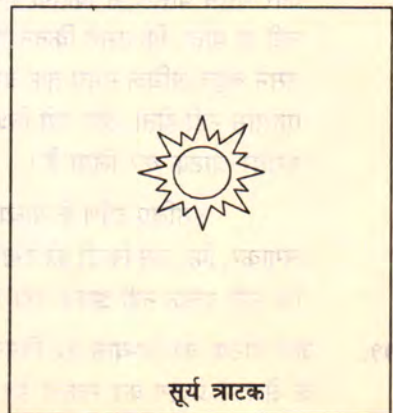
कोई नुकसान नहीं होता, और न ही आंखों को किसी प्रकार की कोई तकलीफ होती है।

८. सम्मोहन कर्ता को चाहिए, वह मन में बिलकुल निश्चिंत रहे, कि मैं पूर्णता के साथ सीख रहा हूं, और मैं सीख करके ही रहूंगा। उसको इस बात का भय नहीं रहना चाहिए, कि त्राटक करते समय या त्राटक करने की वजह से मेरी आंखें कमजोर हो जायेंगी, या दिखना बंद हो जायेगा, इससे ऐसी कोई स्थिति नहीं बनती, अतः बिना किसी हिचकिचाहट के इस त्राटक का अभ्यास उसको करना चाहिए।

९. त्राटक का अभ्यास या तो प्रातःकाल, जिस समय चारों तरफ शांति होती है, उस समय करे या सायंकाल करे, परन्तु इस बात का ध्यान रखे, कि जिस कमरे में भी यह अभ्यास करे, वह कमरा बिलकुल शांत व स्वच्छ हो, जिसमें बहुत धूप नहीं हो, बहुत ज्यादा रोशनी या अंधेरा नहीं हो, अपितु मद्धम प्रकाश हो, और स्वच्छ स्थान पर बैठकर ही इस त्राटक का अभ्यास करना चाहिए।

१०. त्राटक करते समय कसे हुए वस्त्र पेन्ट या शर्ट पहिने हुए न हों, अपितु ढीली-ढाली धोती और ऊपर कुरता पहिना हुआ हो, जिससे कि बैठने में किसी प्रकार का कोई कष्ट न हो, और उसके बाद उस स्वच्छ कमरे में यदि सम्मोहन कर्ता चाहे, तो धूपबत्ती लगा सकता है, जिससे कि कमरे का वातावरण सुगन्धित हो, और फिर उसको बराबर अभ्यास करना चाहिए। लगभग दो या तीन महीनों में वह ३२ मिनट का त्राटक पूर्ण कर सकता है।

बार-बार इसके अभ्यास को बनाये रखना चाहिए, और इसके बाद अपने सामने शीशा रखकर के पुनः एक बार बिन्दु त्राटक करे तथा घड़ी पास में रख ले, जिससे आपको यह ज्ञात हो सके, कि आप जो अभ्यास कर रहे हैं, वह सही है, और उसमें वास्तव में कितना समय लगा? क्योंकि व्यक्ति को कभी-कभी यह ज्ञात नहीं हो पाता, कि उसने कितने मिनट त्राटक किया है। उसको ऐसा लगता है, जैसे उसने बहुत अधिक समय तक त्राटक कर लिया है, या पलक झपकती है, तो उसको एहसास नहीं होता, और उसे विश्वास हो जाता है, कि मैंने तो बिना पलक झपकाये बराबर त्राटक कर लिया है।

इसलिए दर्पण के माध्यम से या बिलकुल दर्पण के बीच में एक लाल बिन्दी लगाकर, फिर उस बिन्दी को देखने का अभ्यास करे, तो उसको यह ज्ञात हो जायेगा, कि मेरी पलक नहीं झपक रही है, और मैं सम्पूर्णता के साथ त्राटक कर रहा हूं।

११. जब त्राटक का अभ्यास ३२ मिनट का हो जाय, तो वह दूसरों को सम्मोहित करने के क्षेत्र में प्रयोग कर सकता है। सबसे पहले उसको इस बात की जांच कर लेनी

चाहिए, कि वह सही प्रकार से त्राटक कर सकता है या नहीं, अथवा त्राटक का प्रभाव हुआ है या नहीं? वह इसका कई रूपों में अभ्यास कर सकता है, देख सकता है, जांच सकता है, परख सकता है, क्योंकि जब ३२ मिनट का त्राटक पूर्ण हो जाता है, तो उसका मस्तिष्क विचार शून्य बनने की क्रिया में आ जाता है, और पूर्ण विचार शून्य मस्तिष्क को ही पूर्ण त्राटक कहा जाता है, क्योंकि त्राटक करते समय दूसरा कोई विचार, दूसरी कोई धारणा उसके मन में नहीं आती, वह केवल एकटक देखने का ही प्रयत्न करता है, उसके दिमाग में और कोई विचार आता ही नहीं है, और यदि त्राटक करते समय कुछ और विचार उसके मस्तिष्क में आता है, तो समझ लेना चाहिए, कि अभी उसका त्राटक अधूरा है, इसलिए त्राटक करते समय व्यक्ति को एकाग्रता के साथ एक ही बिन्दु या मोमबत्ती की लौ पर देखते रहने का अभ्यास करना चाहिए।

१२. त्राटक के प्रयोग के लिए वह पहले घर में ही इस प्रयोग को सम्पन्न करे। उदाहरण के लिए यदि उसकी पत्नी खड़ी है और वह ड्राइंग रूम में या अन्य कहीं पर बैठा हुआ अपने मन में यह निश्चय करे या सोचे, कि इस समय मेरी पत्नी मेरे पास आये और पूछे, कि क्या आपको इस समय चाय पीनी है? ऐसा पांच-छः बार मन में चिन्तन लाये, सोचे या बुदबुदाए, बहुत धीरे से आवाज निकाल कर के वह कह सकता है, कि मेरी पत्नी मेरे पास आएगी ही और एक मिनट के बाद वह आकर मुझसे पूछेगी ही, कि क्या आपकी चाय पीने की इच्छा है? यदि पत्नी घूमकर उसके पास आती है और इसी वाक्य को दोहराती है, तो समझना चाहिए, कि वह अपने सम्मोहन के क्षेत्र में सफल हो रहा है।

१३. जब ऐसा अभ्यास हो जाय, तो टेलीफोन पर भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। वह टेलीफोन को एकटक अपने सामने रखे, और उस शहर में ही रहने वाले किसी मित्र, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, उसके बिम्ब को, उसके चेहरे को अपनी आंखों के सामने लाने का प्रयास करे, ऐसा लगे, जैसे उसका बिम्ब उसकी आंखों के सामने आ गया है, और फिर वहीं बैठे-बैठे यह आज्ञा दे, कि अमुक नाम का यह मित्र मुझे अभी टेलीफोन करे और पूछे, कि तुम्हारे क्या हालचाल हैं?

— जैसे अभी मुझे रमेश टेलीफोन करे और पूछे, कि तुम्हारे हालचाल कैसे हैं? अभी वह मुझे टेलीफोन करे, और मुझे. . .ऐसा धीरे से आठ-दस बार उच्चारण करे, और यदि रमेश का टेलीफोन उसी समय आ जाता है, तो समझिये कि आपका त्राटक सही दिशा की ओर गतिशील है।

इसके बाद जब ऐसा अभ्यास हो जाय, तब किसी सभा में या सम्मेलन में, या जहां गैदरिंग हो या कोई पारिवारिक उत्सव हो, उसमें वह सम्मोहन कर्ता खड़ा

रहे, और किसी भी स्त्री या पुरुष के पीठ की तरफ, जहां उसका गला है, वहां एकटक देखे और कहे या मन में बुदबुदाए, कि यह पुष्पा नाम की स्त्री मेरे पास आए, और मुझे "हैलो" कहे, ऐसा आठ-दस बार बहुत धीरे से उच्चारण करे, या कोई व्यक्ति खड़ा हो, चाहे वह उसका परिचित हो या नहीं, उसकी पीठ की तरफ गर्दन के पास अपनी आंखों को गढ़ा कर आठ-दस बार उच्चारण करे, यदि वह व्यक्ति घूम कर आपके पास आ जाता है, और कहता है, कि 'हैलो', तो आप समझ लें, कि आपका त्राटक सही दिशा की ओर अग्रसर हो रहा है।

१४. जब ऐसा अभ्यास हो जाय, तो जिस पर भी सम्मोहन करना है, उसको कोई आज्ञा दें, उदाहरण के लिए यदि कोई भोज या सम्मेलन हो, तो यह निश्चय करे, कि यह रमेश नाम का व्यक्ति मेरे पास आये, और मुझे भोजन के लिए आमंत्रित करे, इस प्रकार वह आठ-दस बार मन में चिन्तन करे, मगर इस बात का ध्यान रखे, कि जो सामने रमेश खड़ा है, उसकी आंखों में आंखें डालकर के ऐसा कहने की आवश्यकता नहीं है, अन्यथा अजीब सा लगेगा, वह सोचेगा, कि ऐसे क्यों घूर रहा है? इसलिए यह आवश्यक नहीं है, कि आप उसकी आंखों में आंखें डालकर ही ऐसा करें, उसकी पीठ-पीछे भी उसको आज्ञा दे सकते हैं, और आज्ञा बिलकुल स्पष्ट और सही होनी चाहिए, कि वह व्यक्ति या वह स्त्री, जिसका नाम हो, जिसके पीठ-पीछे आप त्राटक कर रहे हों, उसको आज्ञा दें, कि तुम मुड़ो और मुड़ करके मेरे पास आओ, तथा भोजन के लिए या चाय के लिए मुझे आमंत्रित करो।

इस प्रकार आपकी आज्ञा स्पष्ट और सधी हुई होनी चाहिए, तथा ऐसा पांच-सात या दस बार करने पर बिलकुल ऐसा ही होगा, कि वह स्त्री आपके पास आई है, और भोजन के लिए आपको आमंत्रित कर रही है, या वह व्यक्ति आपके पास आया है, और भोजन के लिए आपको आमंत्रित कर रहा है। जब ऐसा हो जाय, तो आप समझ लें, कि आपने सही तरीके से सम्मोहन का अभ्यास कर लिया है।

१५. इस बात का ध्यान रखें, कि आपकी आज्ञा ऊटपटांग या मानवीय अथवा कानूनी नियमों के विपरीत न हो। आप किसी स्त्री को इस प्रकार की भावना नहीं दे सकते, कि वह आपसे प्यार करे, या आपका चुम्बन ले, या आपको चुम्बन के लिए कहे, अथवा कोई ब्राह्मण हो, और आप उसे इस प्रकार की भावना दें, कि वह मेरे साथ होटल में बैठे और मीट खाए या शराब पीये, तो यह अनुचित है, और इस प्रकार का कार्य सम्पन्न नहीं होता तथा यह नैतिक और कानूनी नियमों के विपरीत भी है।

अतः सम्मोहन कर्ता को चाहिए, कि वह ऐसा ही आदेश दे, जो उसके लिए अनुकूल हो, उसके बिलकुल विपरीत न हो। कोई भी शुद्ध व्यक्तित्व मांस नहीं खाता, तो आप उसको बाध्य करके मांस खाने के लिए प्रेरित नहीं कर सकते या जो शराब नहीं पीता, तो आप उसको शराब पीने के लिए प्रेरित नहीं कर सकते, इसलिए सम्मोहन कर्ता को चाहिए, कि वह ऐसा कोई आदेश न दे, जो उसके विचारों या मर्यादा के खिलाफ हो।

१६. सम्मोहन कर्ता को यह भी ध्यान रखना चाहिए, कि वह इस विद्या का किसी भी प्रकार से दुरुपयोग नहीं करे, उसको मर्डर करने के लिए, लड़ाई-झगड़ा करने के लिए या आत्महत्या करने के लिए प्रेरित नहीं करे, ऐसा कोई कार्य उसको नहीं सौंपे, जोकि अपने-आप में अनुचित हो या जिसको हम उचित नहीं मानते हों, ऐसा कोई भी कार्य करने के लिए उसे बाध्य नहीं किया जाना चहिए, क्योंकि इससे इस विद्या में निष्फलता ही आती है, अतः इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखें।

१७. दूसरे को सम्मोहित आंखों के माध्यम से ही किया जा सकता है। अभी तक तो मैंने यह बताया, कि उसकी पीठ-पीछे देखकर यह आज्ञा दी जा सकती है, कि वह आज्ञा का पालन करे, परन्तु यह संक्षिप्त प्रक्रिया है, पूर्ण सम्मोहन नहीं है। पूर्ण सम्मोहन के लिए तो यह आवश्यक है, कि आप उसकी आंखों में आंखें डालकर के कोई आज्ञा दें। इसके लिए यह जो मैंने ऊपर ३२ मिनट का त्राटक कहा था, वह आवश्यक है, क्योंकि इतना त्राटक करने से आपकी आंखों में एक विशेष लपक, एक विशेष तेजस्विता आ जाती है, और जब आप अपनी उन आंखों से दूसरे की आंखों में ताकते हैं या देखते हैं, तो वह निस्तेज हो जाता है, और आपकी आज्ञा मानने के लिए बाध्य हो जाता है।

इसलिए यदि आमने-सामने बैठकर, उसकी आंखों में आंखें डालकर आज्ञा दें, तो उसके जल्दी प्रभावित होने की क्रिया बनती है।

१८. सम्मोहन की कई अवस्थाएं होती हैं। प्रारम्भिक अवस्था में आप उस व्यक्ति को आज्ञा देकर उससे कोई कार्य करवाएं, और अगला सम्मोहन उसके गहरे अन्तर्मन तक जाने की क्रिया करें, वहां से उसको बात पूछकर या उसके मन की किसी ग्रंथि को खोला जा सकता है, और तीसरी अवस्था वह होती है, जहां वह पूर्ण सम्मोहन की अवस्था में आ जाता है, एक ऐसी तंद्रा में आ जाता है, जिसको न जागना कहते हैं, न नींद कहते हैं। ऐसी स्थिति में आने पर आप उसको जो भी आज्ञा देंगे, वह उसको स्मरण रहेगी, और फिर वापिस जागने पर वह उस बात को बराबर मान लेगा।

१९. सम्मोहन कर्ता जब किसी को सम्मोहित करे या किसी की समस्या को सुलझाने का

प्रयत्न करे, तो एक स्वच्छ स्थान तथा दिव्य स्थान पर, जहां शोरगुल, भीड़-भाड़ न हो, सात्विक कमरा हो, उस कमरे में उसे लिटा दे, कमरे में दो या तीन व्यक्ति अतिरिक्त भी हो सकते हैं। इसके बाद उसकी आंखों की तरफ देखकर, विचार शून्य मस्तिष्क रखकर, उसको यह आज्ञा दे, कि मैं आपको तंद्रा की तरफ ले जा रहा हूं, धीरे-धीरे आप नींद में आते जा रहे हैं. . . धीरे-धीरे आपकी आंखें बन्द होती जा रही हैं. . . अब आपकी आंखें बन्द हो गयी हैं. . . अब मैं जो कह रहा हूं, वही आप करने को बाध्य हैं. . . मैं ही केवल आज्ञा दूंगा . . . और केवल मेरी ही आज्ञा का पालन करना पड़ेगा, ऐसा उसकी आंख में झांक कर कहने से और पांच-छः बार दोहराने से आप देखेंगे, कि धीरे-धीरे उसकी पलकें भारी होकर बन्द हो गयी हैं, और ऐसा लग रहा है, कि वह नींद में आ गया हो।

सम्मोहन की अवस्था में

यह प्रथम स्तर की तन्द्रा कही जाती है, और ऐसी स्थिति आने पर आप उसे कोई भी आज्ञा दें, कि जैसे ही तुम्हारी आंख खुलेगी, वैसे ही तुम उठकर बाहर जाओगे और पानी का गिलास भर कर मेरे सामने रखोगे। इसके बाद जब वह तंद्रा में आ जाये, तब आप उसको होश में लाने का प्रयत्न करें। उसको यह भावना दें, कि अब आपको होश में आना है और मैंने जो आज्ञा दी है, उसका पालन करना है, अब धीरे-धीरे आपकी आंखें खुलती जा रही हैं. . . अब आपकी आंखें काफी खुल गई हैं. . . अब पूर्णरूप से आपकी आंखें खुल गयी हैं. . . अब मैंने जो आज्ञा दी है, उसे पूरा करना है। आप देखेंगे, कि उसकी तंद्रा टूट गयी है और ज्यों ही वह जाग्रत अवस्था में आता है, त्यों ही वह उठकर पानी का गिलास भर कर के आपके सामने रख देता है।

२०. यह प्रथम स्तर का सम्मोहन प्रयोग करने से आपको यह विश्वास हो जायेगा, कि आप किसी को भी सम्मोहन अवस्था में ला सकते हैं। इसके बाद आप जिसे सम्मोहित

करना चाहते हों, उसे अपने सामने बैठा कर उसकी आंखों में आंखें डालें और पांच, दस या पन्द्रह मिनट त्राटक जैसी क्रिया सम्पन्न करें, और फिर मन ही मन आप कहें, कि लेट जाना है, आप देखेंगे, कि वह लेट गया है, या उसे कहें, कि धीरे-धीरे आपकी पलकें बंद हो गयी हैं. . . अब आपकी आंखें भारी हो रही हैं. . . अब आप नींद में जा रहे हैं. . . अब आप तन्द्रा अवस्था में जा रहे हैं. . . अब आप मेरी बात सुन रहे हैं, और जो कुछ मैं कह रहा हूं, आपको उसका पालन करना है, जो प्रश्न मैं पूछ रहा हूं, आपको उसका उत्तर देना है।

दूसरे स्तर की अवस्था में आप वह प्रश्न कर सकते हैं, जो वह जाग्रत अवस्था में नहीं बता सकता, जैसे उससे पूछा जा सकता है— तुम किससे प्रेम कर रहे हो? वह उत्तर देगा, कि मैं अमुक नाम की लड़की से प्रेम करता हूं। फिर आप पूछ सकते हैं, कि क्या तुम उससे मिले हो? तुम कितनी बार मिले हो? कहां पर जाकर मिलते हो? अभी तक तुमने उसको क्या भेंट दिया है? प्रेम के क्षेत्र में तुम कहां तक बढ़े हो? उसके साथ तुमने कौन-कौन सी क्रियाएं सम्पन्न की हैं? और आप देखेंगे, कि आप जो भी प्रश्न कर रहे हैं, वह उसका बराबर उत्तर दे रहा है।

मगर आप इस बात का ध्यान रखें, कि एक बार में केवल एक ही प्रश्न करें, एक से ज्यादा प्रश्न नहीं किये जाते। जब एक प्रश्न का उत्तर आपको मिल जाय, तब आप दूसरा प्रश्न करें। पहले छोटे प्रश्न करें, उसके बाद आप बड़े प्रश्नों की ओर बढ़ें, और उस समय वह जो कुछ भी कहेगा, वह पूर्णरूप से सत्य ही कहेगा।

२१. उसको इसके अलावा भी इस अवस्था में लाकर कई प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं। क्या तुमने चोरी की है? या चोरी का समान कहां रखा हुआ है? या तुम गोपनीय कार्य क्या कर रहे हो? ऐसी कोई भी बात जो वह जाग्रत अवस्था में नहीं बता सकता, उसको तंद्रा अवस्था में लाकर पूछा जा सकता है, और उस अवस्था में वह सही-सही उत्तर देगा। मगर यदि आप उससे चार या पांच बार प्रश्न करते हैं और वह उत्तर नहीं देता, तो आप उसको बाध्य मत कीजिये, क्योंकि आपकी अभी उसको सम्मोहित करने की क्रिया में न्यूनता है, इसलिए दूसरी बार उसको सम्मोहन अवस्था में ले जाकर प्रश्न किया जा सकता है, मगर किसी बात के लिए उसे बाध्य नहीं किया जा सकता, इस बात का ध्यान रखें।

२२. सम्मोहन की अवस्था में आप उसे जो कुछ कहेंगे, वह जाग्रत अवस्था में आने पर भी उसको याद ही रहेगा, और जाग्रत अवस्था में आने पर उसे सम्मोहन की अवस्था में जो कुछ आज्ञा दी है, उसका वह पालन करेगा, यह अपने-आप में श्रेष्ठतम कार्य है, जैसे— यदि कोई व्यक्ति शराब पीता है और उसकी शराब नहीं छूट रही है, तो

आप उसको सम्मोहन अवस्था में ले जाकर कहेंगे, कि शराब ठीक नहीं है, अब तुम भविष्य में कभी भी शराब का सेवन नहीं करोगे, तुम्हारे लिए शराब पीना उचित नहीं, अब तुम्हें शराब नहीं पीनी है, शराब पीते ही तुम्हें बहुत कड़वापन महसूस होगा, तुम्हें शराब फेंक देनी है. . . और शराब नहीं पीनी है, यह बात आप आठ - दस बार उसके मानस में बिठाओगे, और वापिस उसको धीरे-धीरे होश में लाने का प्रयत्न करोगे, तो उसके अन्तर्मन में यह बात पूर्णरूप से स्पष्ट हो जायेगी, कि मुझे शराब नहीं पीनी है, और वह शराब छोड़ देगा।

मगर इस बात का ध्यान रखें, कि अगर एक बार में ही उसकी शराब न छूटे, तो आप दूसरी या तीसरी बार भी उसे सम्मोहन अवस्था में ले जाकर यह कार्य कर सकते हैं।

२३. बहुत क्रूर, चालाक, धूर्त, मक्कार, बदमाश व्यक्ति जल्दी सम्मोहित नहीं हो पाते व बहुत अधिक बुद्धिवादी व्यक्ति भी जल्दी सम्मोहित नहीं हो पाते, उनके लिए आंखों में और ज्यादा एकाग्रता लाकर पूर्ण सम्मोहित करने की क्रिया करनी पड़ती है। बालक

सम्मोहन की अवस्था में

या स्त्री जल्दी सम्मोहित हो जाते हैं। वृद्धावस्था में भी लोग जल्दी सम्मोहित हो जाते हैं। युवावस्था में सम्मोहन के लिए थोड़ा सा प्रयत्न करना पड़ता है, जब आठ या दस मिनट तक उस पर त्राटक किया जाता है, तब वह सम्मोहित होता है, परन्तु बहुत अधिक बदमाश, धूर्त या चालाक व्यक्ति भी जल्दी तंद्रावस्था में नहीं आ पाता, उसके लिए धीरे-धीरे दो, तीन या चार बार उपाय करने पर वह तंद्रावस्था में आ जाता है, तब आप उसको यह भावना देकर, कि तुम्हें यह काम नहीं करना है और इस बुरे व्यसन को छोड़ देना है, तो आप अपने उद्देश्य में सफलता पा लेंगे।

२४. कई बार ऐसी स्थिति भी आ जाती है, कि आपने किसी को सम्मोहित किया और काफी गहरे तक सम्मोहित करके उससे सारे प्रश्न भी पूछ लिए, साथ ही साथ यह आदेश भी दिया, कि तुम्हें जाग्रत अवस्था में आने पर यह कार्य करना है, और फिर जब आप उसको होश में लाने का प्रयत्न करते हैं, तो वह होश में नहीं आ पाता, ऐसे समय में घबराने की जरूरत नहीं है, क्योंकि गहराई तक सम्मोहित होने पर पांच-सात या दस मिनट लग सकते हैं, इसलिए उसको कई बार यह भावना दी जाती है, कि तुम्हें होश में आना है. . . तुम्हें अब आंखें खोल देनी हैं. . . मैंने जो तुम्हारे ऊपर सम्मोहन अवस्था की थी, वह हटा दी है. . . अब तुम बिलकुल विचार शून्य हो. . . अब तुम केवल मेरी आज्ञा का पालन कर रहे हो. . . अब तुम्हें जागना है. . . धीरे-धीरे पलकें खोलनी हैं. . . तुम्हारी पलकें खुल रही हैं. . . तुम पूरी तरह से अपनी आंख खोल रहे हो. . . तुम होश में आ रहे हो. . . अब तुम होश में आ गये हो. . . अब तुम्हें उठकर के बैठ जाना है।

इस प्रकार से कहने पर वह अगर अधिक गहराई में चला गया है या सम्मोहित हो गया है, तो उसमें कुछ समय लग जाने पर भी घबराने की आवश्यकता नहीं है। आपको उसको बराबर आदेश देते रहना है, जिससे कि वह अपनी सम्मोहन अवस्था से बाहर निकल आये।

२५. सम्मोहित अवस्था से बाहर आने के बाद आप उससे कुछ न कहें, कि मैंने तुम्हें सम्मोहन अवस्था में क्या आज्ञा दी है, या किस प्रकार की आज्ञा दी है या मैंने तुम्हें क्या कहा है? इस बात का ध्यान रखें। क्योंकि ऐसा करने पर उसको ऐसा लगेगा, कि मेरे साथ कोई जबरदस्ती की गई है। मगर यह बात स्पष्ट है, कि आप जो कुछ भी उसको कहेंगे, वह तंद्रावस्था से जाग्रत अवस्था में आने के बाद उस क्रिया को करने की ओर अग्रसर होगा। इसलिए आप इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का चिन्तन या विचार न करें, वह अपने-आप में ऐसा कार्य करेगा ही।

२६. अब सम्मोहन की अवस्था में लाकर उसको धीरे-धीरे गहराई की ओर ले जाने का
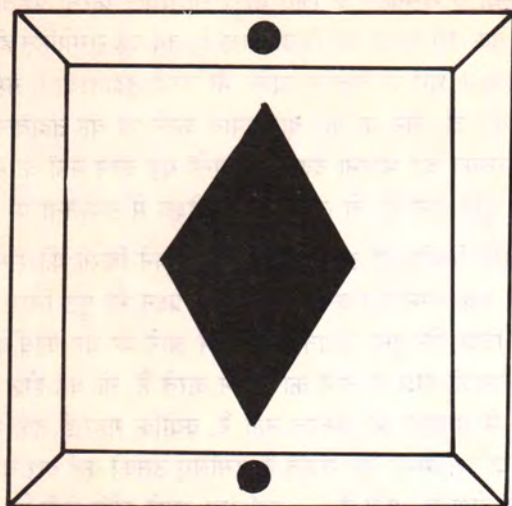
शक्ति चक्र – ग्रीक पद्धति

अभ्यास करें। यदि एक बार में उसकी आंखें बन्द नहीं हों, तो बार-बार उसको कहें, कि तुम्हारी आंखें बहुत भारी हो रही हैं. . . तुम्हारी पलकें बहुत भारी हो रही हैं. . . तुम्हें आंख बन्द कर लेनी है. . . अब तुम्हारी आंखें बन्द हो रही हैं. . . अब बहुत ज्यादा वजन तुम्हारी आंखों पर आ गया है. . . अब तुम्हारी आंखें बन्द हो रही हैं. . . और ऐसा तुम करोगे, तो वह सम्मोहन अवस्था में आ जायेगा। **बैठने की अपेक्षा लेटा हुआ व्यक्ति जल्दी सम्मोहित हो सकता है।**

यदि उसको और ज्यादा गहराई में लाना चाहें, तो उसने अपनी आंखें बन्द की हुई हों, आप उसकी आंखों की ओर ताकते हुए, यह भावना दे सकते हैं, कि तुमको और गहराई में सम्मोहित होना है. . . तुमको और गहराई में जाना है. . . और जब वह गहराई में चला जाय, निस्पन्द हो जाय, उसके हाथ-पांव नहीं हिलें, तो समझिए, कि वह सम्मोहित अवस्था में आ गया है। उसके बाद आप उसको जो आज्ञा देंगे, उस आज्ञा का वह पालन करेगा।

परन्तु इस बात का ध्यान रखें, कि आप उसको कोई ऐसी आज्ञा न दें, जो उसके विचारों या धर्म के विपरीत हो, क्योंकि धर्म की जड़ें बहुत गहराई के साथ होती हैं, इसलिए ऐसी आज्ञा नहीं दी जा सकती, और ऐसी आज्ञा का पालन

करने के लिए वह बाध्य भी नहीं हो पाता, इसलिए वैसी ही आज्ञा दें, जो उचित व सामाजिक नियमों के अनुकूल हो।

२७. सम्मोहन एक सही और प्रभावशाली प्रयोग है। पूरे संसार में इस पर शोध हो रही है, और पूरे संसार के लोगों ने इस बात को अनुभव किया है, कि सम्मोहन के माध्यम से असंभव कार्य भी सम्भव किये जा सकते हैं। ऐसे कई व्यक्ति हैं, जो समझाने से नहीं समझते या बात नहीं मानते, तो उनको सम्मोहन के माध्यम से ही समझाया जा सकता है या उनकी समस्या का निदान किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए यदि किसी गर्भवती स्त्री को गर्भावस्था में, बालक को जन्म देने में तकलीफ हो रही हो, तो उसे बैठा कर, सम्मोहन की प्रथम अवस्था में ले जाकर यह भावना दी जा सकती है, कि अब तुम्हारा गर्भ गिरेगा नहीं, और तुम्हें गर्भ में किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होगा, और उसके बाद जब उसकी तंद्रा टूटेगी, तो उसको यह विश्वास हो जायेगा, कि उसका गर्भ अब सुरक्षित है, उसे किसी बात की तकलीफ नहीं है, और भविष्य में उसको तकलीफ हो भी नहीं सकती।

गर्भ प्रसव या अस्पताल में जहां बच्चा जन्म लेता है, वहां पर भी गर्भिणी स्त्री पर लेडी डॉक्टर, यदि उसको सम्मोहन का ज्ञान है, तो इस प्रकार का प्रयोग कर सुरक्षित और बिना कष्ट के उसका गर्भ सम्पन्न करवाया जा सकता है। विदेशों में तो पूरी तरह से इस प्रयोग को आजमाया जा रहा है। उसको किसी प्रकार की बेहोशी की दवा देकर के ऑपरेशन करने की जरूरत नहीं रहती, वह पूरी तरह अपने होश में रहती है, वह सम्मोहन अवस्था में रहती है, बिना चीर-फाड़ किये भी या ऑपरेशन करने की जरूरत पड़ने पर भी उसको किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होता, और सम्मोहन अवस्था में वह उस कष्ट को झेल लेती है, इसलिए उस बेहोशी की दवा देने से डॉक्टर बच सकेंगे और सही तरीके से उसका गर्भ प्रसव हो सकता है।

२८. यदि किसी व्यक्ति को एक साईक्लोजिकल या मनोवैज्ञानिक रूप से किसी प्रकार का वहम हो गया हो, ऐसे कई पुरुष व स्त्रियां होते हैं, जिनको ऐसा लगता है, जैसे मेरे हाथ गन्दे हो गये हैं, वह हाथ धोती है, फिर दूसरी बार हाथ धोती है तथा हर पांच मिनट बाद हाथ धोती रहती है, और घरवाले इस बात से परेशान हो जाते हैं, क्योंकि उसके मानस में केवल एक ही बात जम जाती है, कि मेरे हाथ गन्दे हो गये हैं।

ऐसे कई केस मेरे सामने आये हैं, लेकिन जब उसको सम्मोहन की प्रथम अवस्था में ले जाकर यह भावना दी जाती है, कि तुम गन्दी नहीं हो, तुम अपवित्र

नहीं हो, तुम्हारे हाथ गन्दे नहीं हैं, और फिर उसको वापिस चेतनावस्था में लाया जाता है, तो उसके बाद वह बिलकुल सही हो जाती है, और उसके मन का जो वहम या उसके मन में जो यह एक चिन्तन बैठ जाता है, वह अपने-आप में समाप्त हो जाता है, तब वह एक सही गृहिणी बन जाती है।

कई स्त्रियां इस प्रकार की भी मेरे सामने आई हैं, जो हर पांच मिनट बाद स्नान करती थीं, घरवाले इस बात से परेशान हो गये थे। उनको भी मैंने अपने सामने बैठा कर, प्रथम अवस्था में ले जाकर यह भावना दी, कि तुम किसी भी प्रकार से अपवित्र नहीं हो, तुम्हारा शरीर किसी भी प्रकार से गंदा नहीं है, इसलिए तुम्हें बार-बार स्नान करने की जरूरत नहीं है। केवल सुबह एक बार स्नान करोगी, यदि तुम्हारी इच्छा होगी, तो शाम को एक बार तुम स्नान कर सकती हो, हर पांच मिनट बाद तुम्हें स्नान करने की आवश्यकता नहीं है।

ऐसा पांच-सात बार भावना देकर जब मैं वापिस उनको चेतनावस्था में लाया, तो उसके बाद उनकी समस्या सुलझ गई, और उनके मन का जो एक विकार था, वह समाप्त हो गया। अब वे एक सामान्य महिला की तरह आचरण करने लगी हैं, और वे सुबह जिस प्रकार से सामान्य आदमी स्नान करते हैं, उसी प्रकार स्नान करके अपना जीवनयापन करने लगी हैं।

२६. कई पुरुषों को यह वहम घर कर जाता है, कि मेरी स्त्री किसी और से प्यार करती है, और वह सही नहीं है। जितना भी पत्नी उसको समझाती है, कि ऐसी कोई बात नहीं है, मैं किसी से प्यार नहीं करती हूं, मैं केवल आपके प्रति अनुरक्त हूं, मगर किसी पुरुष के मानस में यदि यह बात घर कर जाती है, कि जरूर वह दुराचारिणी है, या जरूर इसका कोई दूसरा प्रेमी है या जरूर यह किसी और से प्यार करती है, तो उस पुरुष के मानस से इस विचार को निकालना बड़ा कठिन हो जाता है।

ऐसी स्थिति में उस पुरुष को प्रथम अवस्था में ही तंद्रा देकर के पहले उसकी पूरी बात सुन ली जाती है, कि उसके मन में यह क्यों वहम है, कि उसकी पत्नी दुराचारिणी है या किसी और से प्यार करती है? तो प्रथम अवस्था में वह खुद बोल देगा, कि इन-इन बातों से मुझे ऐसा लगता है, कि मेरी पत्नी सही नहीं है या वह किसी और से प्यार करती है।

तब उसे उसी प्रथम तंद्रावस्था में ही यह भावना दी जाती है, कि तुम्हारे ये प्रश्न गौण हैं, गलत हैं, ऐसी कोई बात नहीं है, तथा तुम्हारी पत्नी पूरी तरह से पवित्र और तुम्हारे लिए अनुकूल है। यह वहम तुम्हें अपने मन से निकाल देना चाहिए, कि वह किसी और से प्यार करती है. . . वह किसी और से प्यार नहीं

करती. . .और इस प्रकार से दो-तीन मिनट तक उसको यह भावना दी जाती है, तो उसके मानस का यह वहम निकल जाता है। फिर उसको होश में लाते हैं, तो वह अपने-आप में सही बन जाता है।

और ऐसी सैकड़ों स्त्रियों ने आकर मुझे धन्यवाद दिया है, कि आपकी वजह से मेरी गृहस्थी सुलझ गई है, तथा जो कुछ समस्याएं और तनाव हम दोनों भोग रहे थे, वह तनाव समाप्त हो गया है, अब उनको मेरे ऊपर पूरा विश्वास आने लगा है, अब वे मुझसे इस प्रकार की कोई बात नहीं करते, जो कि अपने-आप में गलत हो।

३०. किसी स्त्री के दिल में यह वहम घर कर जाता है, कि मैं बीमार हूं, कभी उसको ऐसा लगता है, कि मेरे पेट में गड़बड़ है, या मुझे तकलीफ होती है, या मुझे चक्कर आते हैं, और डॉक्टरों के हिसाब से किसी भी प्रकार की कोई बीमारी उसको नहीं होती, मगर मनोवैज्ञानिक रूप से वह हर समय इस तनाव में रहती है, कि मैं बीमार हूं, मैं ठीक नहीं हो पा रही हूं, और इसके लिए वह बार-बार अपने पति को परेशान करती रहती है, कि डॉक्टर के पास जाओ, एक्सरे करवाओ. . .और पति अपना कामकाज भूलकर के परेशान हो जाता है।

ऐसी स्थिति में भी उस स्त्री को अपने सामने बैठाकर, प्रथम अवस्था की तंद्रा में लाकर (मैं इसको प्रथम अवस्था इसलिए कहता हूं, क्योंकि ये सारे प्रयोग प्रथम अवस्था में ही सम्पन्न किये जाते हैं, यद्यपि इसकी दूसरी अवस्था और तीसरी अवस्था भी होती है, इसके प्रयोग मैं आगे समझाऊंगा) उसको यह भावना दी जा सकती है, कि तुम बीमार नहीं हो, और किसी भी प्रकार की बीमारी तुम्हें नहीं है, तुम अपने-आप में पूर्णरूप से सही हो तथा भविष्य में तुम्हें किसी भी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं होगी, न पेट दर्द होगा, न सिर दर्द होगा, और न अन्य किसी प्रकार का कोई दर्द है. . . और जब उसको वापिस चेतनावस्था में लाया जाता है, तो वह अपने-आप को पूर्ण निरोग अनुभव करती है, तथा उसके घर की समस्या पूरी तरह से समाप्त हो जाती है।

जिन पर भी मैंने यह प्रयोग किया है, वह अपने-आप में पूर्ण सफल रहा है, उसके बाद उनके पति उनसे मिले हैं, और उन्होंने लाख-लाख धन्यवाद मुझको दिया है, कि आपकी वजह से जो मेरा अपव्यय हो रहा था, वह समाप्त हो गया, और मेरा गृहस्थ जीवन पूर्णतया सुखी हो गया। अब उनको इस प्रकार का कोई वहम नहीं है, कि वह बीमार है या उसको डॉक्टर के पास ले जाना आवश्यक है।

३१. कई बार कोई लड़की किसी के प्रेम में पड़ जाती है, और प्रेम में पड़ जाने के बाद उसको अपने प्रेमी के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता। घरवाले उसको समझाते

हैं, तो वह समझ नहीं पाती, वह कहना नहीं मानती, वह केवल एक ही धुन में रहती है, कि मुझे उस प्रेमी से शादी करनी है और उसे प्राप्त करना है, जबकि पारिवारिक दृष्टि से, सामाजिक दृष्टि से या सांसारिक दृष्टि से यह उचित नहीं होता, कि वह लव मैरिज़ करे या किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करे, जो उसके घर के स्टेन्डर्ड के अनुरूप नहीं हो, तो घरवाले एक विशेष प्रकार की समस्या से उलझ जाते हैं।

ऐसी स्थिति में परिवार में कलह हो जाती है, कई बार तो ऐसी स्थिति में सामाजिक भय से पिता को या मां को आत्महत्या तक करनी पड़ जाती है या लड़की जहर खाकर के मर जाती है, और बड़ी विषम स्थिति पैदा हो जाती है। इसका और कोई समाधान है ही नहीं, समझाने से वह नहीं समझती है।

ऐसी स्त्रियों और ऐसी लड़कियों को जब मां-बाप मेरे पास लाते हैं, तो पहले तो वह लड़की मुझसे मिलना ही नहीं चाहती, मगर जब उससे मैं प्रारम्भ में बातचीत करता हूं, और इस प्रकार की कोई बात करता ही नहीं हूं, कि तुम गलत कर रही हो या गलत लड़के से प्रेम कर रही हो। मैं केवल उससे पांच-सात मिनट ऐसी बातचीत करता हूं, जिससे उसको लगे, कि यह सहज भाव है, किसी प्रकार का मेरे ऊपर दोषारोपण या थोपने की क्रिया नहीं हो रही है, फिर मैं धीरे-धीरे उसके पिताजी के या मां के सामने उसको सम्मोहन अवस्था में ले जाता हूं।

पहले सम्मोहन अवस्था में ले जाकर के उसे यह भावना दी जाती है, कि वह लड़का तुम्हारे लिए उचित नहीं है वह तुम्हारे परिवार के विरुद्ध है, और आने वाले समय में वह लड़का तुम्हें धोखा देगा, केवल उसका स्वार्थ तुम्हारे पिताजी की सम्पत्ति पर है या वह सही ढंग से प्रेम नहीं कर रहा है। इस प्रकार की भावना देकर के जब उसे वापिस चेतनावस्था में लाया जाता है, तो उसके मानस से उस लड़के के प्रति जो अनुरक्ति होती है, वह समाप्त हो जाती है, तथा वह अपने-आप उस लड़के से धीरे-धीरे दूर हट जाती है . . . और इस प्रकार एक बहुत बड़ी समस्या से मुक्ति मिल जाती है।

कई बार उसको एक या दो से अधिक बार भी सम्मोहन अवस्था में ले जाकर यह भावना देनी पड़ती है, क्योंकि जब बहुत ज्यादा स्थिति नाजुक बन गई हो, या वे बहुत ज्यादा आगे बढ़ गये हों, तब दो या तीन बार सम्मोहन अवस्था में ले जाकर के उसके दिमाग से वे सारी स्थितियां समाप्त की जाती हैं, मगर अधिकतर पहली स्थिति में ही यह समस्या सुलझ जाती है। इससे घर का तनाव मिट जाता है, घर की जो विषम स्थिति होती है, वह भी मिट जाती है, और उस लड़की का जीवन सुखी हो जाता है।

इस प्रकार के मैंने सैकड़ों केस सुलझाये हैं, और मुझे पूर्ण संतोष है, कि संसार में केवल सम्मोहन के माध्यम से ही उसकी विचारधारा को अनुकूल बनाया जा सकता है, इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

३२. इसी प्रकार कुछ लड़के पढ़ाई में कमजोर होते हैं और पढ़ाई नहीं करते हैं, उनको ऐसा भान होने लग जाता है, कि मैं कमजोर हूं, मैं पढ़ाई नहीं कर सकता या पिछड़ गया हूं, और मैं जो कुछ भी याद करता हूं, वह स्मरण नहीं रहता, ऐसी अवस्था जब घर कर जाती है, तो फिर उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता, और धीरे-धीरे वह पढ़ाई में पिछड़ता रहता है। ऐसी स्थिति में भी उस लड़के को सम्मोहन के माध्यम से भावना देकर के यह समझाया जा सकता है, कि तुम पूर्णतः सही हो, यदि तुम यह पाठ याद करोगे, तो तुम्हें यह याद हो जायेगा और तुम सफल हो जाओगे।

इस प्रकार सम्मोहन के माध्यम से सफलता भी दी जा सकती है, और कई लड़के पढ़ाई में वापिस होशियार भी हुए हैं। जो अत्यन्त कमजोर व सबसे कम नम्बर लाने वाले लड़के थे, वे भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते हैं, ऐसा मैंने अनुभव किया है।

३३. कुछ युवक नासमझी में प्रेम के चक्कर में पड़ जाते हैं, और उनमें एक दीवानगी सी आ जाती है, न उनको खाने का होश रहता है, न पीने का होश रहता है, और न ही पढ़ाई का ध्यान रहता है, ऐसे लड़कों को मां-बाप आवारा कहते हैं, और वे किसी लड़की के प्रेम में पड़कर के अपने जीवन को बरबाद करने की स्थिति में आ जाते हैं।

ऐसे समय में उस लड़के को सामने बैठाकर, प्रथम स्तर का सम्मोहन देकर उसके मन में यह भावना दी जाती है, कि वह लड़की तुम्हारे लिए ठीक नहीं है, और तुम्हें उस लड़की को छोड़ देना चाहिए, उससे प्यार करना तुम्हारे लिए उचित नहीं है, तुम्हारे कैरियर के लिए भी वह खराब है. . . और इस प्रकार हम दो-तीन बार भी उसके साथ यह प्रयोग करते हैं, तो उसके दिमाग में जो प्रेमिका का भूत होता है या एक रुझान होता है, वह समाप्त हो जाता है, तथा उसका जीवन अपने-आप में सन्तुलित और अनुकूल बन जाता है।

मगर बहुत ज्यादा आगे बढ़ गए हों, तो ऐसी अवस्था में उसको दूसरे स्तर की सम्मोहन अवस्था में ले जाकर यह भावना दें, तो निश्चय ही उसके अन्दर उस लड़की के प्रति जो दीवानगी सी होती है, जिसकी वजह से उसका कैरियर चौपट होता है, वह उस लड़की को भूल जाता है, और धीरे-धीरे उससे अलग हो जाता है, तथा वह अपने-आप एक सही और समझदार व्यक्ति बन जाता है।

इस प्रकार की समस्याओं को सुलझा कर मुझे अनुकूलता और सुख मिला है, क्योंकि मैंने एक बिगड़ते हुए लड़के को सही रास्ते पर लाकर एक पुण्य कार्य किया है। कोई भी सम्मोहन कर्ता इस प्रकार की भावना देकर के उसके मानस में उसके विचारों को स्पष्ट कर सकता है।

३४. आप अगर नौकरी कर रहे हैं, तो आपके लिए यह अत्यन्त आवश्यक है, कि आप सम्मोहन की तीसरी अवस्था के माध्यम से अपने ऑफिसर या अपने अधिकारी को यह भावना दें, कि वह आपको ज्यादा महत्व दे और आपका कार्य सम्पन्न करे, या आपका प्रमोशन करे या आपको छुट्टी दे दे, तो वह अधिकारी बिलकुल आपके अधीन हो करके ही कार्य करने लगता है, और आप इस प्रकार से ज्यादा सफलता की ओर अग्रसर हो सकते हैं तथा उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवा सकते हैं।

३५. सम्मोहन के माध्यम से आप इस सृष्टि में जैसा भी चाहे परिवर्तन कर सकते हैं, सारी परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना सकते हैं। इस प्रकार से आप अपने अधिकारी या नौकर को यह भावना दे करके, कि तुम मेरे गुलाम बने रहोगे, या तुम्हें केवल मेरा ही कार्य करना है, या तुम चोरी नहीं करोगे या तुम इस घर को छोड़ कर के नहीं जाओगे, इस प्रकार की भावना दे करके भी उसे अपने अनुकूल बना सकते हैं।

३६. सम्मोहन के माध्यम से ऐसा जीवन का कोई भी क्षेत्र नहीं है, जिसमें सफलता नहीं पाई जा सके। इसलिए सम्मोहन के माध्यम से सभी क्षेत्रों में अनुकूलता दी जा सकती है।

३७. हिप्नोटिज्म या जिसे सम्मोहन विज्ञान कहते हैं, इसके बारे में जैसा मैंने बताया, कि प्रथम स्तर पर इस प्रकार के कार्य किये जा सकते हैं। इसके साथ ही मेरे सामने ऐसे कई लोग आये हैं, जिनको यह भ्रम हो जाता है, कि उन्हें भूत-प्रेत लगा हुआ है या उनके शरीर को किसी ने बांध रखा है। ऐसे व्यक्ति को भी प्रथम स्टेज में सुला कर और सम्मोहित करके, उसके मन से यह भावना निकाली जा सकती है, कि तुम्हें भूत-प्रेत नहीं लगा है, और तुम पूर्ण स्वस्थ हो। कई बार प्रथम स्टेज में उसके मन से यह भावना नहीं निकलती, तब उसे दूसरी स्टेज में ले जाकर भी यह भावना दी जा सकती है। दूसरी स्टेज पर कार्य सम्पन्न हो जाता है।

३८. ऐसी भी स्त्रियां मुझे मिली हैं, जो अपने पतियों से परेशान हैं। उनको ऐसा लगता है, जैसे उनके पति अर्द्ध नपुंसक हैं, या यों कहा जाय, कि उनके पति उनको पूर्णतः काम-वासना से सन्तुष्ट नहीं कर पाते, और वे हमेशा चिड़चिड़ी व तनाव ग्रस्त बनी रहती हैं। डॉक्टर कहते हैं, कि ऐसी कोई बात नहीं है, और यह बात लड़ाई का कारण

बन जाती है, अतः गृहस्थ जीवन बरबाद हो जाता है। ऐसी स्त्री को भी प्रथम स्तर पर सम्मोहित करके उसके मन से यह भावना निकाली जा सकती है, कि तुम्हारा पति पूर्णतः योग्य है या पूर्ण पुरुष है, उसमें किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं है।

इसमें एक बात का ध्यान रखना चाहिए, कि किसी भी स्त्री को सम्मोहित करने से पहले उसके साथ में यदि कोई व्यक्ति हो, तो उसको पास में खड़े रखना चाहिए, सामाजिक मर्यादा के यह अनुकूल है। अकेली लड़की या स्त्री को सम्मोहित नहीं करना चाहिए, इससे कई प्रकार की समस्याएं पैदा हो जाती हैं।

३९. कई पुरुषों में भी इस प्रकार की स्थितियां पाई जाती हैं, अधिकतर व्यक्ति मुझे ऐसे मिले हैं, जिनको ऐसा लगता है, कि वे अपने-आप में नपुंसक हैं या बचपन में उनमें खराब आदतें पड़ गई थीं, जिनकी वजह से वह नपुंसक हो गया है या वह अपनी पत्नी को पूर्णतः सन्तुष्ट नहीं कर पाएगा, इसलिए वे शादी करने से भी कतराते हैं। उनके मानस में एक बड़ी ग्रंथि सी आ जाती है, जिसकी वजह से वे किसी काम में सफल नहीं हो पाते। ऐसे पुरुषों के लिए यह जरूरी है, कि दूसरे स्तर पर या प्रथम स्तर पर सम्मोहित करके उनके मन से यह भावना निकाली जाए, कि तुमने बचपन में कोई कुटेव नहीं की, और यदि की है, तो उसका कोई प्रभाव तुम्हारे पौरुष पर नहीं पड़ा है, तुम पूर्णतः सक्षम हो और उस सक्षमता के माध्यम से कार्य सफल कर सकते हो।

४०. ऐसी भी स्थितियां आती हैं, जब पति-पत्नी दोनों ही एक-दूसरे पर दोषारोपण करते रहते हैं, और यह जांचते रहते हैं, कि दोनों में ही कोई न कोई कमी है, और इस वजह से पूरा माहोल चिड़चिड़ा बन जाता है, घर में लड़ाई-झगड़े बढ़ जाते हैं। इसके लिए भी प्रथम स्तर से ही काम चल जाता है, और दोनों को ही प्रथम स्तर पर सम्मोहित करके यह भावना दी जा सकती है, कि आप दोनों सही पति-पत्नी हैं, पूर्ण सक्षम हैं, या आप कामकला में भाग लें, तो पूर्णता के साथ भाग ले सकते हैं, आप में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं है, यह भी आवश्यक है, और गृहस्थ जीवन में यह ज्यादा जरूरी है।

४१. अभी तक तो मैंने प्रथम स्तर की ही स्थितियां सामने रखी हैं, मगर कई बार प्रथम स्तर पर व्यक्ति सम्मोहित नहीं होता है, या सम्मोहित होता है, तो वह अपने-आप चेतनावस्था में आ जाता है, जिससे बात बीच में ही टूट जाती है, और जब बात बीच में ही टूट जाती है, तो सम्मोहन कर्ता बीच में खड़ा होता है, इस स्थिति में सम्मोहन कर्ता पर से माध्यम का विश्वास टूट जाता है, इसलिए ऐसे जटिल केस हों, तो व्यक्ति को दूसरे स्तर पर ले जाकर के बात करनी चाहिए।

४२. मेरे पास ऐसे भी केस आये हैं, जो अत्यन्त क्रोधी होते हैं, घर में तोड़-फोड़ करते रहते हैं, मां-बाप को गालियां देते रहते हैं, कुछ ऐसी हरकतें करते रहते हैं, जिनका कोई अन्त नहीं होता, और मां-बाप उनसे बहुत दुःखी हो जाते हैं, मगर वे कुछ कह नहीं पाते। घर से चोरी करके भाग जाना, घर से लड़ाई-झगड़ा करके भाग जाना, ऐसे लड़कों को भी प्रथम अवस्था में लाकर तीन-चार बार यह भावना देनी पड़ेगी, कि तुम चोरी नहीं करोगे, तुम मां-बाप का कहना मानोगे . . . और तुम इस प्रकार की समस्याएं पैदा नहीं करोगे। मगर इस प्रकार की स्थिति में यह ध्यान रखना चाहिए, कि दूसरे स्तर के सम्मोहन में ज्यादा सफलता मिल सकती है।

प्रथम स्तर के सम्मोहन में यदि पूरी सफलता नहीं मिल पाती, तो उसे दूसरी या तीसरी बार भी सम्मोहन देना पड़ेगा। मैं जब दूसरे स्तर का सम्मोहन कहता हूं, तो वह थोड़ा कठिन कार्य है, जिसका मैं आगे वर्णन करूंगा।

४३. कुछ लड़कियां छोटी उम्र में ही प्रेम के चक्कर में पड़ जाती हैं, फिर उनको प्रेम करने का एक नशा सा आ जाता है, वे पढ़ाई छोड़ देती हैं। मैंने कई ऐसी लड़कियों को उनके माता-पिता की अनुमति से सम्मोहन अवस्था में ले जाकर के जब पूछा, कि तुम इस छोटी-सी उम्र में ही ऐसा कार्य क्यों करती हो? तो उन्होंने कहा, कि शौक-मौज के लिए। हमें यह अच्छा लगता है, क्योंकि इससे बाहर घूमने-फिरने का, मौज-मस्ती का एक समय मिल जाता है। हमारा खर्चा, जो मां-बाप नहीं देते, इसके अलावा हमारे पास कोई चारा नहीं रहता, इसलिए पूरी तरह से वे वेश्यावृत्ति करने लग जाती हैं। ऐसी लड़कियों को सही मार्ग पर लाना भी अपने-आप में एक पुण्यदायक कार्य है। उनको सम्मोहन अवस्था में लाकर के यह ज्ञात किया जा सकता है।

४४. घर में कई बार चोरियां होती रहती हैं, और यह पता नहीं चलता, कि चोरी किसने की है या कौन चोरी कर रहा है? न बेटों पर शक किया जा सकता है और न नौकरों पर शक किया जा सकता है, क्योंकि कई साल से नौकर होते हैं, पर जिस पर आपको सब से ज्यादा शक हो, कि शायद यह हो, उसको सम्मोहित अवस्था में लाकर यदि आप प्रश्न करेंगे, कि क्या तुमने चोरी की है, तो वह बिलकुल दो टूक हां भरेगा ही, और यदि उसने चोरी नहीं की है, तो वह बिलकुल मना कर देगा।

मगर प्रथम सम्मोहन अवस्था में व्यक्ति जो कुछ बोलता है, वह सही बोलता है, वह झूठ नहीं बोल सकता। तब आप उसको यह भावना दे सकते हैं, कि तुमको चोरी नहीं करनी है, तुम्हें अपने मालिक के प्रति या अपने पिता के प्रति बिलकुल ईमानदार बने रहना चाहिए, और ऐसा करने से ही वह व्यक्ति सुधर सकता है। सम्मोहन इस मामले में बहुत अधिक सफलता दे सकता है।

४५. मेरे जीवन में ऐसे कई उदाहरण आये हैं, कि जानबूझ कर कुछ स्त्रियां पागलपन का ढोंग करती हैं या बैठे-बैठे अन्टशंट बोलने लग जाती हैं। वे पांच-सात मिनट इस प्रकार से बोलती हैं, जैसे वे होश में नहीं हैं, और घरवाले आकर कहते हैं, कि इनके ऊपर कोई भूत का साया है या जिन्न का साया है, देवता आ जाते हैं, और वे इस प्रकार की हरकतें भी करती हैं, जैसे उनके ऊपर कोई देवता आ गये हों और ऐसा कह रहे हों।

ऐसी स्त्रियों को भी सम्मोहन अवस्था में लाकर के उनसे सत्य बुलवाया जा सकता है, कि वास्तविकता क्या है, और तुम क्या कर रही हो? तब वह सत्य बोल देगी, कि मैं अपनी इम्पोर्टेन्स सिद्ध करने के लिए या मेरा महत्व इस घर में बना रहे, इसलिए ऐसा करती हूं, तो उनको यह भावना देकर के उनके मन से इस बात को निकाला जा सकता है, कि भविष्य में तुम अपने-आप को अपने परिवार में लोकप्रिय बनाने के लिये, सब लोग एकत्र हों और तुम्हारे प्रति सहानुभूति जताएं, इस भावना को लेकर के यदि तुम यह कुछ कर रही हो, तो तुम गलत कर रही हो, और तुम्हें भविष्य में इस प्रकार से घर के वातावरण को दूषित नहीं करना चाहिए, ऐसी भावना देने से वे लड़कियां या वे महिलाएं सुधर जाती हैं।

४६. सम्मोहन का सबसे बड़ा फायदा यह है, कि कुछ लड़कियों में कुंठा ग्रस्तता आ जाती है। कुंठा ग्रस्तता का तात्पर्य यह है, कि यदि समय पर उनकी शादी नहीं होती, या शादी में कुछ विलम्ब हो जाय, या वे सुन्दर नहीं होतीं या और कोई हीन भावना उनके मन में आ जाती है, तो ऐसी लड़कियों को मिर्गी आने लग जाती है, वे एकदम से एक-दो सेकेण्ड या मिनट के लिए बेहोश हो जाती हैं, और जब बेहोश हो जाती हैं, तो उन्हें कुछ ध्यान नहीं रहता, कभी-कभी तो उनके दांत भिंच जाते हैं, जबड़ा तन जाता है और एक मिर्गी का दौरा सा आ जाता है।

मिर्गी का कोई इलाज इस संसार में नहीं है। सम्मोहन इसके लिए सबसे अधिक कारगर उपाय है। सम्मोहन अवस्था में ले जाकर के उसको यह भावना दी जा सकती है, कि तुम ऐसा क्यों करती हो? तो वह बता देगी, कि अभी तक मेरी शादी नहीं हुई है, या बीस लोगों ने मुझको देखा और उसके बाद भी मुझे पसन्द नहीं किया गया, या मैं सुन्दर नहीं हूं, जो कुछ भी उसके मन में हीन भावना होगी, वह स्पष्ट बता देगी, तब सम्मोहन अवस्था में ही उसको समझाना चाहिए, कि ऐसी कोई बात नहीं है, जैसा तुम सोच रही हो, वास्तव में तुम सही हो और तुम्हारे अन्दर किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं है। ऐसा करने पर वह भविष्य में इस हीन भावना से निकल सकती है, और इस प्रकार यह मिर्गी का दौरा समाप्त हो सकता है।

४७. मैंने ऐसे पुरुषों को या लड़कों को भी देखा है, जो मेरे पास आते हैं और ये कहते हैं, कि मैं जवान हूं और २१-२२ साल का हूं, मगर मैं लड़कियों से बात करते हुए बहुत घबराता हूं, पसीने-पसीने हो जाता हूं, इस वजह से मेरे साथी मुझे चिड़ाते हैं, और मेरे बारे में कई-कई बातें करते हैं। वह वास्तव में ही कुंठा ग्रस्त हो जाता है, उनमें एक लाज, एक शर्म, एक झिझक सी आ जाती है, वह यह सोचता है, कि उसकी पर्सनल्टी वास्तव में ही उतनी ज्यादा अच्छी नहीं है, जितनी कि होनी चाहिए।

ऐसी स्थिति में उसको सम्मोहन की भावना देकर यह समझाया जा सकता है, कि तुम्हारे मन में जो हीन भावना है, जो न्यूनता है, वह तुम्हें रखने की जरूरत नहीं है, तुम यदि अगली बार किसी लड़की से बात करोगे, तो खुल के बात कर सकते हो, और अपनी बात को दो टूक शब्दों में कह सकते हो, तुम्हारी बात का प्रभाव लड़की पर पड़ता है। जब आप इस प्रकार की बातें करेंगे, तो उसके मन से यह बात निकल जाएगी।

कई बार ऐसे मामलों में दो या तीन बार सम्मोहन भावना देनी पड़ती है। इस बात का ध्यान रखें, कि सम्मोहन करते समय उसका आपके प्रति विश्वास होना चाहिए, यह जरूरी है, क्योंकि सम्मोहन कर्ता और सम्मोहन देने वाला दोनों के मन में बिलकुल स्पष्ट भाव होना चाहिए, तभी वह बिलकुल सही ढंग से सम्मोहित हो सकता है।

४८. कुछ लड़कों को यह वहम हो जाता है, कि मैं जिस लड़की से शादी करूंगा, वह लड़की बिलकुल पतिव्रता होगी या नहीं, या मेरा भविष्य बिलकुल अंधकार में है, या मैं आगे जिंदगी में कुछ नहीं कर पाऊंगा, मैं बेकार हूं। इस प्रकार की निराशावादी भावना कुछ लड़कों में जरूरत से ज्यादा आ जाती है, और निराशावादी भावना आने से वे कुंठा ग्रस्त से हो जाते हैं, सही अर्थों में पिछड़ जाते हैं।

ऐसी स्थिति में भी सम्मोहन अपने-आप में सम्पूर्ण उपाय है, और सम्मोहन के माध्यम से उनके मन की यह झिझक,संकोच या शर्म दूर की जा सकती है. . . और वह सही हो जाता है या सही रास्ते पर गतिशील होने लग जाता है, यह अपने-आप में सम्मोहन का सबसे बड़ा लाभ है, जो सम्मोहन के माध्यम से दिया जा सकता है।

४९. कुछ लड़कियां सुन्दर नहीं होतीं, और जब उनकी अपेक्षा लड़के दूसरी लड़की पर रिमार्क कसते हैं, या लिफ्ट देते हैं या उनकी तरफ देखते हैं, तो वे अपने-आप में कुंठा ग्रस्त हो जाती हैं। ऐसी लड़कियों के लिए भी सम्मोहन ही अपने-आप में श्रेष्ठतम उपाय है। उनको सम्मोहन में ले जाकर यह बताया जा सकता है, कि तुम काली हो,

फिर भी तुम सुन्दर हो, या जब तुम स्वच्छन्द और बिना झिझक के बात करोगी, तो तुम्हारे मन से यह भावना समाप्त हो जायेगी, कि तुम्हें कोई पसन्द नहीं करता, क्योंकि काला हो या गोरा सौन्दर्य तो सौन्दर्य ही होता है। तुम्हारे अन्दर अपने-आप में एक हिम्मत, जोश और पूर्ण आत्मविश्वास होना चाहिए, और जब आत्मविश्वास तुम में होगा, तो उससे तुम्हारी यह समस्या मिट जायेगी। ऐसी भावना देने पर वह सफलता की तरफ बढ़ सकती है।

५०. मैं ऐसे कई वृद्ध या प्रौढ़ व्यक्तियों को मिला हूं, जो ये कहते हैं, कि उम्र तो मेरी पचास या पचपन साल की हो गई है, मगर काम-वासना मेरी बहुत तेज है। मैं कई बार तो अपनी बहुओं को भी गलत निगाह से देखने लग जाता हूं. . . और मैं ऐसा नहीं चाहता। ऐसे व्यक्ति को भी सम्मोहन की भावना देकर के जो काम की अधिकता है, वह दूर की जा सकती है, और उसको यह भावना दी जा सकती है, कि अब तुम्हें अपने ऊपर काम-भावना को बहुत अधिक हावी नहीं होने देना है, अतः तुम्हारे ऊपर काम-भावना हावी नहीं होनी चाहिए या तुम अपने-आप को नियंत्रित कर सकते हो, और यदि तुम सही तरीके से चलो, तो तुम्हारा जीवन और ज्यादा सुखमय हो सकता है।

५१. कुछ लोगों में क्रोध की भावना बहुत ज्यादा हो जाती है, बात-बात में वे क्रोधित होने लगते हैं, क्योंकि पचपन और साठ साल की अवस्था में आते-आते व्यक्ति बिलकुल चेन्ज हो जाता है, और कुछ धारणाएं उसके मन में घर कर जाती हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है, कि सम्मोहन की भावना देकर के उसके मन में जो कुंठाएं व्याप्त होती हैं, जो घृणा की या लोभ की भावनाएं ज्यादा होती हैं, जो भी विकार उसके जीवन में ज्यादा होते हैं, उनको कम किया जा सकता है, और उसको सही तरीके से गतिशील किया जा सकता है। यह उनके जीवन की अनुकूलता के लिए और पारिवारिक सुख व शांति के लिए आवश्यक है।

५२. कुछ बड़ी स्त्रियों में या चालीस की अवस्था के बाद स्त्रियां अत्यधिक कामुक और कामातुर हो जाती हैं। ऐसी स्त्री जब देखती है, कि उसकी लड़की सुन्दर है, और उस लड़की को देखने के लिए कई लोग बेचैन से हैं, या वह निकलती है, तो कई लड़के उसको छेड़ते हैं, देखते हैं, तो अन्दर से या मां स्वयं अपने-आप को लड़की के रूप में देखना शुरू कर देती है, साथ ही वह यह भी सोचने लगती है, कि मुझे कोई छेड़ नहीं रहा है, या मेरे ऊपर कोई रिमार्क पास नहीं कर रहा है या मेरे ऊपर कोई ध्यान नहीं दे रहा है, तो वह और ज्यादा अपने-आप को सजाने-संवारने लगती है, मगर वह ज्यादा सजना और संवरना अपने-आप में एक फूहड़पन सा है, उल्टी वह भद्दी दिखने लग जाती है, और ऐसी स्थिति में वह कुण्ठा ग्रस्त हो जाती है।

कई बार तो मैंने ऐसी स्त्रियों को भी देखा है, जो उसकी लड़की के प्रेमी होते हैं, उस प्रेमी को स्पष्ट कहती हैं, कि यदि तुम मेरी लड़की को पाना चाहते हो, या मेरी लड़की के साथ सम्बन्ध बनाना चाहते हो, तो पहले मेरे साथ तुम्हें सम्बन्ध बनाने आवश्यक हैं। पहले आप मेरे साथ सम्बन्ध बनाइये, उसके बाद ही मैं अपनी लड़की की तरफ से आंखें बंद करूंगी, और ४० प्रतिशत परिवारों में ऐसा ही होता है, जो कि अपने-आप में गलत है। ऐसी स्थिति आने पर मां-बेटी के बीच में जो रिश्ता होता है, वह अपने-आप में समाप्त हो जाता है, और यह मानवीय भावना के विपरीत बात हो जाती है।

ऐसी स्थिति में सम्मोहन के माध्यम से उस स्त्री को यह भावना दी जाती है, कि तुम इस काम-भावना पर नियन्त्रण प्राप्त कर सकती हो और सही अर्थों में अपने जीवन को गतिशील कर सकती हो। इस दृष्टि से भी सम्मोहन उनके जीवन में बहुत अधिक आवश्यक है।

५३. अब मैं आपको दूसरे स्तर का सम्मोहन समझा रहा हूं। दूसरे स्तर के सम्मोहन के लिए जो सम्मोहन कर्ता है, वह किसी योग्य गुरु से उस स्तर तक पहुंचे, जहां वह किसी दूसरे को गहराई के साथ सम्मोहित कर सकता हो। गहराई के साथ सम्मोहन करने से कई लाभ हैं, पहला एक बार में ही उस व्यक्ति को सम्मोहित करके, पूरी तरह से उसकी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है, मगर यदि वह प्रथम स्तर पर सम्मोहित हुआ है, तो भी उसे दूसरी, तीसरी, चौथी भावना देना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि कई बार ऐसा होता है, कि वह दूसरी बार सम्मोहित होने के लिए तैयार नहीं होता है।

इसलिए दूसरे स्तर का सम्मोहन ज्यादा प्रभावशाली होता है, मगर यह एक प्रैक्टिकल प्रक्रिया है, जो कि किसी योग्य सम्मोहन कर्ता से ही सीखी जा सकती है। इससे कई समस्याएं सुलझ सकती हैं, और कई प्रकार के असम्भव कार्य सम्भव किये जा सकते हैं।

५४. यदि कोई लड़की किसी युवक से प्रेम करती हो और उसके प्रेमी का झुकाव किसी दूसरे की तरफ हो गया हो, ऐसी समस्याएं लेकर कई युवतियां मेरे पास आयी हैं, कि मुझे हर हालत में वह व्यक्ति चाहिए ही, और मैं इसी युवक से प्रेम करना चाहती हूं या शादी करना चाहती हूं। पहले यह मुझे बहुत प्रेम करता था या चाहता था, मगर अब बदल गया है। ऐसी स्थिति में वह लड़के से मिल भी नहीं पाती और सूख-सूख कर कांटा हो जाती है, तो फोटो के माध्यम से भी उस लड़के को अनुकूल बनाया जा सकता है।

मगर इसके लिए सम्मोहन कर्ता स्वयं बहुत ज्यादा प्रभावपूर्ण हो और सम्मोहन की दूसरी व तीसरी अवस्था को सीखा हुआ हो, तब उस फोटो को सामने रखकर और स्वयं दूसरे स्तर पर जाकर, क्योंकि दूसरे स्तर पर जाकर वह स्वयं भी चेतनावस्था में रहता है, उसे यह भावना दी जा सकती है, कि तुम्हें इस लड़की से मिलना है, हर हालत में मिलना है, और तुम्हें एक हफ्ते के अन्दर-अन्दर मिल लेना है।

ऐसी भावना उस फोटो पर देने से वह व्यक्ति पूर्ण सम्मोहित हो जाता है, और उसके बाद बेचैन सा हो जाता है उसे पाने के लिए, जिससे वह नफरत करता था, और धीरे-धीरे जब वह सामान्य अवस्था में आता है, तो उसे वह लड़की, जिसे वह भूल चुका था या जिस लड़की के प्रति उसके मन में घृणा उत्पन्न हो गयी थी, प्यार उमड़ने लगता है, ऐसा होने पर वह उसे टेलीफोन करता है, उससे मिलने की कोशिश करता है, और मिलता है। इस प्रकार से उस लड़की की समस्या का समाधान हो जाता है, और वह लड़का भी उस लड़की से मिलने में अनुकूलता अनुभव करता है।

५५. यही स्थिति लड़की के फोटो पर भी हो सकती है। कोई लड़का यदि किसी लड़की से प्रेम करता है, और प्रेम चला एक साल, दो साल, उसके बाद वह लड़की किसी और लड़के में अनुरक्त हो गई, तो लड़का पागल सा हो जाता है, वह अपना होश खो बैठता है, उसकी पढ़ाई छुट जाती है, वह सूख कर कांटा हो जाता है, उसका चेहरा अजीब सा हो जाता है। ऐसी स्थिति में उस लड़की के फोटो पर भी यह भावना दी जा सकती है, कि तुम्हें इससे प्यार करना है, इस लड़के को वापिस तुम्हें स्मरण करना है, इस लड़के से तुम्हें मिलना है, और प्रत्येक तरीके से मिल कर उसके प्रति ही अपना प्रेम प्रदर्शित करना है।

यदि आप फोटो पर इस प्रकार की दूसरे स्तर की भावना दें, तो निश्चित रूप से उस लड़की के मन में उस प्रेमी के प्रति प्यार बहुत तेजी से उमड़ेगा, और वह हर हालत में उसे प्राप्त करने की कोशिश करेगी, उससे मिलेगी और पहले जैसा प्यार वापिस प्रारम्भ हो सकता है।

५६. कई बार किसी लड़की के किसी अन्य लड़के के साथ खिंचाये हुए फोटो या प्रेम पत्र उसके पास रह जाते हैं, और किसी वजह से यदि उसके बीच में अनबन हो जाती हो, या वह लड़का ब्लैकमेल करता हो, या उस लड़की को यह धमकी देता हो, कि अगर तुमने किसी और से शादी कर ली, तो मैं यह प्रेम पत्र उसको दे दूंगा या यह फोटो उसको दे दूंगा, तो बड़ी धर्म संकट की स्थिति आ जाती है, और लड़की कुछ भी नहीं कर पाती, पर वह अन्दर ही अन्दर घुटती जाती है।

इसके लिए सम्मोहन अपने-आप में सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। सम्मोहन के माध्यम से उस लड़के को दूसरे स्तर पर लाकर यह भावना दी जा सकती है, कि तुम्हारे पास इस लड़की के जो भी फ़ोटोग्राफ्स व निगेटिव हैं या प्रेम पत्र हैं, वे उसे लाकर दे देने हैं, और अपने पास कुछ भी नहीं रखना है। यदि एक या दो बार दूसरे स्तर पर फोटो के माध्यम से उसे यह भावना दी जाती है, तो निश्चय ही उसके मन में यह बात कौंधती रहेगी, कि जो कुछ मैं कर रहा हूं, वह गलत है, मुझे किसी लड़की की जिन्दगी से खिलवाड़ नहीं करना है, तथा वह प्रेम पत्र या फोटो उस लड़की को लाकर दे देता है, और इस प्रकार उस समस्या का समाधान हो जाता है। मगर यह कार्य फोटो के माध्यम से ही हो सकता है।

५७. कई बार कोई व्यक्ति अचानक पागल जैसी हरकतें करने लग जाता है, उसकी सारी स्थितियां पागल जैसी हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में जब डॉक्टर कहे, कि इसे बिजली के शॉर्ट देने पड़ेंगे, क्योंकि यह पागल हो गया है, तो बिजली के शॉर्ट देने पर उसका सारा शरीर कमजोर और शिथिल पड़ जाता है, तथा कई प्रकार की नई बीमारियां पैदा हो जाती हैं, जिससे उसका जीवन दुःखमय हो जाता है, और वापिस वह सही नहीं हो पाता, अतः वह अपने-आप में पूर्ण चिकित्सा नहीं है।

मगर सम्मोहन के माध्यम से उसको दूसरे स्तर पर ले जाकर यह पूछा जाता है, कि तुम पागलपन क्यों कर रहे हो, तो वास्तव में उसके मन में जो ग्रंथि होती है, वह उसे खोलकर रख देता है, और फिर उस ग्रंथि को यह समझा दिया जाय या बता दिया जाय, कि ऐसी कोई स्थिति नहीं है, तुम्हारी स्थिति अनुकूल बन जायेगी, और इस प्रकार की जो तुम हरकतें कर रहे हो, वह तुम नहीं करोगे, ऐसी भावना दी जाय, तो निश्चय ही वापिस उसको चेतनावस्था में लाया जा सकता है, तब वह ऐसी हरकतें करना बंद कर देता है, और उसका पागलपन खत्म हो जाता है, यह अपने-आप में चिकित्सा के क्षेत्र में सम्मोहन का बहुत बड़ा योगदान है।

५८. कुछ लड़के आवारागर्दी करने लग जाते हैं और गलत संगति में पड़ जाते हैं तथा व्यसन के शिकार हो जाते हैं, जैसे – सिगरेट, गांजा, अफ़ीम, शराब पीना, जो उनके स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूल नहीं होते, और यदि बाद में वह व्यक्ति उस नशे को छोड़ना चाहता है, तो वह उसे चाह कर भी छोड़ नहीं पाता।

ऐसी स्थिति में सम्मोहन विज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। यदि सम्मोहन के माध्यम से उसे यह भावना दी जाय, कि तुम जो व्यसन करते हो, उसे छोड़ दोगे, तो निश्चय ही तुम एक भले लड़के बन सकते हो, और दूसरे स्तर पर ले जाकर, उसे सम्मोहित करके यह भावना दी जाय, तो निश्चय ही उसकी नशा करने की आदत

छूट जाती है, और वह वापिस सही स्थति में आ जाता है, यह उसके लिए और उसके परिवार के लिए बहुत अधिक आवश्यक होता है।

५९. यदि आपको ऐसा लगता है, कि आपने अपने मुकदमे के लिए जिस वकील को रखा था, वह वकील सामने वाली पार्टी से मिल गया है, और आपके केस को कमजोर बना रहा है, तो वकील के फोटो पर भी आप ऐसा कर सकते हैं, और उसे यह भावना दी जा सकती है, कि आप हमारे हितों की तरफ ज्यादा ध्यान देंगे, और ऐसी कोई स्थिति पैदा नहीं होने देंगे, जिससे हम हार जाएं, आपको पूर्णता के साथ हमारा ही साथ देना है, और हमें सफलता दिलानी है।

मगर इस बात का ध्यान रखें, कि वकील बहुत चतुर और होशियार होते हैं, इसलिए दूसरे स्तर पर, तीन या चार बार भावना देने पर ही वह अनुकूल हो सकता है, यदि वह दूसरी पार्टी से मिला है, तो वह दूसरी पार्टी को छोड़ करके आपके केस की तरफ पूरा ध्यान देगा और आपके हितों की रक्षा करेगा।

६०. सम्मोहन के माध्यम से शत्रु को परास्त किया जा सकता है, शत्रु को बीमार बनाया जा सकता है, शत्रुता मिटायी जा सकती है या शत्रु को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। आप जिस प्रकार से भी चाहें, उस प्रकार से आप-अपना कार्य सम्पन्न करवा सकते हैं, और उसमें सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

६१. सम्मोहन की एक विशेष क्रिया **"स्व सम्मोहन"** है, यह भी अपने-आप में महत्वपूर्ण विधा है, इसमें अपने-आप पर त्राटक करना पड़ता है, तब उसकी आंखों में स्व सम्मोहन की क्रिया जाग्रत होती है। अपनी आंखों पर त्राटक कैसे करें? इसके लिए यह आवश्यक है, कि आप सामने एक शीशा रखें और शीशे को बराबर देखते हुए, अपनी आंखें खुली रखते हुए शीशे में बराबर अपनी आंखों को देखते रहें, तो कुछ समय के बाद आपकी आंखों में स्व सम्मोहन की विशेष क्रिया जाग्रत हो जायेगी, और ऐसा करके जीवन में कई क्षेत्रों में सफलता पाई जा सकती है।

६२. यदि आपके मन में कभी कोई हीन भावना आ जाय या आपको लगे, कि आप परेशान हैं, तो आप स्वयं को सम्मोहित करके यह भावना दे सकते हैं, कि यह परेशानी थोड़े दिनों की है, वह अपने-आप दूर हो जायेगी, इसके लिए परेशान या दुःखी होने की जरूरत नहीं है, और जल्दी ही हम अपने-आप को इस परिस्थिति के अनुकूल बना लेंगे। ऐसा करने के बाद में जब उसका सम्मोहन टूटता है, तो उसका मानसिक तनाव अपने-आप में दूर हो जाता है।

६३. स्व सम्मोहन का एक और विशेष लाभ है, कि इसके माध्यम से व्यक्ति अपने-आप को ज्यादा सुन्दर और आकर्षक बना सकता है। ज्यों-ज्यों समय बीतता है, त्यों-त्यों

शरीर की झुर्रियां बढ़ती हैं और चेहरा पकने लगता है। ऐसी स्थिति में उसको बड़ी ही अपने ऊपर झुंझलाहट सी आने लगती है, कि मैं अब इतना सुन्दर व आकर्षक नहीं रहा या दूसरों को प्रभावित नहीं कर पा रहा हूं, तो दूसरों को प्रभावित करने के लिए भी स्व सम्मोहन की आवश्यकता है, क्योंकि स्व सम्मोहन के द्वारा स्वयं को यह भावना दी जा सकती है, कि मैं अब भी स्वस्थ, सुन्दर और तरुण हूं, और मैं जिस प्रकार से भी अपने को व्याप्त करना चाहूं, कर सकता हूं। ऐसा करके वह अपने मन में आयी हुई हीन ग्रंथी को मिटा सकता है।

६४. स्व सम्मोहन के माध्यम से व्यक्ति अपने शरीर में या अपने जीवन में कोई दुर्गण आ गया हो या खराब आदत पड़ गई हो अथवा नशे की आदत नहीं छूट रही हो, तो स्व सम्मोहन के माध्यम से इस विषम स्थिति से छुटकारा पाया जा सकता है। यह स्वयं को पूर्णता देने के लिए अत्यधिक आवश्यक है।

६५. स्व सम्मोहन के माध्यम से व्यक्ति बहुत ज्यादा आकर्षक, सुन्दर, तरुण, यौवनवान और स्फूर्तिवान बन सकता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होने के लिए यह आवश्यक है, कि उसका व्यक्तित्व अपने-आप में प्रभावशाली हो। वह जहां कहीं भी जाए, अपने-आप में पूर्ण दिखे, उसे सम्मान, यश, कीर्ति मिले, लोग उसके व्यक्तित्व से आकर्षित हों, ऐसा करना आवश्यक है। ऐसा करने के लिए ही यह आवश्यक है, कि वह अपने-आप को सम्मोहित करे, और प्रथम स्तर के सम्मोहन के बाद ही वह अपने-आप को ऐसी भावना दे सकता है, कि मैं धीरे-धीरे ज्यादा प्रभावशाली होता जा रहा हूं, लोग मेरी बातों पर विश्वास करने लगे हैं, लोग मुझे आदर-सम्मान देने लगे हैं, और इस प्रकार एक या दो बार भावना देकर के व्यक्ति अपने-आप को तरोताजा बना सकता है।

६६. स्व सम्मोहन के माध्यम से व्यक्ति ज्यादा सुन्दर, ज्यादा आकर्षक, लड़कियों में ज्यादा लोकप्रिय बन सकता है, और कुछ ऐसी स्थिति पैदा की जा सकती है, कि वह ज्यादा से ज्यादा प्रभावपूर्ण बन सके। मैंने अपने जीवन में अनुभव किया है, कि जब भी जीवन में कोई परेशानी, बाधा या संकट आये, तो ऐसे समय में हताश-निराश होने की अपेक्षा यदि व्यक्ति स्वयं को ही सम्मोहित करके अपने-आप को ऐसी भावना दे, तो वह उन समस्याओं से उबर सकता है, और पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है। यह जीवन का आवश्यक और अनिवार्य तत्व है।

६७. जिस प्रकार से स्व सम्मोहन विज्ञान सम्मोहन की एक कला है, ठीक उसी प्रकार से **"मास हिप्नोटिज्म"** भी एक विशेष क्रिया है। मास हिप्नोटिज्म का मतलब है, भीड़ को सम्मोहित करना। अभी तक तो मैं यह बता रहा था, कि एक व्यक्ति या अपने-आप

को कैसे सम्मोहित किया जा सकता है। मास हिप्नोटिज्म के लिए दो प्रकार की क्रियाएं करनी पड़ती हैं। एक क्रिया तो यह, कि आप दोनों भौहों के बीच में एक बिन्दी लगा करके अपनी आंखों से उस बिन्दी को देखने का प्रयत्न करें, और जब आपको दोनों भौहों के बीच लगी लाल बिन्दी दिखाई देने लग जाय, तो समझना चाहिए, कि ऊपरी सम्मोहन सिद्ध हो गया है।

इसके बाद में नाक के अन्तिम सिरे पर एक लाल बिन्दी लगा करके, आंखों को झुका करके उस नाक की टोह में लगी लाल बिन्दी को देखने का प्रयास करें, जब वह भी दिखाई देने लग जाय, तो समझना चाहिए, कि आपका सम्मोहन सिद्ध हो गया है या मास हिप्नोटिज्म में आप सफल हो गये हैं।

यद्यपि यह कठिन है, और जितनी आसानी से आप यह पंक्ति पढ़ रहे हैं, उतना यह आसान नहीं है, लगभग इसमें तीन-चार महीने लग जाते हैं, मगर इस प्रकार की क्रिया को यदि किसी योग्य सम्मोहन कर्ता से सीखें, तो ज्यादा उचित रहता है। यह अपने-आप में मास हिप्नोटिज्म की क्रिया है, और यह सम्मोहन का श्रेष्ठतम विधान है।

६८. मास हिप्नोटिज्म के माध्यम से व्यक्ति भीड़ को सम्मोहित कर सकता है। यदि उसके सामने सौ, दो सौ, पांच सौ, हजार व्यक्ति बैठे हों, तो एक बार उनको देखने पर वे एक प्रकार से सम्मोहित से हो जाते हैं, और फिर वह जो बोलता है, उसका वे अक्षरक्षः पालन करते हैं, उनको पूर्णतः अपने अनुकूल बनाने के लिए यह अपने-आप में एक श्रेष्ठ विधा है।

६९. यह मास हिप्नोटिज्म नेताओं के लिए अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इसके माध्यम से नेता सामने वाली भीड़ को पूर्णतः अनुकूल बना करके वोट बटोर सकता है, और सफलता पा सकता है। इसी प्रकार जो वक्ता हैं, उन वक्ताओं के लिए भी यह मास हिप्नोटिज्म अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इस आदर-सम्मान के माध्यम से जब वह प्रवचन देता है, तो सामने चाहे कितनी ही भीड़ हो, वह अपने-आप में पूर्णतः शांत हो जाती है, और एकटक उस व्यक्तित्व को निहारने लग जाती है।

इसलिए प्रत्येक गुरु के लिए, प्रत्येक संन्यासी के लिए, प्रत्येक साधु के लिए, प्रत्येक प्रवचन कर्ता के लिए, प्रत्येक नेता के लिए या जिसको भीड़ से सामना करना पड़ता है, उसके लिए यह कला अपने-आप में बहुत अधिक अनुकूल है, और इसके माध्यम से वे ज्यादा सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

७०. मास हिप्नोटिज्म की एक और विशेषता है, कि यदि आपके परिवार में दस-पन्द्रह व्यक्ति हैं अथवा आपके मित्र हैं, उन मित्रों के बीच यदि आप मास हिप्नोटिज्म की

एक विशेष क्रिया आंखों में लाने के बाद उन्हें देखें, तो वे सारे दोस्त सम्मोहित से आपके पीछे लग जाते हैं, और आप उनको जो भी आज्ञा देते हैं, उसका वे पालन करते हैं, यह मास हिप्नोटिज्म की विशेष अवस्था है।

७१. इस मास हिप्नोटिज्म के माध्यम से आप कहीं पर भी अलोकप्रिय नहीं हो सकते, मित्रों में, सम्बन्धियों में, रिश्तेदारों में, परिवार में, भीड़ में एकबारगी ही सम्मोहित करके आप उनसे मनोवांछित कार्य पूरा करवा सकते हैं, जिस प्रकार से चाहें, उनको परिवर्तित कर सकते हैं, जिस प्रकार से चाहें, अपना कार्य निकलवा सकते हैं। इसीलिए कहा गया है, कि सम्मोहन की श्रेष्ठतम विधा, श्रेष्ठतम क्रिया मास हिप्नोटिज्म ही है।

७२. अब मैं दूसरे स्तर की बात बता रहा हूं। अभी तक मैंने जो कुछ भी बताया, वह सम्मोहन के प्रथम स्तर पर ही कार्य किया जा सकता है, परन्तु यदि आपने 'सूर्य त्राटक' किया है, सूर्य को ३२ मिनट तक निहार करके उसकी विशेष ऊर्जा को प्राप्त किया है, तो आप किसी भी व्यक्ति को सम्मोहन की दूसरी या तीसरी अवस्था में ले जा सकते है। मैंने जैसा बताया था, कि बिना किसी योग्य व्यक्तित्व के या बिना किसी योग्य सम्मोहन कर्ता के आपको सूर्य का त्राटक नहीं करना चाहिए, इससे आंखें खराब भी हो सकती हैं, परन्तु यह सम्मोहन कर्ता के लिए अत्यधिक आवश्यक है, क्योंकि कई लोग सम्मोहन की प्रथम अवस्था में आते ही नहीं, तब उनको अपनी आंखों के माध्यम से दूसरे स्तर का सम्मोहन देना पड़ता है।

यदि व्यक्ति धूर्त, चालाक, मक्कार, दुष्ट या राक्षस प्रवृत्ति का हो, तो प्रथम अवस्था में नहीं जाता, तब उसको आंखों में दूसरे स्तर का भाव लाकर सम्मोहित किया जाता है, और ऐसा करने पर वह तुरन्त सम्मोहित हो जाता है। दूसरी तरह का सम्मोहन बहुत गहरा और प्रभावयुक्त होता है, और इससे मनोवांछित सफलताएं मिल सकती हैं।

७३. एक बार एक पत्रकार को मैंने प्रथम स्तर पर सम्मोहित करने का प्रयत्न किया, तो वह सम्मोहित नहीं हुआ, तब मुझे दूसरे स्तर का सम्मोहन उसे देना पड़ा। जब मैंने उस पर दूसरे स्तर का सम्मोहन किया, तो वह तुरन्त सम्मोहित हो गया, और जब मैंने उससे पूछा, कि तुम बहुत दिनों से परेशान व दुःखी हो, क्या कारण है? तो उसने बताया, कि मैं कई बार आत्महत्या करने की सोच चुका हूं, मगर मैंने आत्महत्या की नहीं, क्योंकि मैं किसी लड़की से प्रेम करता हूं, और अब मेरा जीवन में विवाह करने का कोई निश्चय नहीं है, अतः इसी कारण मैं दुःखी और परेशान रहता हूं।

फिर मैंने दूसरे स्तर पर ही उसको यह भावना दी, कि तुम अपने मन से उस लड़की का विचार छोड़ दो, और अपने-आप को आत्महत्या के विचार से भी परे हटा दो। जब मैंने उसका सम्मोहन तोड़ा, तो उसके बाद में वह बहुत ही स्वस्थ और ताजगी अनुभव करने लगा, और आज वह सभी दृष्टियों से सुखी और सफल है। इसलिए दूसरे स्तर का सम्मोहन ज्यादा प्रभावयुक्त होता है।

७४. कई बार ऐसा होता है, कि जिसको पूर्ण अपने अनुकूल बनाना है, क्योंकि पीछे मैंने बताया है, कि फोटो पर सम्मोहन करके किसी को भी अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, मगर मैंने कई बार यह भी अनुभव किया है, कि प्रथम स्तर के सम्मोहन से वह फोटो से सम्बन्धित व्यक्ति सम्मोहित नहीं भी होता, चाहे वह लड़की का फोटो हो या लड़के का, चाहे वह पुरुष का फोटो हो या स्त्री का, क्योंकि फोटो तो उस व्यक्ति का एक बिम्ब है, वह व्यक्ति स्वयं सामने नहीं है। इसलिए फोटो पर जब आप दूसरे स्तर का सम्मोहन करते हैं, और दूसरे स्तर के सम्मोहन को देकर के भावना देते हैं, तो वह निश्चय ही सम्मोहन अवस्था में आ जाता है, और जिस प्रकार से भी चाहे वह कार्य हो जाता है।

यदि किसी लड़के को आप दूसरे स्तर का सम्मोहन दे करके यह कहें, कि तुम्हें यह कार्य करना है, तो यह सम्मोहन देकर के आप स्वयं देखेंगे, कि वह व्यक्ति उस लड़की के प्रति अनुरक्त होने लगा है, और जैसा तुमने चाहा वैसा हो जायेगा, हो रहा है।

७५. कई लड़के घर से भाग जाते हैं और उनके मां-बाप बहुत दुःखी हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें यह पता नहीं पड़ता, कि लड़का कहां है, किस हालत में है? ऐसी स्थिति में भी सम्मोहन बहुत अधिक उपयोगी है, क्योंकि उस समय वह लड़का तो सामने होता नहीं, और यह भी पता नहीं होता, कि वह लड़का कहां पर है? ऐसी स्थिति में उसका फोटो सामने रख कर के, दूसरे स्तर का सम्मोहन देकर के उस फोटो में यह भावना दी जाय, कि अब तुम्हें वापिस घर लौटना है, तुरन्त घर लौटना है, हर हालत में तुम्हें घर आना है, तो वह निश्चय ही तीन-चार दिनों में घर आ जाता है, और उसके घर की समस्या दूर हो जाती है।

७६. कई बार घर के झगड़ों में कोई जमीन से सम्बन्धित मामला हो और कोई पैसा लेकर के बैठ जाता है, या वापिस रजिस्ट्री नहीं कराता या वापिस पैसा नहीं चुकाता। ऐसी स्थिति में भी उस व्यक्ति के, जिसने पैसा नहीं चुकाया है या जो लड़ाई-झगड़ा करने पर आमादा है, उसके फोटो को दूसरे स्तर का सम्मोहन देकर के यदि उसे यह भावना दी जाय, कि तुम्हें इस व्यक्ति के पैसे लौटा देने हैं या इस व्यक्ति के नाम से रजिस्ट्री

करवा देनी है, तो तुरन्त इसके अनुकूल परिणाम मिलते हैं, और कुछ ही दिनों में वह व्यक्ति स्वयं आकर के कहता है, कि ये तुम्हारे पैसे बकाया हैं, तुम ये पैसे ले लो या रजिस्ट्री करवा लो, मैं अब रजिस्ट्री करवाना चाहता हूं, या जिस प्रकार से भी हो, वह समस्या सुलझ जाती है, और इस सम्मोहन के माध्यम से जो वैमनस्य है, जो कटुता है, वह दूर हो जाती है।

७७. दूसरे प्रकार के सम्मोहन के माध्यम से भाइयों में जो मन-मुटाव होता है, उस मन-मुटाव को दूर किया जा सकता है अन्यथा यह लड़ाई बहुत लम्बे समय तक चलती रहती है, और एक प्रकार से परिवार में कलह पैदा हो जाता है। इस कलह को दूर करने के लिए भी यह सम्मोहन अवस्था अधिक अनुकूल रहती है। इसके लिए दोनों भाइयों की फोटो सामने रख लें, और दोनों को ही यह भावना दी जाय, कि तुम दोनों एक-दूसरे को भाई की तरह प्यार करोगे, अनुकूलता बरतोगे और किसी भी प्रकार की तुम्हारे मन में कटुता नहीं रहेगी।

दूसरे स्तर का सम्मोहन देकर के यदि दो या तीन बार इस प्रकार की भावना दी जाय, तो उनके मन से इस प्रकार की कटुता दूर हो जाती है, और वे पूर्णतः आपस में प्रेम करने लगते हैं तथा भाइयों की तरह प्रेम और मधुरता के साथ रहने लग जाते हैं। यह भी एक तरह से बहुत परोपकारी कार्य है।

७८. कई बार मुकदमा चलता है और मुकदमा चलते-चलते व्यक्ति दुःखी हो जाता है। वह चाहता है, कि सामने वाली पार्टी समझौता कर ले, मगर वह समझौते की बात करता है, तो सामने वाली पार्टी अपनी शर्तों को उस पर थोपना शुरू कर देती है, और समझौता नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में भी यदि व्यक्ति सामने वाली पार्टी का कोई फोटो अपने पास रख ले, और उस फोटो पर दूसरे स्तर की सम्मोहन भावना देकर के यह कहे, कि तुम्हें विशेष शर्तें नहीं रखनी हैं, और जिस प्रकार से अनुकूलता मिले, उस प्रकार से अनुकूल बनते हुए इस पार्टी से समझौता कर लेना है, तो इस प्रकार का समझौता हो जाता है, और कई साल की जो मुकदमेबाजी है, वह समाप्त हो जाती है, तथा जीवन में अनुकूलता, व्यर्थता, खर्च और समय का अपव्यय रुक जाता है, और काफी अनुकूलता आ जाती है। इस प्रकार की स्थिति से भी आदमी अनुकूलता प्राप्त कर सकता है।

७९. यदि कोई जज या न्यायाधीश आपके विपरीत हो रहा हो, तो सम्मोहन के माध्यम से आप दो क्षण के लिए उसकी आंखों में आंखें डाल करके यह भावना दें, कि आप फैसला मेरे अनुकूल करेंगे, तो आप देखेंगे, कि कुछ ही समय बाद उस वातावरण में अन्तर आने लग जाता है, और जज आपके वकील की बात को ध्यान से सुनने

लग जाता है तथा आपके अनुकूल टिप्पणियां करने लग जाता है, और इस प्रकार आप हारी हुई बाजी को पुनः जीत सकते हैं।

८०. यदि किसी भी प्रकार का कोई कठिन कार्य जीवन में आ गया हो, और उस समस्या का निदान नहीं हो रहा हो, तो आप दूसरे स्तर के सम्मोहन के माध्यम से उस कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं, किसी को भी अपने अनुकूल बना सकते हैं, यही नहीं अपितु आप जिस प्रकार से भी चाहें व्यक्ति को भावना देकर के कोई भी कार्य सम्पन्न करवा सकते हैं।

८१. सम्मोहन का यह दूसरा स्तर अपने-आप में बहुत प्रबल है। इसमें आंखों में अथाह तीव्रता और शक्ति आवश्यक है, तथा उसकी आंखों में अपने-आप में एक विशेषता पैदा हो जाती है, फिर वह जिसको भी देखता है, वह उसके अनुकूल हो जाता है, फिर वह जो कुछ भी उस समय मन में भावना रखता है, उस प्रकार की भावना के माध्यम से वह दूसरों से मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवा सकता है, और जीवन में अनुकूलता प्राप्त कर सकता है।

८२. मैंने जैसे बताया था, कि सम्मोहन की तीन अवस्थाएं होती हैं। मैंने आपको प्रथम और द्वितीय प्रकार की सम्मोहन अवस्था बतायी है, और इससे भी गहरा एक तीसरे स्तर का सम्मोहन होता है, जो और गहरा होता है। तीसरे स्तर के सम्मोहन के कई दाव हैं, खासतौर से सम्पूर्ण जीवन को उन्नत, प्रभावपूर्ण और अद्वितीय बनाने के लिए तीसरे स्तर का सम्मोहन आवश्यक है। यदि कहीं पर किसी भी प्रकार का कोई कार्य नहीं हो रहा हो, तो आप तुरन्त तीसरे प्रकार के सम्मोहन में उस व्यक्ति को लाकर के यदि उसे आज्ञा देंगे, तो वह आपकी आज्ञा का पालन करेगा और आपके मन के अनुकूल चलेगा।

८३. सम्मोहन के ग्रन्थों में तो यह लिखा हुआ है, कि आप सम्मोहन के माध्यम से पत्थर को भी अपने अनुकूल बना सकते हैं। तीसरे स्तर का सम्मोहन ऐसा है, कि यदि आप किसी चित्र को आज्ञा दें, तो उस चित्र का व्यक्ति अपने-आप आपकी ओर आकृष्ट हो जाता है, और आप जिस प्रकार से भी चाहें उससे अपना कार्य सम्पन्न करवा सकते हैं, क्योंकि तीसरे स्तर का सम्मोहन कभी खाली जाता ही नहीं, उसके माध्यम से प्रत्येक कार्य को सम्पन्न किया जा सकता है।

८४. यदि कोई लड़की बहुत अधिक जिद्दी हो गयी हो, और मां-बाप का कहना नहीं मानती हो या उसकी आदतें अलग प्रकार की हो गयी हों, जो सामाजिक मर्यादा के विपरीत हों, और मां-बाप परेशान हों, तो उसके फोटो पर पूर्ण तीसरे स्तर का सम्मोहन देकर के उसको आप जो भी भावना देंगे, तो उस भावना के अनुकूल ही वह कार्य करने लगेगी। यह भी अपने-आप में एक प्रकार से परोपकार का कार्य है, जिससे कि सम्मोहन

की सफलता प्राप्त की जा सकती है।

८५. सम्मोहन के इस तीसरे प्रकार में व्यक्ति अपने-आप को भी ज्यादा सफलता दे सकता है, और जिस चित्र को, जिस बिम्ब को भी यह कार्य सौंपे, उस बिम्ब पर भी यह सफलता दी जा सकती है। इसलिए इसका अपने जीवन में और समाज में बहुत ज्यादा महत्व है।

८६. तीसरे प्रकार के सम्मोहन की एक और विशेषता है, और वह यह है, कि अभी तक तो आपके सामने जो व्यक्ति है, उसे सम्मोहित करके आप कार्य करवा सकते हैं, और यदि वह नहीं हो, उसका फोटो हो, तो भी उसे सम्मोहित करके आप कार्य करवा सकते हैं। मगर इस तीसरे प्रकार के स्तर में उसके फोटो की भी जरूरत नहीं होती, केवल उसका नाम कागज पर लिख करके यदि आप तीसरे स्तर के सम्मोहन पर जाएं, तो उसका बिम्ब अपने-आप आपकी आंखों के सामने स्पष्ट हो जाता है, और वह, जो नाम लिखा हुआ है, उसे आप जो आज्ञा देंगे, उस आज्ञा के अनुरूप ही वह कार्य करने लग जायेगा। इसमें फोटो की भी जरूरत नहीं होती और आपके लक्ष्य की पूर्ति भी हो जाती है।

८७. इस तीसरे प्रकार के सम्मोहन के माध्यम से सैकड़ों-हजारों मील दूर बैठे हुए व्यक्ति के नाम को कागज पर उतार कर, कुछ समय तक आंखें बंद करके जब आप अपने-आप को अन्तर सम्मोहन करेंगे, तो उस व्यक्ति का चित्र पूर्णरूप से आपकी आंखों के सामने आ जायेगा, और आपको मालूम पड़ जायेगा, कि कागज पर जो नाम लिखा हुआ है, वह किस प्रकार का पुरुष है या किस प्रकार की स्त्री है, फिर आप उसको जो आदेश देंगे, उसका वह तुरन्त पालन करते हुए उस कार्य को करने लग जायेगा। इस सम्मोहन के माध्यम से व्यक्ति असम्भव से असम्भव और कठिन से कठिन कार्य को भी पूरा कर सकता है।

८८. सम्मोहन के माध्यम से किसी भी स्त्री को अत्यधिक सुन्दर और आकर्षक बनाया जा सकता है, क्योंकि तीसरे प्रकार का सम्मोहन अपने-आप में पूर्णतः परिवर्तित क्रिया है। किसी भी प्रकार का परिवर्तन यदि आप देना चाहें, तो उसके लिए तीसरे प्रकार का सम्मोहन देकर के उसको परिवर्तित किया जा सकता है।

किसी भी स्त्री के चेहरे पर मुंहासे हों, दाग हों, धब्बे हों या रोम हों, तो आप उसके चेहरे पर एक या दो बार उसके सामने ही उसे तीसरे स्तर के सम्मोहन पर ले जाकर यह कहें, कि अब तुम्हारे चेहरे पर से यह दाग परिवर्तित हो जाना चाहिए, तो तीसरे प्रकार के सम्मोहन से उसके चेहरे पर परिवर्तन होने लग जाता है, और आप इस चेहरे को ज्यादा सुन्दर और आकर्षक बना सकते हैं।

तिब्बती शक्ति चक्र

८६. इस तीसरे प्रकार के सम्मोहन के माध्यम से यदि किसी स्त्री का पेट बढ़ गया हो, थुलथुला शरीर हो गया हो, भारी हो गया हो या वह हीन भावना से ग्रसित हो गयी हो, तो उसको आप ज्यादा सुन्दर और आकर्षक बना सकते हैं, क्योंकि तीसरे स्तर का सम्मोहन पूर्ण परिवर्तित क्रिया है, यानि आपकी आंखों से जो तेज निकलता है, वह उसके शरीर में जाकर रासायनिक विकीर्ण पैदा करता है, और रासायनिक विकीर्ण करके आप जिस प्रकार से भी चाहें उस स्त्री के शरीर के दोषों को दूर कर सकते हैं, और उस शरीर को ज्यादा सुन्दर, ज्यादा आकर्षित, ज्यादा सम्मोहित कर सकते हैं।

यदि उसका शरीर ज्यादा भारी हो, तो उसको दुबला-पतला, छरहरा बनाया जा सकता है, यदि झुर्रियां पढ़ गयी हों, तो उन झुर्रियों को मिटाया जा सकता है, यदि उसका पेट फूल गया हो, तो उसके पेट को ठीक किया जा सकता है। इस प्रकार से आप तीसरे स्तर के सम्मोहन के द्वारा किसी भी स्त्री को अत्यधिक सुन्दर, आकर्षक, यौवनवती और प्रभावपूर्ण बना सकते हैं।

६०. सम्मोहन के माध्यम से आप किसी भी पुरुष को ज्यादा सुन्दर, आकर्षक, स्फूर्तिवान बना सकते हैं। वह जब वृद्धता की ओर अग्रसर हो या असमय उसके बाल पक गये हों, और यदि वह चाहता है, कि मैं पुनः ज्यादा स्वस्थ और ज्यादा सुन्दर बनूं, तो उसके लिए बाजारू दवाइयां कोई काम नहीं करतीं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति के शरीर में तीन या चार बार सम्मोहन दें, तो उसके शरीर में एक सुरचनात्मक घटना घटती है, और वह पहले की अपेक्षा ज्यादा आकर्षक, सुन्दर, भव्य और दिव्य बन जाता है, तथा वह दूसरों को प्रभावित करने में सक्षम बन जाता है।

६१. इस तीसरे प्रकार का सम्मोहन देकर के व्यक्ति को आप ज्यादा कार्य करने की लगन दे सकते हैं, क्षमता दे सकते हैं, उसमें ऐसी भावना दे सकते हैं, कि वह कभी भी किसी भी क्षेत्र में असफल न हो, उसका व्यक्तित्व उसी प्रकार से बन सके, जिस प्रकार से वह जीवन में सफलता की ओर अग्रसर हो सके। इसलिए यह तीसरे प्रकार का सम्मोहन उस व्यक्ति को अत्यधिक सुन्दर बनाने के लिए आवश्यक है। किसी भी स्त्री को अद्वितीय सौन्दर्यवती बनाने के लिए यह तीसरे प्रकार का सम्मोहन वरदान स्वरूप है।

६२. तीसरे प्रकार के सम्मोहन के माध्यम से यदि बहुत दूर बैठे हुए व्यक्ति के नाम से भी कोई कार्य करवाना चाहें, तो भी सम्भव है। उस व्यक्ति को यह मालूम भी नहीं पड़ेगा, कि मुझे यह कौन आज्ञा दे रहा है, और मैं यह कार्य करने के लिए क्यों बाध्य हो रहा हूं? परन्तु आप इस तीसरे स्तर के सम्मोहन के माध्यम से उसे जो भी आज्ञा देंगे, जैसे– तुम्हें उस व्यक्ति को जाकर के दो थप्पड़ मारने हैं या उस व्यक्ति को मेरे अनुकूल बनाना है, तो चाहे उसका फोटो नहीं भी हो, आप उसका नाम लेकर, उसको यह भावना देकर अपने अनुकूल कार्य करवा सकते हैं।

६३. तीसरे प्रकार के सम्मोहन के माध्यम से मनुष्यों को सम्मोहित किया जा सकता है; उसके साथ ही साथ पशु-पक्षिओं को भी सम्मोहित किया जा सकता है। यदि आप सर्कस में काम कर रहे हों, और आप किसी जानवर की आंख में कुछ क्षण देखकर के उसे तीसरे स्तर के सम्मोहन की भावना देते हैं, तो वह बिलकुल पालतू बन जाता है। वह उसी प्रकार से आज्ञा का पालन करने लग जाता है, जिस प्रकार से आप आज्ञा देते हैं।

६४. सम्मोहन के माध्यम से आप पशु-पक्षी, सांप, बिच्छू या क्रूर व अत्याचारी किसी भी व्यक्ति को भावना देकर के, उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवा सकते हैं। तीसरे स्तर के सम्मोहन की सबसे बड़ी विशेषता है, कि प्रथम स्तर या दूसरे स्तर का सम्मोहन तो कभी असफल हो सकता है, मगर तीसरे स्तर का सम्मोहन कभी भी असफल नहीं हो सकता, और इस प्रकार के सम्मोहन के माध्यम से किसी भी क्षेत्र का, किसी भी वर्ग का कोई भी व्यक्ति हो, उसे पूर्णतः अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

६५. **यह प्रश्न पूछा जाता है, कि क्या सम्मोहन के माध्यम से हम साधना में सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं?**

मेरे अनुभव में यह आया है, कि जिस प्रकार आप किसी पुरुष या स्त्री के चित्र पर सम्मोहन की भावना देते हैं, उसी प्रकार किसी देवता के चित्र पर यदि आप सम्मोहन की भावना देकर साधना करते हैं, तो निश्चय ही वह साधना सिद्ध

शक्ति चक्र

होती है, उदाहरण के लिए यदि आप अप्सरा साधना करना चाहते हैं और दो या तीन बार साधना करने में सिद्धि नहीं मिल रही है, तो आप उस अप्सरा के चित्र पर तीसरे स्तर का सम्मोहन देकर के उसको यह आज्ञा दें, कि तुम्हें मुझे साधना में सिद्धि प्राप्त करवानी है, तुम्हें मेरे सामने प्रत्यक्ष प्रकट होना है, मैं जो आज्ञा दूं, उसे पूरा करना है। इस प्रकार की भावना देकर के उस अप्सरा को भी अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

९६. जिस प्रकार से अप्सरा को सम्मोहन के माध्यम से अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, उसी प्रकार से लक्ष्मी, गणपति या आपके जो भी इष्ट हों, उनके चित्र पर भी इसी प्रकार सम्मोहन की भावना देकर के उनकी साधना में सिद्धि प्राप्त की जा सकती है, अपने इष्ट के प्रत्यक्ष दर्शन किये जा सकते हैं और उनसे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाये जा सकते हैं। चाहे भूत हो, प्रेत हो, पिशाच हो, देवता हो, किन्नर हो, गन्धर्व हो, मनुष्य हो, स्त्री हो किसी के भी चित्र पर जब तीसरे स्तर का सम्मोहन करते हैं, तो वह स्वतः ही आपके अनुकूल बनने की क्रिया प्रारम्भ कर लेता है, और इस प्रकार सम्मोहन के माध्यम से आप किसी भी साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं।

९७. यदि कोई मंत्र-जप सिद्ध नहीं हो रहा हो और आप बार-बार मंत्र-जप करके थक गये हों, तो आप उस मंत्र को पन्ने पर लिख कर, उस मंत्र पर तीसरे स्तर की सम्मोहन भावना दें, तो वह मंत्र आपके पूरे शरीर में छा जाता है, शरीर में मिल जाता है, खून में मिल जाता है, और आप उस मंत्र को पूर्णतः सिद्ध कर अपने मनोवांछित कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

६८. इस सम्मोहन के माध्यम से किसी भी रोगी को आप पूर्णतः निरोगी बना सकते हैं, उसको यह भावना दे सकते हैं, कि तुम बीमार नहीं हो और मैं तुम्हारी चिकित्सा कर रहा हूं। ऐसा करके यदि आप उसे दो या तीन बार तीसरे स्तर की भावना देते हैं, तो उसके शरीर में जो भी विकार या बीमारी होती है, वह अपने-आप में समाप्त हो जाती है।

मैंने ऐसा अनुभव किया है, कि यदि टी० बी०, कैंसर जैसी प्राणघातक बीमारियों पर भी चार या पांच बार तीसरे स्तर का सम्मोहन दें, तो उसका वह रोग अपने-आप में समाप्त होने लग जाता है, और कुछ समय के बाद वह पूर्ण निरोगी और स्वस्थ हो जाता है।

६६. इस तीसरे स्तर के सम्मोहन के माध्यम से किसी भी तरह की समस्या का निदान किया जा सकता है। शरीर में किसी भी प्रकार का रोग हो, उसे मिटाया जा सकता है। परिवार में सबको अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। पुत्रों को आज्ञाकारी बनाया जा सकता है। लड़कियों को अपने अनुकूल किया जा सकता है, और एक प्रकार से एक क्षत्र शासन की स्थिति जैसे बनती है, उस प्रकार की स्थिति प्राप्त करके व्यक्ति ज्यादा सुख और सफलता पा सकता है।

१००. इस सम्मोहन के माध्यम से व्यक्ति आर्थिक उन्नति कर सकता है। यदि व्यापार नहीं चल रहा हो, तो वह उस व्यापार का अपने मानस में बिम्ब लाकर के यह भावना दे, कि मेरा व्यापार ज्यादा से ज्यादा चलना चाहिए, मैं ज्यादा उन्नति करना चाहता हूं, मैं ज्यादा सफल होना चाहता हूं, तो वह देखगा, कि ज्यादा ग्राहक उसकी तरफ आकर्षित होने लगे हैं, और वह ज्यादा सफल होने लगा है। सेल्समैन की नौकरी करने वालों के लिए तो यह बहुत अधिक आवश्यक है।

वास्तव में ही सम्मोहन अपने-आप में पूर्ण सफल, अनुकूल और प्रभावपूर्ण क्रिया है, परन्तु इसके लिए यह आवश्यक है, कि किसी योग्य सम्मोहन कर्ता के पास जाकर उससे यह ज्ञान सीखें, क्योंकि पुस्तकों के माध्यम से भी (प्रयोग करके या अभ्यास करके) यह ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन किसी का मार्गदर्शन हो, तो ज्यादा अनुकूलता पाई जा सकती है, और जो योग्य सम्मोहन कर्ता हैं, उनके माध्यम से आप-अपनी समस्याओं का निदान पा सकते हैं।

वास्तव में ही सम्मोहन जीवन का एक आवश्यक तत्व है, जो जीवन को पूर्ण उन्नति दे सकता है। यह स्वयं का भी हित कर सकता है और दूसरों का भी हित करके समाज को ज्यादा योगदान दे सकता है।

❋

कली-कली खिल उठती है

सम्मोहन दीक्षा

कली-कली खिली, तन की ही नहीं मन की भी, जिस पर रिमझिम फुहारें आकर सावन की रुक गयी हों, ढलकने का जी ही न चाह रहा हो उन बूंदों का . . . यही अदा, यही ताजगी तो है

. . . सम्मोहन दीक्षा . . .

नेपोलियन बोनापार्ट, जो कि कद में अत्यन्त ही लघु था, उसकी एक कथा प्रसिद्ध है। एक बार वह अपनी लायब्रेरी में कोई किताब अपनी शेल्फ से निकालना चाह रहा था, किन्तु ऊंचाई पर होने के कारण उसे बार-बार उचकना सा पड़ रहा था। यह देखकर उसका जनरल, जो कि उसके पास ही खड़ा था, बोला – "लाइये मैं वह किताब निकाल देता हूं, मैं आपसे बड़ा हूं।" नेपोलियन ने मुस्करा कर उत्तर दिया, "बड़े नहीं जनरल, लम्बे!"

यह घटना हमें बताती है, कि व्यक्ति अपने कद, रंग या आकार-प्रकार से ही आकर्षित करने वाला हो, यह आवश्यक नहीं। वह लम्बा-चौड़ा, गोरा, बलिष्ठ हो सकता है, लेकिन उसमें कशिश सी भी हो, यह सदैव आवश्यक नहीं।

आपने भी अपने दैनिक जीवन में, यात्राओं में आते-जाते, सड़कों पर, बसों में सैकड़ों ऐसे युवक-युवती देखे होंगे, जो कि सौन्दर्य शास्त्र के मापदण्डों के अनुसार तो पूर्ण पुरुष या पूर्ण नारी की संज्ञा पा सकते हैं, लेकिन उनमें कोई ऐसी बात नहीं दिखती, कि उन्हें दो क्षण रुककर निहार लिया जाय या मन ऐसा चाहे, कि ठिठक कर व पलट कर एक बार फिर उनको देखें। दूसरी ओर कभी-कभी कोई साधारण कद-काठी का युवक या कोई सांवली सी लड़की दिख जाती है और मन एकदम से रुक कर, उसे देखने का फिर-फिर कर उठता है, यह साधारण अन्तर नहीं। यदि हम दर्शन की या अध्यात्म की भाषा में कहें, तो यह व्यक्ति के अन्दर का प्रकाश होता है, जो चेहरे पर आभा सी बन कर बिखर जाता है, लेकिन जब इसी बात को हम विज्ञान के रूप में समझने-समझाने की बात करते हैं, तो इसकी सम्पूर्ण विवेचना आवश्यक हो जाती है।

यद्यपि अध्यात्म और वैज्ञानिक पक्ष में कोई बहुत बड़ा अन्तर नहीं है, जिन बातों को भारतीय शास्त्र सीधी-सादी भाषा में या काव्य की रूपात्मक भाषा में कहते हैं, विज्ञान भी उन्हीं तत्वों को कभी तरंगों का आधार लेकर, तो कभी अणुओं के किन्हीं संयोजन-विघटन को रख अपना पक्ष स्पष्ट करता है। ज्ञान व विज्ञान में कोई मतभेद नहीं है, उनके प्रतिपादन के ढंगों में अन्तर है, जिससे वे एक-दूसरे के विरोधी से लगने लगते हैं।

सम्मोहन के संदर्भ में भी यही बात है। हम जिसे आत्मा का प्रकाश, आभामण्डल, दैवी आभा कह कर व्याख्यायित करते हैं, विज्ञान उसी बात को इस रूप में बताता है, कि व्यक्ति का जब ध्यान शरीर के अमुक स्थान पर होता है, तो कोई अल्फा या बीटा तरंगें निकल कर उसके चारों ओर चुम्बकीयता बढ़ा देती हैं। सामान्य वर्ग ऐसा पढ़कर-सुनकर जल्दी ही प्रभावित भी हो उठता है। प्रति प्रश्न तो इन व्याख्याओं के साथ भी किये जा सकते हैं, कि तरंग कैसे उत्पन्न होती है? चुम्बकीयता क्यों प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग होती है? इत्यादि।

हमारा उद्देश्य विज्ञान की आलोचना करना नहीं है, क्योंकि वह भी हमारे ही ज्ञान की पुष्टि में संलग्न है, और उसके प्रयासों, आलोचनाओं, शोध कार्यों से भारतीय ज्ञान को विश्व के समक्ष मंच मिला है। हमारा विवेच्य विषय तो यह है, कि हम कैसे सम्मोहन विज्ञान को समझें और समझने से भी अधिक अपने जीवन में उतारें? भारतीय पक्ष इसी से न्यून सा रह गया, क्योंकि उसने ज्ञान को जीवन में उतारने पर अधिक बल दिया, उसकी विवेचना करने की अपेक्षा। सम्मोहन अपने-आप में बहुत प्रचारित शब्द तो बना, लेकिन मानस में अधूरा

अर्थ ही प्रतिबिम्बित करने वाला। जनसामान्य इसे प्रेमी-प्रेमिका के आकर्षण-विकर्षण का कोई कौतूहल मात्र समझता है या यह, कि हम अमुक को बाध्य कर उससे ऐसा कार्य बलात् ले सकेंगे।

सम्मोहन तो सभी भारतीय विद्याओं की भांति जीवन की एक विशिष्ट शैली और कला है अपने-आप में ताजगी भरने की। इसके द्वारा व्यक्तित्व में आकर्षण, चुम्बकत्व, लपक जैसे गुण तो आते ही हैं, साथ ही यह आन्तरिक रूप से भी उमंग, उत्साह और शीतलता देने का ऐसा सफल प्रयास है, कि फिर व्यक्ति की शक्तियां गुणात्मक रूप से बढ़ने लगती हैं। हम चाह कर भी अपने रुटीन जीवन को बदल नहीं पाते। प्रत्येक व्यक्ति में यह प्रबल इच्छा होती है, कि वह अपने जीवन को संवारे, उसमें रंग भरे आकर्षण के और उत्साह के, लेकिन उसके दिन-प्रतिदिन के प्रयासों के बाद भी जब कुछ नया नहीं घटित हो पाता, तो स्वतः ही उसके अन्दर उदासीनता सी समाने लगती है, वह फिर सामान्य जीवन क्रम से समझौता कर दिन काटने लगता है।

सम्मोहन रुटीन जीवन में परिवर्तन का प्रयास है। सम्मोहन के द्वारा जब व्यक्ति के अन्दर ताजगी, खिंचाव और कुछ कौंधने जैसा भर जाता है, जब लोग उसके पास खिंच-खिंच कर आने लगते हैं, उससे बातें करने का प्रयास करने लगते हैं, तो स्वतः ही उसके मन में आत्मविश्वास जगता है, जीवन के प्रति नया उत्साह, नये सपने और नई उमंग भर जाती है, वह सकारात्मक ढंग से सोचने की दिशा में, जीवन में पहली बार बढ़ता है, कल तक उसे यही संसार, जो ऑफिस, घर, टी० वी० और अखबार की हेड लाइन के सिवा कुछ दिखता ही नहीं था, बहुत कुछ बदला-बदला सा दिखने लगता है, तब उसे अपने घर के किसी मोड़ पर खिला कोई फूल भी लुभा सकता है, कोई बच्चा उसका दो क्षण के लिए ध्यान अपनी ओर खींच सकता है और स्त्री उसको नये ढंग से सुन्दर दिख सकती है, जिस ढंग से उसने अभी तक स्त्री को देखा ही न हो। जब यह सब अन्दर घटित होता है, तब व्यक्ति स्वयं आकर्षण एवं सौन्दर्य से भर जाता है, वह विश्व का सौन्दर्य निहारता है और विश्व उसका सौन्दर्य।

सम्मोहन कोई ऐसी विद्या नहीं है, कि आपकी आंखें खूब बड़ी-बड़ी हो जायेंगी या आप सम्मोहन करने के प्रयास में आंखें फाड़-फाड़ कर सबको घूरते रहें, या आप रातों-रात चालीस की बजाय बाईस के दिखने लगेंगे, किन्तु यह तो अवश्य ही होगा, कि आपके शरीर में कुछ ऐसी प्रक्रियाएं आरम्भ हो जायेंगी, कि आप चालीस के होते हुए भी पच्चीस वर्ष के युवक का उत्साह और क्षमता अपने अन्दर स्वयं अनुभव करने लगेंगे। इस परिवर्तन से आपके अन्दर से उत्साह व आनन्द की जो तरंगें निकलेंगी, उससे लोग खिंच कर आपके पास बैठेंगे और आनन्द अनुभव करेंगे। यही सम्मोहन का मूल मंत्र है, कि लोग आपके पास खिंच कर बैठें और उनकी उठने की इच्छा न हो।

सम्मोहन को यदि हम एक प्रक्रिया के रूप में अपनाते हैं, तो वह भी एक श्रेष्ठ उपाय है, किन्तु वह लम्बा मार्ग है। सम्मोहन शक्ति का अपने शरीर में जागरण एक अन्य उपाय से भी सम्भव है, और वह यह है, कि हम योग्य गुरु से **'सम्मोहन दीक्षा'** प्राप्त करें।

दीक्षा अपने-आप में प्रक्रिया के रूप में तो गहन व गोपनीय विषय है, किन्तु अपने अर्थों में कोई गूढ़ विषय नहीं है। दीक्षा तो सबसे सरल-सीधा उपाय है किसी भी ज्ञान को अर्जित करने का, जैसे – वर्षा का जल चारों ओर से बहता हुआ व्यर्थ जा रहा हो, उसे एकत्र कर बांध बना दिया जाय, उस एकत्रित जल से बिजली भी बना ली जाय और खेतों में सिंचाई भी कर ली जाय, दीक्षा इसी तरह का प्रयास है।

व्यक्ति के अन्दर शक्ति के अणु जो इधर से उधर व्यर्थ से बहते हुए घूमते-फिरते हैं, उन्हें सुसंयोजित ढंग से एक निश्चित दिशा में गतिशील करना ही किसी भी दीक्षा का उद्देश्य होता है, इन्हीं को यदि "महाकाली दीक्षा" से आबद्ध किया जाय, तो वे आन्तरिक रूप से महाकाली की प्राप्ति की दशाएं निर्मित करते हैं, इन्हीं को यदि लक्ष्मी प्राप्ति की ओर अग्रसर करें, तो लक्ष्मी प्राप्ति होती है, और इन्हीं को यदि "सम्मोहन दीक्षा" के माध्यम से सम्मोहन प्राप्ति की ओर अग्रसर करें, तो व्यक्ति के अन्दर सम्मोहन की अपूर्व दशाएं जाग्रत हो जाती हैं।

जो अपने प्रयासों से अपने अन्दर सम्मोहन शक्ति या चुम्बकीय शक्ति जाग्रत करने का प्रक्रियात्मक उपाय करते हैं, उन्हें भी एक स्तर पर आकर गुरु-कृपा प्राप्त करना अति आवश्यक हो जाता है, क्योंकि यह तो प्राण-विज्ञान का क्षेत्र है, और भारतीय शास्त्रों में गुरु को ही **'प्राण'** कहा गया है।

सम्मोहन दीक्षा : सम्पूर्ण जीवन का सौन्दर्य

किन रंगों से नहीं भर देती है सम्मोहन दीक्षा व्यक्ति के जीवन को, शारीरिक सम्मोहन और सौन्दर्य से लबालब भरने के बाद . . . क्या कुछ नहीं घटित हो जाता इस एक दीक्षा से।

- स्वतः आरम्भ हो जाती हैं ध्यान की प्रक्रियाएं।
- सूझने लगते हैं व्यक्ति को अपनी समस्याओं के हल।
- छंटने लगते हैं आपके अन्दर छाये उदासी और विषाद के काले बादल।
- जीवन में आरम्भ हो जाती है वह निश्चिन्तता भरी नींद, जो आपको युवावस्था के दिनों में, मादकता में सुलाये रखती थी।
- सहज हो जाती है कार्यालय में संगी-साथियों से सभी स्थितियां, और सहज हो उठते हैं आपके अधिकारी आपसे, अनायास. . .
- गृह कलह, पुत्र की उद्दण्डता, पत्नी की चिड़चिड़ाहट, पति का बात-बात पर झुंझलाना, यह सब तो इतिहास की बातें हो जाती हैं।
- जनसम्पर्क से जुड़े व्यक्तियों के लिए तो यह साक्षात् वरदान है, और इस युग में भला आप ही कहिए, कि कौन-सा क्षेत्र जनसम्पर्क का नहीं रहा?
- व्यापारी बन्धु तो अभिभूत हो उठे हैं इस दीक्षा को प्राप्त कर, इससे मिली व्यापारिक सफलताओं को लेकर. . .

तभी तो यह दीक्षा ही नहीं, एक विद्या सिखाने की बात ही नहीं, सम्पूर्ण जीवन का सौन्दर्य और सम्पूर्ण जीवन की शैली कह कर पुकारी गई है।

❋

सम्मोहन कर्ता के आवश्यक गुण

सम्मोहन सम्पूर्ण रूप से एक प्रक्रियात्मक ज्ञान है। इसमें मानव-मन के साथ ही सारा व्यापार है। मानव-मन की विविधता देखते हुए यह तो सम्भव नहीं, कि इसे कुछ नियमों में बांध कर रखा जा सके, और इसी कारण इस विज्ञान में सम्मोहन कर्ता का व्यक्तित्व सर्वाधिक महत्व रखता है। उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व ऐसा हो, जो कि सामने वाले को केवल आकृष्ट ही न करे वरन् उसके मन में विश्वास का भाव, आश्वस्ति का भाव भी पैदा कर सके, और यह तभी सम्भव है, जब व्यक्ति के पास गहन साधना हो, चरित्र का बल हो और सर्वोपरि मानव मात्र के प्रति अगाध और निश्छल प्रेम हो, उसी से गम्भीर, दृढ़, शालीन और सौम्य व्यक्तित्व का मालिक एक सफल सम्मोहन कर्ता बन सकता है।

एक सफल सम्मोहन कर्ता बनने के लिए आवश्यक है, उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त वह अपने जीवन में कतिपय सूत्रों का भी पालन करे। इस विषय में सबसे पहली बात या सूत्र यह है, कि आप अपने-आप में दृढ़चेता हों। आपके मन में संशय का या हिचकिचाहट का भाव कदापि नहीं होना चाहिए। मन में ढुलमुल भाव रखना, हिचक रखना या अन्य किसी प्रकार से कोई नकारात्मक भाव रखना आपकी प्राण-शक्ति को दुर्बल करता है। प्राण-शक्ति ही आपका व्यक्तित्व बनाने में, आपको गम्भीरता देने में, आपकी आंखों में तेज प्रदान करने में समर्थ होती है, अतः इस पर किसी प्रकार से आघात तो आना ही नहीं चाहिए। बार-बार क्षमा मांगना, खेद प्रकट करना, पश्चाताप करना भी ऐसी ही बातें हैं, जो प्राण-शक्ति को प्रभावित

कर दुर्बल कर देती हैं। अच्छा तो यह हो, कि हम पहले किसी भी कार्य की रूपरेखा बना लें, जिससे न तो व्यर्थ की हड़बड़ी हो और न ही बाद में पश्चाताप करने या क्षमा मांगने जैसी कोई बात।

सम्मोहन ज्ञान के अध्येता को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए, कि उसके अपने मन में हुई शंका की एक लहर भी सब कुछ बिगाड़ सकती है। यदि उसे सम्मोहन करते समय स्वयं पर जरा भी संदेह हुआ, कि क्या पता मैं सफल होऊंगा भी या नहीं, तो तुरन्त उसके विचार की तरंग सामने माध्यम से टकरा कर उसका चित्त अस्थिर कर सकती है।

सम्मोहन वास्तव में प्रक्रिया से अधिक सुसंयोजन पर निर्भर है। यदि आपने इसके ज्ञानात्मक पक्ष, क्रिया पक्ष, भावनात्मक पक्ष, व्यक्तित्व से सम्बन्धित सभी पहलुओं का सफल ढंग से एकत्रीकरण अपने अन्दर कर लिया है, तो कोई कारण नहीं, कि लोग आपसे प्रभावित न हों अथवा आप कुशल सम्मोहन कर्ता न बन सकें।

सम्मोहन कर्ता को अपनी बाह्य वेशभूषा पर यथेष्ट ध्यान देना चाहिए। उसके वस्त्र सादे और सुरुचिपूर्ण होने चाहिए, उसे अत्यधिक आकर्षक अथवा भड़कीले कपड़ों के चुनाव का निषेध करना चाहिए, क्योंकि उसके लिए यह आवश्यक है, कि समाज के लोग उसे अपने ही मध्य का मानें, तभी उस पर वे सहज विश्वास कर पायेंगे।

स्वभाव का मृदु होना भी आवश्यक है। सहज मुस्कान से युक्त चेहरा सम्मोहन कर्ता की अतिरिक्त विशेषता होती है, किन्तु उसे हंसी-ठट्ठे और हल्के स्तर की हंसी-मजाक से सदैव बचना चाहिए। आपका व्यक्तित्व सुन्दर से भी अधिक तरोताजा होना चाहिए, जिससे सभी की इच्छा हो, कि वे आपके पास क्षण दो क्षण रुकें।

सम्मोहन कर्ता को समाज में लोकप्रिय होने का तो यत्न करना चाहिए, किन्तु इस बात से परहेज करना चाहिए, कि उसकी प्राण-शक्ति का अपव्यय व्यर्थ की बहसों या गप्पों में न हो। इसी तरह उसे मूर्ख और अशिक्षित व्यक्तियों की संगत भी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उनका नकारात्मक चिन्तन आपके आभामण्डल में न्यूनता ही लाता है।

कुशल सम्मोहन कर्ता को दिन का एक निश्चित भाग एकांत चिन्तन में अवश्य ही देना चाहिए, इससे जहां एक ओर वह अपनी प्राण-शक्ति का संचयन करता है, वहीं चिन्तन-मनन कर, नित्य-प्रति के जीवन की विवेचना कर अपने व्यक्तित्व में सुधार ला सकता है। इन्हीं क्षणों का उपयोग कर वह अपने को विचार शून्य बनाने की प्रक्रिया भी कर सकता है, जिससे उसके चेहरे पर भव्यता तो आती ही है, साथ ही मस्तिष्क भी पुष्ट होता है।

एकांत चिन्तन-मनन से स्मरण शक्ति में भी प्रखरता आती है तथा जब आपकी स्मरण शक्ति पुष्ट होगी, तब आप सहज ही समाज में लोकप्रिय हो सकेंगे। विश्व विजेता **'नेपोलियन**

बोनापार्ट' की सफलता का रहस्य था, कि उसे अपने प्रत्येक सैनिक का नाम याद रहता था, और जब वह किसी का नाम लेकर पुकारता था, तो वह सैनिक अभिभूत हो उठता था, कि सम्राट होकर भी यह मुझे याद रखते हैं, और वह कुर्बानी करने के लिए तैयार रहता था।

आपके व्यक्तित्व की दृढ़ता, सजगता, प्रखरता ही आपके आभूषण होंगे। सम्मोहन कर्ता का चरित्र तो बहुत ही विश्वसनीय होना चाहिए। उसे चाहिए, कि वह सदैव गोपनीयता रखे और समाज में भी उसकी ऐसी प्रतिष्ठा हो, कि लोग समझें, यह व्यक्ति कभी हमारा रहस्य नहीं खोलेगा। कभी कोई आपको अपना रहस्य बताये भी, तब भी आप अपना चेहरा निर्विकार बनाये रखें। कभी कोई आपके सम्मुख अपने जीवन का कोई न्यून पक्ष प्रस्तुत करे, तब भी न तो आप चौंके और न उसे हल्के ढंग से लें। इसके विपरीत आप कहें, कि हां! ऐसा होता है तथा बातचीत को सहज मोड़ दे दें।

इससे आप निश्चित जानिये, कि आपके प्रति उस व्यक्ति की आंखों में सम्मान कई-कई गुना बढ़ जायेगा। यदि कोई व्यक्ति आपसे द्वेष भी रखता है, तब भी आप उसके प्रति कभी हल्के शब्द प्रयोग में न लायें। क्रोध पर तो आपका नियंत्रण होना ही चाहिए, साथ ही हंसी-मजाक पर भी। आपको प्रयास करके कभी-कभी हंसी की बात हो जाने पर भी नहीं हंसना चाहिए, इससे व्यक्ति आपके विषय में चिन्तन करते हैं और आपकी गम्भीरता का प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार से उपरोक्त बातें सम्मोहन का ही अंग हैं। केवल नेत्रों के माध्यम से ही सम्मोहन नहीं, अपितु व्यक्ति की पूरी शैली से सम्मोहन होता है, इस तथ्य का सदैव स्मरण रखना चाहिए। किसी की प्रशंसा करना, किसी की निःस्वार्थ सहायता करना, किसी की समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुन लेना, यह सब कुछ ऐसे सूत्र हैं, जो आपकी सदैव सहायता तो करेंगे ही, साथ ही ऐसा करना मानवता की बात है। सम्मोहन कर्ता का व्यक्तित्व केवल आवरण मात्र ही नहीं होना चाहिए, उसे तो सहज रूप में उच्च मानवीय मूल्यों को लेकर ही समाज के हित में गतिशील होना चाहिए।

सम्मोहन चिकित्सा

सम्मोहन एक प्रक्रिया ही नहीं, यह तो अनेक प्रक्रियाओं का समन्वित रूप है। जब सम्मोहन चिकित्सा की विधि की बात हो, तब सम्मोहन की मूल धारणा मानव-मन तक जाना पड़ता है। सम्मोहन का क्रियात्मक स्वरूप एवं पद्धति भी इसी पर तो आधारित है। चिकित्सा से हमारे मन में जो धारणा बनती है, वह किसी व्याधि अथवा दुर्घटना में ग्रस्त व्यक्ति के उपचार की बनती है, लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण पक्ष होता है 'मानव का मन'। **आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में स्वीकार किया जाने लगा है, कि अनेक व्याधियों, जिसमें 'कैंसर' जैसी असाध्य बीमारी भी आती है, का उपचार रोगी के अन्तर्मन को स्पर्श करके किया जा सकता है।**

"मन" को स्पर्श करने का, उसे निर्देश देने का एकमात्र उपाय है, **'भावना'।** सम्मोहन द्वारा चिकित्सा पद्धति में भावना के द्वारा ही बहुत कुछ घटित किया जा सकता है, जो कि अन्यथा संभव न हो रहा हो। सम्मोहन चिकित्सा के क्षेत्र में इसी भावना तत्व को अधिक व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक ढंग से एक सम्पूर्ण प्रक्रिया में मूर्त रूप दिया जाता है।

यह तो स्पष्ट है, कि भारतीय मतानुसार सम्मोहन "प्राण-शक्ति" का तथा पाश्चात्य मत से "चुम्बकत्व" का विज्ञान है। वैज्ञानिकों ने अनुभव से पाया, कि जब इस चुम्बकत्व में, अतिरिक्त ऊर्जा के रूप में भावना जोड़ दी जाती है, तो वह चुम्बकत्व शीघ्र ही एक घनत्व को प्राप्त कर लेता है, तथा व्यक्ति के अन्दर विकीर्ण रूप से व्याप्त चुम्बकत्व किसी को स्पर्श करने की दशा में आ जाता है।

भावना अपने-आप में एक जटिल प्रक्रिया है एवं इसमें काफी दिनों के अभ्यास के बाद ही परिपक्वता आ पाती है। इसके द्वारा रोगी के अन्तर्मन को अपने वश में करने का

प्रयास किया जाता है, जो कि एक अत्यंत तीव्र गति वाला तत्व है।

रोगी के बाह्य मन को अपने वश में करना कठिन होता है, क्योंकि वह बुद्धि से परिचालित होता है। **भावना का आधार चिकित्सक का इच्छा-कम्पन है। विश्व में जितने भी चेतन व सक्रिय पदार्थ हैं, उनमें कम्पन आवश्यक है, हवा, प्रकाश, ध्वनि सभी कम्पन युक्त हैं।** कम्पन का प्रभाव चिकित्सक अपनी वाणी से ही नहीं, सम्पूर्ण व्यक्तित्व से उत्पन्न करता है, और सम्मोहन द्वारा चिकित्सा की पद्धति में सर्वोत्तम दशा तो वह मानी जाती है, जब चिकित्सक सर्वथा मौन और शांत रहते हुए, रोगी को अपने बाह्य व्यवहार से अभिभूत करता हुआ मानस-तरंगों के माध्यम से उचित निर्देश दे सके।

कई एक ऐसी दशाएं होती हैं, जिनके विषय में यदि स्पष्ट रूप से रोगी से कुछ कहा जाय, तो उतना प्रभावी नहीं रहता, जबकि उसी बात को मानसिक तरंगों के माध्यम से प्रयास पूर्वक रोगी के मानस में प्रवेश देकर, उसे कई तरह के फोबिया, अनिद्रा, डिप्रेशन और यौन-विसंगतियों में पर्याप्त उपचार दिया जा सकता है।

जो व्यक्ति सफल सम्मोहन कर्ता बनने के इच्छुक हों, उनके लिए भी आवश्यक होता है, कि वे भावना के महत्व को समझें और सफल सम्मोहन कर्ता बन इस श्रेष्ठ पद्धति के माध्यम से, अनेक गम्भीर या जटिल व्याधियों से ग्रस्त व्यक्तियों के उपचार में सहायक सिद्ध हों।

सम्मोहन चिकित्सा में 'सम्मोहन दीक्षा' के माध्यम से सद्गुरुदेव अपनी प्रबल इच्छा-शक्ति से रोगी की इच्छा-शक्ति को भी प्रबल कर देते हैं, और यह तो हम सभी जानते हैं, कि प्रबल इच्छा-शक्ति ही रोग का वास्तविक निदान कर सकती है। इच्छा-शक्ति की यह प्रबलता किसी औषधि से प्रदान नहीं की जा सकती। वास्तव में जिसे 'मनोवैज्ञानिक चिकित्सा' कहा जाता है, वह एक प्रकार की सम्मोहन चिकित्सा ही है, भले ही तौर-तरीकों व संज्ञा में कुछ अन्तर हो।

❋

सम्मोहन-रहस्य

सम्मोहन शब्द में कोई बहुत बड़ा रहस्य नहीं छिपा है। जब आपका अन्तर्मन प्रभावी होकर किसी के भी अन्तर्मन को अपने वश में कर लेता है, तो वह बाह्य मन से अथवा भौतिक रूप से भी आपकी इच्छापूर्ति के लिए बाध्य हो जाता है, यही सम्मोहन है।

इस लेख में कुछ ऐसी विधियां स्पष्ट की जा रही हैं, जिनके माध्यम से आप किसी के भी अन्तर्मन पर हावी हो सकते हैं। इनमें कोई पेचीदापन या जटिलता है ही नहीं। आवश्यकता है, तो केवल थोड़ी सी संकल्प शक्ति की।

प्रारम्भ में सीधे माध्यम को बैठाकर सम्मोहित करने की अपेक्षा कुछ छोटे-छोटे प्रयोग करने चाहिए। इनसे जहां एक ओर आपको अपनी वस्तुस्थिति का पता चल सकेगा, वहीं आप सफल होने पर आत्मविश्वास से भर उठेंगे। आपको चाहिए, कि प्रारम्भ में आप चुपचाप सड़क पर जाते किसी व्यक्ति को या रेल में यात्रा करते समय किसी सहयात्री को अपनी संकल्प-शक्ति से भावना दीजिए, कि यह मुझसे मेरा अखबार मांगे अथवा यह पास आकर बातचीत करे या माचिस के लिए कहे आदि।

आप सतर्कता पूर्वक अनुभव कीजिए, कि आप द्वारा भावना देने के कितने अंतराल बाद वह व्यक्ति आपकी आज्ञा का पालन करता है अथवा कितनी बार भावना देनी पड़ती है। इससे आपको यह स्पष्ट हो सकेगा, कि आप में कितनी सघनता व तीव्रता आ चुकी है।

द्वितीय अवस्था में आप किसी अपने घनिष्ठ मित्र को लेकर उसके सहयोग से अपने को परिपक्व कर सकते हैं। घनिष्ठ मित्र को लेने का कारण यह है, कि वह आपका सहयोगी रहेगा, और यदि आप किसी कारणवश सफल नहीं हो पाते, तो वह आपकी हंसी न उड़ा कर

आपका मनोबल नहीं तोड़ेगा। यह तो स्पष्ट है, कि सम्मोहन की दशा में माध्यम को एक विशेष प्रकार की निद्रा दी जाती है, जिससे उसका बाह्य मन सुप्त और अन्तर्मन अधिक चैतन्य हो जाता है, इस दशा में व्यक्ति चाह कर भी न तो असत्य बोल सकता है और न सम्मोहन कर्ता की अवज्ञा कर सकता है।

सम्मोहन करने के लिए सर्वाधिक प्रचलित विधि तो यही है, कि माध्यम को शांत, एकांत व सुखद वातावरण वाले कमरे में बैठाकर, सम्मोहन कर्ता उसकी आंखों में आंखें डालकर गम्भीर स्वर में अपनी दृढ़ इच्छा-शक्ति के साथ आदेश देता है, कि उसे (माध्यम को) नींद आ रही है और वह सो जाय। वह इस वाक्य को दो-तीन बार आवश्यकता के अनुसार दोहराता है तथा फिर उसके बोझिल हो जाने पर उसे आराम से कुर्सी की पीठ से लग कर बैठने का निर्देश देता है। इसके पश्चात् माध्यम का अन्तर्मन सम्मोहन कर्ता के नियंत्रण में होता है। इस सर्वमान्य विधि के अतिरिक्त भी कुछ विधियों का वर्णन उपयुक्त रहेगा, जिनका अवसर विशेष पर प्रयोग किया जा सकता है।

प्रथम विधि

माध्यम को कुर्सी पर आराम से बैठ जाने को कह कर, उसे कांच की गोल गेंद दिखा कर कहिए, कि इस गेंद से विशेष किरणें निकलती हैं, जिनसे नींद आ जाती है। ऐसा कह कर वह गेंद उसकी आंखों से एक फुट की दूरी पर घुमाइए। माध्यम को उसे एकटक देखने को कहिए तथा उससे कहते जाइए, कि देखो अब तुम्हें नींद आ रही है. . . तुम्हारी पलकें भारी हो रही हैं. . . तुम चाह कर भी आंख नहीं खोल सकोगे इत्यादि। इसका शीघ्र व अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

द्वितीय विधि

इस विधि में माध्यम जो कुर्सी पर बैठा हो, उसे आंखें बंद करने को कह कर अपने दाहिने हाथ के अंगूठे से उसकी दोनों भौंहों के मध्य दबाते हुए, बाएं हाथ को उसके सिर पर फेरते हुए उपरोक्त ढंग से निर्देश दें। इससे आप देखेंगे, कि उसे शीघ्र ही नींद आ जाएगी।

तृतीय विधि

इसमें माध्यम को बैठाकर आंख बंद करने को कह कर निर्देश दिया जाता है, कि तुम सौ से उल्टी गिनती गिनोगे और चालीस तक आते-आते सो जाओगे। आपको स्वयं आश्चर्य होगा, कि वह वास्तव में अधिक से अधिक तीस तक आ पायेगा और गहन निद्रा (सम्मोहन निद्रा) में चला जायेगा।

चतुर्थ विधि

माध्यम को अपनी आंख में आंख डालकर देखने को कहिए। कुछ देर देखने के बाद आंख बंद करके उसे सम्मोहन निद्रा में जाने का निर्देश दीजिए। इस विधि में सम्मोहन कर्ता के स्पर्श से व्यक्ति पर विशेष प्रभाव होता है और वह बहुधा पहली आज्ञा में ही निद्रा में चला जाता है।

उपरोक्त विधियों में से सम्मोहन कर्ता कोई भी विधि चुन सकता है। इस हेतु यह आवश्यक होता है, कि सम्मोहन कर्ता माध्यम के भावनात्मक स्वर से परिचित हो, क्योंकि कहीं स्पर्श अनुकूल प्रभाव दे सकता है, तो कहीं प्रतिकूल प्रभाव भी। इसी प्रकार से अलग-अलग दशाओं में अलग-अलग विधि का प्रयोग समझ-बूझ कर करना उपयोगी रहता है।

सम्मोहन की अवस्थाएं

सम्मोहन में व्यक्ति को जो विशेष प्रकार की नींद दी जाती है, उससे उसका बाह्य मन सुप्त हो जाता है। यह केवल एक चरण की प्रक्रिया नहीं है, विवेचना करने पर हम पाएंगे, कि इसमें तीन चरण होते हैं। तृतीय चरण तक माध्यम को ले जाना ही पूर्णता है, और तभी सम्मोहन का पूरा प्रभाव प्राप्त हो सकता है।

प्रारम्भ में अर्थात् प्रथम चरण में माध्यम की आंखें बंद हो जाती हैं और बाह्य मन का व्यापार हल्का पड़ने से वह एक मानसिक तृप्ति और विश्राम का अनुभव करता है, जिसका प्रभाव उसके मुखमण्डल पर हल्की मुस्कान और ढीले पड़ गये स्नायुओं से दिखने लगता है, उसकी सांसों की गति मद्धम हो जाती है और पलकें भारी होने लगती हैं। उसे इस दशा में यदि हिलाएं-डुलाएं, तो वह आंख खोलने का यत्न तो करेगा, किन्तु उसे सुखद नहीं लगेगा, यह प्रायः तन्द्रा की दशा होती है।

द्वितीय अवस्था में पहली अवस्था और गहन हो जाती है, उसकी आंखों की पुतलियां ऊपर चढ़ जाती हैं, हाथ-पैर भारी हो जाते हैं, सांसें और भी अधिक मंद हो जाती हैं। यह दशा ऐसी होती है, जबकि व्यक्ति का अन्तर्मन आपके वश में तो आ चुका होता है और वह आपकी आज्ञा का भी पालन करने को तत्पर होता है, किन्तु इस दशा में वह स्थिति नहीं होती, कि आप उसके अन्तर्मन को निर्देशित कर सकें।

तृतीय अवस्था सर्वोत्तम अवस्था है। यह पहली और दूसरी अवस्थाओं का ही सम्मिश्रण है, किन्तु गहनतम रूप में। इस दशा में माध्यम आपके निर्देश अपने अन्तर्मन से ग्रहण करने की दशा में आ जाता है। इस दशा में वह असत्य भी नहीं बोल सकता और इसी अवस्था में उसे यदि कोई निर्देश देकर कहा जाय, कि तुम इसे जागने पर याद तो रखोगे, किन्तु यह भूल जाओगे, कि तुमसे सम्मोहन में क्या कहा गया, तो वह वैसा ही करता है।

आपको सम्मोहन प्रयोग आरम्भ करने से पूर्व इस बात का परीक्षण भी कर लेना चाहिए, कि क्या आपके माध्यम को उपरोक्त वर्णित तृतीय अवस्था प्राप्त हो गयी है। इस हेतु आप उससे कह सकते हैं, कि अब चूंकि नींद बहुत गहरी हो गयी है और तुम चाह कर भी अपनी आंखें नहीं खोल पाओगे या इस प्रकार कहिए, कि तुम दोनों हाथों की उंगलियों को फंसा लो और प्रयत्न करके भी उनको अलग-अलग नहीं कर पाओगे। आप यदि ऐसा पाएं, कि माध्यम वास्तव में ही आपके वर्णित अनुसार ही करता है, तो आपका प्रयोग सफल रहा है।

अब माध्यम तृतीय अवस्था में है, जहां उसका अन्तर्मन तो पूर्ण जाग्रत है, किन्तु बाह्य मन का उस पर कोई भी प्रभाव नहीं रह गया है। इसी दशा में ही आप उसके मन की गुत्थियों को जान सकते हैं, उसके गोपनीय रहस्यों से परिचित हो सकते हैं, उसे निर्देश दे सकते हैं। इसी दशा में अपना मनोवांच्छित कार्य करने के बाद आप उसे भी यह निर्देश दे सकते हैं, कि तुम्हें जगने के बाद कुछ भी याद नहीं रहेगा और इसी दशा में माध्यम से यह भी कह दिया जाता है, कि मैं ऐसा करूंगा (जैसे तीन बार चुटकी बजाऊंगा या इत्र सुंघाऊंगा आदि) तो तुम जग जाओगे।

प्रायः सम्मोहन निद्रा गहरी हो जाने पर माध्यम जगता नहीं है, किन्तु इससे चिंतित होने की कोई बात नहीं, क्योंकि वह सम्मोहन निद्रा से स्वाभाविक निद्रा में चला जायेगा, और जब उठेगा, तो उसी प्रकार उठेगा मानो सामान्य निद्रा ही त्याग कर जगा हो।

सम्मोहन का प्रयोग यद्यपि बार-बार किया जा सकता है अर्थात् उससे न तो माध्यम को और न ही सम्मोहन कर्ता को कोई हानि होती है, फिर भी सम्मोहन कर्ता जब तक कुशल न हो, अपने माध्यम के साथ बार-बार प्रयोग न करे। इसका कारण यह है, कि व्यक्ति के बाह्य मन को बिना गम्भीरता से समझे-बूझे बार-बार सुप्त करने से उसका व्यक्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की भी संभावना रहती है। इसी तरह से एक बार के सम्मोहन में यदि एक ही निर्देश दिया जाय, तो उचित रहता है।

सम्मोहन का आधार त्राटक

योग की षट् क्रियाओं में त्राटक का महत्वपूर्ण स्थान है। त्राटक स्वस्थता ही प्रदान नहीं करता, अपितु यह आपके व्यक्तित्व में असाधारण शक्तियां भर देता है। त्राटक के नियमित अभ्यास से आप मानव के साधारण स्तर से ऊपर उठने लगते हैं।

हठ योग के ग्रंथ **'हठ योग प्रदीपिका'** में मानव-शरीर को स्वस्थ और शुद्ध रखने के लिए जिन षट् क्रियाओं की संस्तुति की गई है, उनमें त्राटक सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्रिया है। **त्राटक का अर्थ है, मानसिकता व एकाग्रता को विकसित करने तथा आंखों को स्वस्थ रखने के उद्देश्य से कुछ विशेष पदार्थों को बिना पलकें झपकाए हुए एकटक देखने का अभ्यास करना।**

त्राटक से सबसे बड़ा लाभ यह है, कि मन से अनगिनत विचारों की भीड़ कम होने लगती है, और अंततः मन ध्यान की स्थिति में किसी एक वस्तु पर टिक जाता है। त्राटक सम्मोहन विज्ञान की आधारभूत क्रिया है, क्योंकि इससे आंखों की सम्मोहन शक्ति का भी विकास होता है। त्राटक क्रिया में पारंगत व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के मन की बातें जान लेता है, दूर स्थानों पर घटित होने वाली घटनाओं का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, जंगली जानवरों को अपने वश में कर लेता है, दूर पड़ी वस्तुओं को अपने-अपने स्थानों से हटा सकता है, जलते हुए दीप को बुझा सकता है, और बुझे हुए दीप को जला सकता है।

वह किसी दूसरे व्यक्ति की आंखों में आंखें डालकर देखने मात्र से उसे सम्मोहित कर सकता है, वह दूर स्थानों पर रहने वाले लोगों को भी बिना किसी कठिनाई के सम्मोहित कर सकता है।

त्राटक के अभ्यास की अवधि को धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए। जब आंखों में पानी आने लगे या वे थक जाएं, तो अभ्यास को थोड़ी देर के लिए रोक देना चाहिए, आंखों को थोड़ी देर बंद करके उन्हें विश्राम देना चाहिए। इसके बाद अभ्यास पुनः शुरू किया जा सकता है। जब त्राटक का अभ्यास लगातार कम-से-कम ३२ मिनट तक होने लगे, तब समझना चाहिए, कि वह पूर्ण हो गया है।

साधारणतः त्राटक के अभ्यास सुखासन या पद्मासन में किए जाते हैं और कुछ अभ्यास खड़े होकर भी किए जाते हैं।

त्राटक के प्रकार

१. निकट त्राटक
२. दूर त्राटक
३. अन्तर त्राटक

१. निकट त्राटक

मूर्ति, जलती हुई मोमबत्ती की स्थिर लौ, नासिकाग्र बिन्दु, वस्त्र का टुकड़ा, बिंदु, प्रतिबिम्ब और अग्नि की सहायता से 'निकट त्राटक' का अभ्यास किया जाता है। साधक को अभ्यास के लिए चयन की गई वस्तु के बीच में पांच फुट से अधिक दूरी नहीं रखनी चाहिए। त्राटक अभ्यास प्रारम्भ करने से पहले आंखों की नसों को शक्तिशाली बनाने के लिए आंखों का व्यायाम (सुखासन पर बैठ जाएं, चेहरे को हिलाए बिना आंखों की पुतलियों को ऊपर-नीचे, बाएं-दाएं तथा गोल-गोल घड़ी की सुई की दिशा में और फिर उसकी उल्टी दिशा में घुमाएं, अन्त में आंखों को विश्राम देने के लिए आंखें बंद कर लें) कर लेना उचित होता है।

निकट त्राटक का अभ्यास करने के लिए सर्वोत्तम समय प्रातः ४ बजे से सूर्योदय के बीच है, परंतु 'अग्नि त्राटक' का अभ्यास रात में किया जाता है।

निकट त्राटक को निम्न प्रकार की त्राटक क्रियाओं में विभाजित किया गया है–

(अ) मूर्ति त्राटक (आ) प्रकाश त्राटक (इ) नासिकाग्र बिंदु त्राटक

(ई) रक्तिम वस्त्र त्राटक (उ) बिन्दु त्राटक (ऊ) प्रतिबिम्ब त्राटक
(ए) अग्नि त्राटक।

(अ) मूर्ति त्राटक

'मूर्ति त्राटक' का अभ्यास प्रारम्भ करने से पहले स्फटिक शिवलिंग या किसी सफेद गोल पत्थर को आंखों से दो फिट की दूरी पर रखकर, उसे एकटक निहारने का अभ्यास कर लेना चाहिए।

मूर्ति चार इंच से अधिक लम्बी न हो। यदि मूर्ति न हो, तो कोई तस्वीर (रंगीन नहीं) ले लें। तीन फुट की दूरी पर इसे (मूर्ति या तस्वीर) रखें। इसमें आंखों को बिना पलक झपकाए हुए तब तक देखें, जब तक की आंखों में आंसू न आ जाएं। आंखों को थोड़ी देर के लिए बन्द कर लें। अब आंखें बन्द किए हुए इस पर मन को एकाग्र करें और इसकी आंखों को निहारते हुए मानसिक त्राटक करें।

शिवलिंग पर त्राटक
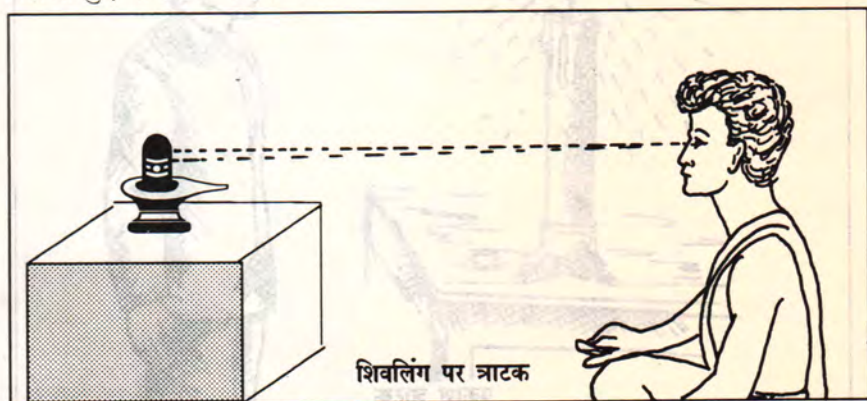
इस तरह २०-२५ बार अभ्यास करें। कुछ दिनों के अभ्यास के बाद आप मूर्ति पर मन को एकाग्र कर सकेंगे, और आंखें बन्द करके अपने मन की आंखों के सामने मूर्ति को टिकाए रख सकना आपके लिए सरल हो जाएगा।

प्रारम्भ में आप-अपने मन की आंखों से मूर्ति के साथ-साथ और बहुत सी चीज़ें देखेंगे। बाद में इन्हीं (मन की) आंखों से मनचाही घटनाओं, वस्तुओं या व्यक्तियों को भी आप देख सकेंगे। अभ्यास करते समय आपको चाहिए, कि इन घटनाओं पर आप अधिक से अधिक समय तक अपना ध्यान लगाने का प्रयत्न करें।

मूर्ति त्राटक के अभ्यास से हमारी तीसरी आंख से सम्बन्धित ग्रंथि को पोषण मिलता है तथा तीसरी आंख खुलने की सम्भावना बनती है।

(आ) प्रकाश त्राटक

जब 'मूर्ति त्राटक' का अभ्यास सफलतापूर्वक कम-से-कम ३२ मिनट होने लगे, तब 'प्रकाश त्राटक' का अभ्यास किया जा सकता है।

मोमबत्ती को जलाकर ऐसी जगह रखिए, जहां उसकी लौ स्थिर रह सके। कमरे में अंधेरा होना आवश्यक है। किसी आसन पर मोमबत्ती की स्थिर लौ से तीन फुट की दूरी पर बैठ जाइए। मन से चिन्ताओं को निकाल दीजिए, और एकटक इस लौ की ओर निहारिये। जैसे-जैसे आप इसका अभ्यास करेंगे, आप देखेंगे, कि मोमबत्ती का प्रकाश पहले से अधिक प्रखर होता जा रहा है। अभ्यास के अन्तिम चरणों में आपके इस प्रकाश में कई जाने-अनजाने चेहरे भी दिखाई पड़ेंगे। बाद में आप मनचाहे चेहरे देखने की स्थिति में भी पहुंच जायेंगे।
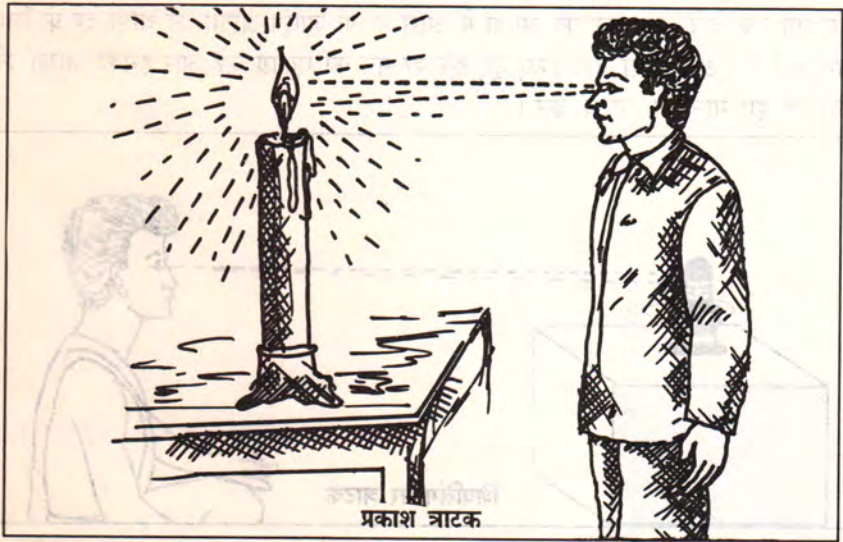
प्रकाश त्राटक

प्रकाश त्राटक का अभ्यास आप नित्य २०-२५ मिनट तक कर सकते हैं।

मोमबत्ती की लौ अग्नि का ही एक रूप है, इसीलिए इसके अभ्यास से साधक की आंखों में अग्नि का तेज प्रकट होता है, उस स्थिति में कोई भी व्यक्ति साधक की आंखों की ओर लगातार नहीं देख सकता, और देखते ही वह अपने-आप को उसके (साधक के) सम्मुख परास्त समझने लगता है।

हिन्दू धर्म ग्रंथों में आपने पढ़ा होगा, कि क्रोधी साधु मात्र अपनी दृष्टि डालने से ही पक्षियों को भस्म कर देते थे। ये साधु प्रकाश त्राटक की क्रिया में पारंगत होते थे, उनकी आंखों से जो भी अग्नि प्रकट होती थी, वह पक्षियों के प्राण ले लेती थी।

(इ) नासिकाग्र बिंदु त्राटक

जब 'प्रकाश त्राटक' का अभ्यास पूर्ण हो जाय, तो 'नासिकाग्र त्राटक' का अभ्यास किया जा सकता है।

पहले आप नासिका के अग्र भाग की ओर एकटक देखने का प्रयत्न करें। जब आप ऐसा करने में सफल हो जाएं, तब आप-अपनी भौंहों के बीच के भाग को एकटक निहारने का अभ्यास करें। भ्रूमध्य में देखने के अभ्यास की अवधि को बहुत धीरे-धीरे करके बढ़ाना चाहिए।

नासिकाग्र त्राटक

इस त्राटक का अभ्यास पूर्ण होने पर साधक को दिव्य-दृष्टि की प्राप्ति होती है, और तब अनजाने भूत और अनदेखे भविष्य की समस्त घटनाएं आसानी से देखी जा सकती हैं। दूसरों के मन की बातें जान लेना, दूर स्थान पर घटने वाली घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर लेना और इष्टदेव की मूर्ति पर ध्यान एकाग्र कर लेना तब अत्यन्त सरल हो जाता है।

(ई) रक्तिम वस्त्र त्राटक

एक सफेद कपड़े पर गहरे लाल रंग के रेशमी कपड़े के टुकड़े को टांक दीजिए। रेशमी कपड़े की लम्बाई और चौड़ाई ६-६ इंच होनी चाहिए। सफेद कपड़े को दीवार में जड़ दीजिए तथा रेशमी कपड़े के बीचोंबीच एक सफेद बिंदु बना दीजिए। इस बिन्दु को एकटक देखने का अभ्यास कीजिए। अभ्यास शान्त मन से कीजिए। धीरे-धीरे कपड़े का लाल रंग नीले

रंग में बदल जाएगा, सफेद बिंदु चमकीला बन जाएगा और कभी-कभी बिंदु दिखाई भी नहीं देगा।

नीला रंग आत्म-प्रकाश का प्रतिबिम्ब है, और इसका दिखाई पड़ना इस बात का द्योतक है, कि आपको अभ्यास में सफलता मिल रही है।

इस अभ्यास से आन्तरिक और बाह्य मन के बीच संपर्क स्थापित होता है। इसके बाद मन की आंखों के सामने साधुओं, योगियों आदि के चित्र स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं। स्मरण शक्ति का विकास होता है तथा मानसिक तनाव समाप्त होता है। समय का माप घट जाता है अर्थात् एक घण्टे का अभ्यास दस मिनट के अभ्यास के समान प्रतीत होने लगता है।

दिन में दस बार से अधिक इस त्राटक का अभ्यास नहीं करना चाहिए।

(उ) बिंदु त्राटक

इस त्राटक का अभ्यास नियमित रूप से करना चाहिए। अभ्यास के अन्त में आंखों की थकान मिटाने के लिए उन्हें ठण्डे पानी से धो लेना चाहिए। तेज रोशनी में इस अभ्यास को नहीं करना चाहिए।

भोर का समय इस अभ्यास के लिए सबसे उपयुक्त है। यदि दिन में इस त्राटक का अभ्यास करना हो, तो कमरा बंद करके करना चाहिए।

ड्राइंग पेपर पर एक काला बिंदु बनाइए। इस पेपर को एक दीवार पर टांक दीजिए। दो-तीन फुट की दूरी पर बैठिए। पलकें झपकाए बिना इस बिंदु की ओर देखिए। कुछ दिनों
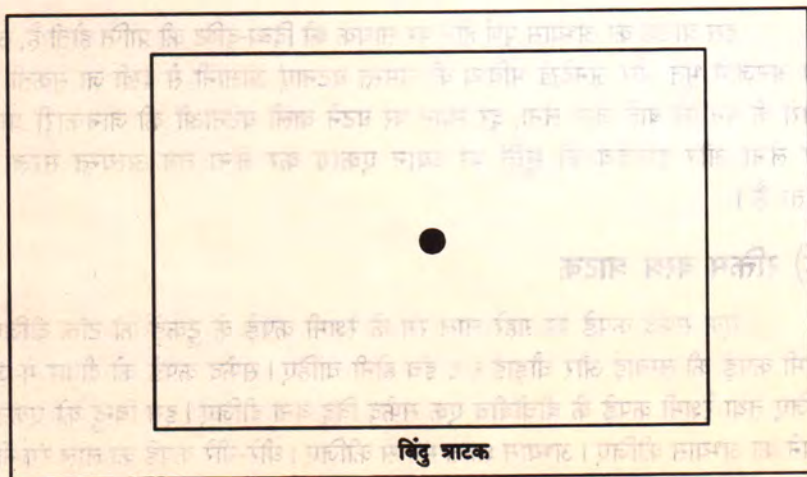
बिंदु त्राटक

के बाद इस बिंदु की जगह तेज प्रकाश दृष्टिगोचर होने लगेगा। इसका मतलब यह है, कि आपको अभ्यास में सफलता मिल रही है।

अब इस बिंदु के चारों ओर काली रोशनाई से एक वृत्त बना दीजिए। इस बिंदु पर त्राटक का अभ्यास कीजिए। नियमित अभ्यास के बाद वृत्त और बिंदु दिखाई देने बंद हो जाएंगे और उनके स्थान पर कुछ चमकदार रेखाएं दिखाई पड़ने लगेंगी।

जब ऐसा होने लगे, तो बिन्दु के चारों ओर सात वृत्त बनाइए। बिंदु पर त्राटक का अभ्यास कीजिए। **थोड़े दिनों बाद एक-एक करके बिंदु और सातों वृत्त दिखाई पड़ना बंद हो जाएंगे। जब ऐसा होने लगे, तो समझना चाहिए, कि आप तुरीयावस्था में हैं। ये वृत्त दिखाई देना इसलिए बंद हो जाते हैं, क्योंकि ड्राइंग पेपर पर एक बहुत अधिक चमकीला प्रकाश पड़ने लगता है, और यह प्रकाश आपकी आत्मा का प्रकाश है।**

अब एक दूसरा अभ्यास कीजिए। सफेद ड्राइंग पेपर लीजिए। इस पर एक चौखटा बनाइए और उसे किसी हल्के रंग से रंग दीजिए। इस चौखटे के बीचोंबीच एक-एक इंच लम्बा-चौड़ा एक दूसरा चौखटा बनाइए। इसे काले रंग से रंग दीजिए। काले चौखटे के स्थान पर काली मिर्च के बराबर शक्ल भी बनाई जा सकती है। इसे ड्राइंग पेपर की दीवार पर टांग दीजिए। इस काले रंग की शक्ल (गोल या चौकोर) पर त्राटक अभ्यास कीजिए। धीरे-धीरे यह शक्ल आकार में छोटी हो जाएगी। थोड़ी देर बाद यह फिर दिखाई पड़ेगी और आकार में बढ़ जाएगी, बाद में यह फिर अपने मूल आकार में दिखाई पड़ने लगेगी।

आकार का घटना-बढ़ना अभ्यास की सफलता का द्योतक है। आकार के घटने का मतलब है, कि बाह्य मन सुप्त हो रहा है, और आंतरिक मन पहले से अधिक क्रियाशील बन रहा है। यह क्रियाशील मन भूत और भविष्य की सभी घटनाएं देख सकता है। आकार का बढ़ना इस बात का परिचायक है, कि बाह्य मन पुनः जाग्रत हो रहा है।

बाह्य मन का सुप्त होना और आंतरिक मन का क्रियाशील होना साधक के लिए एक आदर्श स्थिति है, इस स्थिति में वह मीलों दूर की वस्तुएं इस प्रकार देख लेता है, मानो वे सब उसकी आंखों के सामने ही हों। क्रियाशील आंतरिक मन पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाता है और भूत-भविष्य की सारी घटनाएं देख लेता है।

(ऊ) प्रतिबिम्ब त्राटक

इस त्राटक का अभ्यास आठ इंच लम्बे और आठ इंच चौड़े दर्पण में पड़ने वाले अपने प्रतिबिम्ब की सहायता से किया जाता है।

दर्पण को दीवार पर लगा दें। दर्पण से तीन फुट की दूरी पर बैठ जाएं। कमरे में रोशनी आदि न हो। दर्पण की तरफ देखें, और अपने प्रतिबिम्ब के भ्रूमध्य भाग पर अपनी

दृष्टि जमाएं। धीरे-धीरे श्वास लें। कुछ दिनों के नियमित अभ्यास के बाद प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ना बंद हो जाएगा। बीच-बीच में यह दिखाई भी पड़ेगा, परंतु अन्ततः यह नहीं दिखाई पड़ेगा। आप जितनी धीमी गति से श्वास लेंगे, उतनी ही शीघ्रता से प्रतिबिम्ब का दिखाई पड़ना बन्द हो जाएगा।

'प्रतिबिम्ब त्राटक' का अभ्यास कम-से-कम एक महीने तक करें।

अभ्यास के अंतिम चरण में आपको दर्पण में बहुत से दृश्य दिखलाई पड़ने लगेंगे, यह एक अच्छा लक्षण है। दमित इच्छाएं दर्पण में दृश्य के रूप में उभरती हैं। कभी-कभी अनदेखे दृश्य भी दिखाई पड़ते हैं, अन्ततः ये दृश्य भी दिखाई देने बंद हो जाते हैं।

प्रतिबिम्ब त्राटक का अभ्यास करने से आंखों में एक विशेष प्रकार की चमक उत्पन्न हो जाती है। इस चमक की सहायता से आप इंसान, पशु-पक्षी किसी को भी सम्मोहित कर सकते हैं। आप केवल किसी की आंखों में आंखें डालकर उसे देख लें बस, वह आपकी आज्ञा मानने के लिए तैयार हो जाएगा। आप केवल क्रोधी व्यक्ति पर मात्र दृष्टिपात करके उसे अपने नियंत्रण में ला सकते हैं, वरन् पशु-पक्षियों को भी अपने वश में कर सकते हैं। पेड़ पर कोई चिड़िया बैठी हो, तो आप अपनी हथेली पर अनाज के दाने रखकर चिड़िया की ओर एकटक देखिए, और उसे कहिए— "आओ मेरे पास, चुग लो इन दानों को।" सम्मोहित होकर चिड़िया आपके पास आकर, आपकी हथेली के दाने उठा-उठाकर खाने लगेगी।

प्रतिबिम्ब त्राटक के अभ्यास से लम्बी अवधि का कालखण्ड छोटी अवधि में परिवर्तित हो जाता है। आपके अंतर्मन का सर्वत्र राज्य हो जाता है, उस स्थिति में आप जो कुछ देखते हैं, वह कल्पना या स्वप्न नहीं होता, वह मूल वस्तु ही होती है।

दर्पण का उपयोग केवल त्राटक के अभ्यास के लिए करना चाहिए। अभ्यास के अंत में दर्पण को मखमल के वस्त्र में लपेटकर रख देना चाहिए।

(ए) अग्नि त्राटक

'अग्नि त्राटक' का अभ्यास अत्यन्त कठिन होता है। सामान्य गृहस्थ व्यक्तियों को (जो अपनी काम-वासना पर नियंत्रण न रख पाते हों) इसका अभ्यास नहीं करना चाहिए।

लकड़ी के तीन-चार टुकड़े लेकर उन्हें जला दीजिए। कुछ फालतू लकड़ियां भी पास में रख लीजिए, ताकि आग बुझने पर आप उन्हें काम में ले सकें। आग से चार-पांच फुट की दूरी पर खड़े हो जाइए, और आग पर त्राटक का अभ्यास कीजिए। रोज एक घण्टे तक अभ्यास कीजिए।

अगर आप एक महीने तक नियमित अभ्यास करें, तो आपको आग की जगह प्रखर

प्रकाश दिखाई पड़ने लगेगा। इस प्रकाश में आप यक्ष, गंधर्व, देवता, गीता तथा महाभारत में वर्णित दृश्य आदि देख सकेंगे।

मानव-शरीर अग्नि, जल, पृथ्वी, आकाश और हवा इन पांच तत्वों से बना है। देवताओं के शरीर आकाश, वायु और अग्नि से ही बने होते हैं। इस त्राटक का अभ्यास करने से मानव-शरीर में पृथ्वी और जल तत्व समाप्त हो जाते हैं तथा मानव-शरीर देवताओं के शरीर के समान उन स्थानों पर आ-जा सकता है, जहां साधारण मानव की पहुंच नहीं है। जल और पृथ्वी तत्वों का नाश होने पर ही मानव-शरीर भौतिक संसार के बन्धन से छूट पाता है।

इस त्राटक के अभ्यास में निष्णात साधक के साथ सिद्ध महापुरुष उसकी सहायता करने के लिए सदैव विचरण किया करते हैं।

२. दूर त्राटक

जब निकट त्राटक का अभ्यास पूर्ण हो जाए, तब 'दूर त्राटक' का अभ्यास शुरू करना चाहिए।

दूर त्राटक के भेद निम्नांकित हैं:

(अ) दृश्य त्राटक (आ) तारा त्राटक (इ) सूर्य त्राटक।

(अ) दृश्य त्राटक

शौच आदि से निवृत्त होकर, स्नान करने के बाद किसी जंगल या किसी एकांत स्थान में चले जाएं। सूर्योदय के समय पेड़ की किसी चोटी पर इस त्राटक का अभ्यास करें। थोड़े दिनों के अभ्यास के बाद पेड़ और उसकी चोटी दोनों दिखाई देने बंद हो जाएंगे, तब केवल आकाश दिखलाई पड़ेगा। आपको अपना शरीर बहुत हल्का मालूम पड़ेगा। आपको ऐसा अनुभव होगा, कि आप आकाश की शून्यता में तैर रहे हैं। हिन्दू धर्म ग्रंथों में वर्णित अनेक घटनाओं के दृश्य आपको तैरते समय आकाश में दिखलाई पड़ेंगे। इस स्थिति में आपको अपने भौतिक शरीर का भान नहीं रहेगा। भूत काल की हर घटना आप याद रख सकेंगे और मनचाहे स्थानों पर पहुंच सकेंगे। आप चाहें तो इच्छा करते ही मानसरोवर पर पहुंच कर भगवान शंकर के दर्शन भी कर सकेंगे। आपको लगेगा, कि आप आकाश में तैर रहे हैं और आपके नीचे कैलाश पर्वत है, वहां भगवान शंकर और पार्वती विराजमान है। यह एक वास्तविक दृश्य होगा, काल्पनिक नहीं।

इस अभ्यास में निष्णात होने के बाद आप किसी भी व्यक्ति के चित्र को देख कर ही उसे सम्मोहित कर सकते हैं। इतना ही नहीं, आप किसी के मानसिक चित्र पर त्राटक का अभ्यास करके भी उसे सम्मोहित कर सकते हैं।

(आ) तारा त्राटक

हम अपनी आंखों से एक निश्चित सीमा के आगे नहीं देख सकते। हम तारों को भी उनके मूल आकार में नहीं देख सकते, क्योंकि वह देखना ही हमारी सीमा से परे है। इस सीमा पर विजय प्राप्त करने के लिए 'तारा त्राटक' का अभ्यास किया जा सकता है। तारा त्राटक का अभ्यास, दृश्य त्राटक का अभ्यास पूरा होने पर ही करना चाहिए। परंतु **तारा त्राटक का अभ्यास करने से पूर्व चन्द्रमा पर त्राटक का अभ्यास कर लेना अच्छा रहता है।**

रात्रि के समय किसी ऐसे तारे को चुन लीजिए, जो लगातार दिखाई पड़ता रहे। नियमित अभ्यास के बाद यह तारा पहले की अपेक्षा अधिक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होगा, और उसमें विभिन्न प्रकार के दृश्य दिखलाई पड़ेंगे।

चार महीने तक नियमित अभ्यास करने के बाद आप तारे में अनदेखे स्थानों को भी देख सकेंगे। मान लीजिए, आपने ताजमहल नहीं देखा है। आप तारा त्राटक का अभ्यास कीजिए। अभ्यास के अन्त में तुरंत आंखों को बन्द करके ताजमहल का चिन्तन कीजिए। आप ताजमहल को वास्तविक रूप में देख सकेंगे।

इस त्राटक में निष्णात साधक दूर स्थानों पर भी घटने वाली घटनाओं को देख सकता है।

(इ) सूर्य त्राटक

'अग्नि त्राटक' और 'तारा त्राटक' का पूरा अभ्यास करने के बाद ही 'सूर्य त्राटक' का अभ्यास किया जा सकता है। प्रारम्भ में बाल सूर्य पर त्राटक का अभ्यास करना चाहिए, परन्तु बाल सूर्य को भी पहले पानी में देखकर, फिर दर्पण में और फिर स्वयं उसे ही देखकर अभ्यास करना चाहिए। अभ्यास का समय धीरे-धीरे बढ़ाते हुए ३२ मिनट तक बाल सूर्य को एकटक देखने का प्रयत्न कीजिए, इसके बाद मध्याह्न का सूर्य देखने का प्रयत्न कीजिए, परंतु प्रारम्भ में ५-१० सेकेण्ड से अधिक देर तक अभ्यास न कीजिए।

जो साधक सूर्य त्राटक का अभ्यास ३२ मिनट तक कर लेते हैं, उन्हें दिव्य-दृष्टि प्राप्त हो जाती है। सूर्य की तेजस्विता साधक के शरीर में प्रवेश कर जाती है। शरीर दिव्य बन जाता है। नेत्रों में विशेष प्रकार की चमक आ जाती है, जिस कारण उनकी ओर देखना मानव के लिए कठिन हो जाता है।

३. अंतर त्राटक

'अंतर त्राटक' के अभ्यास में आंखें बन्द करके, अपनी इच्छा-शक्ति का उपयोग करते हुए, अपने भ्रूमध्य भाग पर एकटक देखने का प्रयत्न किया जाता है।

आंखें बंद करके अपने भ्रूमध्य पर मानसिक रूप से देखने का प्रयत्न करें। थोड़े दिनों के अभ्यास के बाद आपको अपने भ्रूमध्य पर ३,५ या ७ पीले या नीले बिंदु दिखाई पड़ेंगे। बाद में ये बिंदु दिखाई देने बंद हो जाएंगे और उनके स्थान पर एक चमकदार हिलता हुआ नेत्र दिखलाई पड़ेगा। इस नेत्र के प्रकाश में सूर्य, चन्द्रमा, तारे दिखलाई पड़ेंगे। आप आकाश की शून्यता में अपना तीसरा नेत्र भी देख सकेंगे। आपको एक त्रिकोण भी दिखाई देगा, जिसके बीच में एक बिंदु बना हुआ होगा। बाद में यह त्रिकोण और बिंदु दिखाई नहीं पड़ेंगे, और केवल आकाश की शून्यता ही दृष्टिगोचर होगी। यह स्थिति अभ्यास की पूर्ण अवस्था है।

अंतर त्राटक के अभ्यास में निष्णात साधक मीलों दूर से किसी भी व्यक्ति को अपने वश में कर सकता है। त्राटक का अभ्यास किसी योग्य गुरु के निर्देशन में करना चाहिए।

❋

सांदीपन प्रणीत

सम्मोहन वशीकरण प्रयोग

जिसे श्रीकृष्ण एवं बुद्ध ने सम्पन्न किया

सम्मोहन का यह ऐसा अनूठा प्रयोग है, जिसमें व्यक्ति अलग-अलग स्त्री-पुरुष को आकर्षित नहीं करता, वरन् स्वयं को ही एक ऐसी विशिष्ट चकाचौंध युक्त सम्मोहक शक्ति से आप्लावित कर लेता है, कि सामने वाला उसे देखते ही ठक से रह जाय। इस हेतु यह आवश्यक नहीं, कि व्यक्ति शारीरिक रूप से भी बहुत लम्बा-चौड़ा, आकर्षक हो। यह तो अपने-आप को कुछ ऐसे विशिष्ट बीज मंत्रों से सजा लेना है, जिससे कि आपके प्रभाव से लोग आपके पास खिंच कर स्वतः आयें और जीवन भर साथ रहने की इच्छा करें। इस साधना को करने के बाद तो सुन्दर स्त्रियां उस व्यक्ति के चारों ओर चक्कर ही लगाने लग जाती हैं, यही नहीं, यह साधना घर के लड़ाई-झगड़े समाप्त करने, ऑफिस के कलह का निपटारा करने में भी समान रूप से उपयोगी सिद्ध होती देखी गई है।

यह वास्तव में सम्मोहन और वशीकरण दोनों ही प्रक्रियाओं का मिला-जुला रूप है। इस साधना में जिन सामग्रियों की नितान्त आवश्यकता पड़ती है, वे हैं **"सम्मोहन वशीकरण यंत्र"** तथा **"सम्मोहन माला"**, जो प्राण-प्रतिष्ठित हों। किसी भी **शुक्रवार** की रात्रि में दस बजे के पश्चात् साधक **उत्तर दिशा** की ओर मुंह करके, सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित होकर, पीला आसन बिछाकर बैठ जायं। स्वयं पीली धोती पहिनें एवं पीला आसन व सामने पीला ही वस्त्र बिछा हो। सामने कांसे की थाली में दोनों यंत्रों को स्थापित कर उनका कुंकुम, अक्षत व पुष्प से पूजन करें, इसके बाद 'सम्मोहन माला' से निम्न मंत्र की ग्यारह माला जप करें।

मंत्र -

ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्।।

यह प्रयोग इतना तीव्र है, कि तीसरे या चौथे दिन ही व्यक्ति अपने चेहरे में एवं लोगों के व्यवहार में परिवर्तन अनुभव कर सकता है, फिर भी यदि इस प्रयोग को कुछ समय तक सप्ताह के प्रति शुक्रवार को दोहराया जाता रहे, तो लाभदायक रहता है।

❋

सम्मोहन योग से ही सम्भव है सम्पूर्ण यौवन प्राप्ति

यौवन तो एक ऐसी उमड़ती घटा है, जो जीवन में पता नहीं कहां से आकर बरसती है और जीवन को भिगो कर चली जाती है। इसकी कसक पूछिए उनसे, जिन पर यह घटा बरस कर जा चुकी हो। उस स्त्री से पूछिए, जिसके बालों में कोई एक लट सफेद सी झलक गयी हो या आंखों के नीचे एक झांई उतर आई हो, और पहले की तरह लोग उसे टकटकी बांध कर न देखते हों, बस यूं ही पास से गुजर जाते हों, फिर क्या-क्या उपाय नहीं करने पड़ते उसको! कितने प्रकार की क्रीम, लोशन, फेस लोशन, बॉडी लोशन, मिस्सी वगैरह-वगैरह क्या कुछ नहीं करना पड़ता। अपने स्वर में कैसे-कैसे बदलाव लाना पड़ता है। युवावस्था का वह खनक भरा गर्वीला स्वर लुप्त हो जाता है, रह जाती है तो याचना सी करती एक पतली आवाज।

पुरुषों पर! पुरुषों पर भी कम नहीं बीतती। युवावस्था में तो जो घटा आकर छाती है, उसकी मस्ती में दिन और रात का कोई भेद ही नहीं रहता, न होती है सपनों की कमी, यूं लगता है, कि सारा कुछ मेरी ही मुट्ठी में तो बंद है। मैं ऐसे कर लूंगा, वह पा लूंगा, और सपने ही क्यों, सब कुछ साकार भी तो होता है उन्हीं दिनों में। वही दिन जब समय के थपेड़े खाते-खाते ढल जाते हैं, तो एक जोशीला, जीता-जागता इन्सान आहिस्ते-आहिस्ते एक पुर्जे में बदल कर किसी ऑफिस या किसी फैक्टरी की मशीन में फिट हो जाता है, और अतिरिक्त रूप में सामने आकर खड़ी हो जाती हैं घर की समस्याएं, उसे फिर कौन पूछता है? उस पुर्जे को कोई स्नेह की, प्रेम की तरलता नहीं देता, उससे तो भले हैं वे लोहे के पुर्जे, जिनमें रोज याद करके ग्रीस तो लगा दी जाती है। आहिस्ते-आहिस्ते दाढ़ी पक जाती है, आंखें बुझ जाती

शक्ति चक्र

हैं और वह उसांसें भरना सीख जाता है, उसका जोश चला जाता है, और रह जाती है ठण्डी सांस। वह बोलना सीखने लगता है– 'हे प्रभु!, ईश्वर सब देखते हैं, वही ठीक करेंगे!' यह कथा एक या दो व्यक्ति की नहीं बरन् पूरी-पूरी पीढ़ी की हो गई है।

हम इसे एक व्यक्तिगत समस्या भी मान सकते हैं और समष्टि रूप में राष्ट्रीय समस्या भी। जहां पूरी की पूरी पीढ़ी इस तरह से नैराश्य के दलदल में धीरे-धीरे जा रही हो, उसकी आंखों के सपने मद्धिम पड़ रहे हों, वहां सम्पूर्ण रूप से देश पर प्रभाव पड़ता ही है, और धीरे-धीरे एक राष्ट्र निष्क्रिय, निरुत्साह और नपुंसक सा हो जाता है। मन का नैराश्य और दैन्य व्यक्ति को असमय बूढ़ा कर ही देता है, वह ढूंढता रहता है, कि जीवन में नये स्वप्न मिलें, नई आशाएं मिलें और वह अपने सपनों को मूर्त रूप दे सके, लेकिन उसके शरीर के और मानस के टूटे तन्तु उसे ऐसा घटित नहीं करने देते।

जीवन की उस घटाटोप स्थिति में कोई भी विज्ञान, कोई भी समाज शास्त्र या कोई भी विधि शास्त्र आगे बढ़कर व्यक्ति की मदद नहीं कर सकता। भौतिक समृद्धि भी इसके निराकरण का उपाय नहीं, यदि ऐसा ही होता, तो पश्चिम के देशों की यह स्थिति न होती। जिस रूप में वहां की युवावस्था हमारे लिये युवावस्था का पर्याय बनती जा रही है, उसे तो व्यामोह की ही संज्ञा दी जा सकती है। युवावस्था का अर्थ केवल तेज संगीत, तेज ड्राइविंग

और कुछ रटे-रटाये वाक्य कन्धे उचका कर बोल देना ही नहीं, अपितु **यौवन तो कुछ और अदा ही होती है, कि व्यक्ति चले और लगे, कि कोई बिजली सी चमक रही है, वह देखे और लगे, कि कोई चिनगारी फूट रही है।** युवावस्था का जो अर्थ हमने समझा है, वह तो भड़ास सी निकालने वाली बात है युवावस्था के सही रूप से व्यक्त न हो पाने की, और यह सारी तथाकथित तेजी तो अभिव्यक्ति है अपनी कुण्ठाओं की।

जीवन की ऐसी द्वन्द्व भरी स्थिति का केवल एक ही उपाय है, कि व्यक्ति के मन को स्वस्थ किया जा सके। कुछ ऐसा किया जा सके, कि मन, जो असमय बूढ़ा पड़ गया है, उसमें कुछ बदलाव किया जा सके। शरीर तो केवल प्रकट करता है हमारे अन्दर की स्थितियों को, चेहरा तो बस बता देता है मन के विषाद को। हमने तो अपने को और अपने अस्तित्व को चेहरे और देह तक ही समझ लिया।

दूसरी भूल हमसे यह हुई, कि हमने अपने भारतीय शास्त्रों को लेकर भी जब उपाय खोजे, तो उनका भी कुछ ही अंश लिया या यों कहें, कि कुछ चतुर व्यापारियों ने उन शास्त्रों में से जो कुछ बिकाऊ निकला, वह छांट कर अच्छी पैकिंग व लेबल के साथ पश्चिम के बाजारों में रख दिया, फिर बात चाहे योग की हो या कुण्डलिनी जागरण की, सम्मोहन की हो या ध्यान की, सब कुछ आकर्षक बनाने के चक्कर में भोंडा सा बना दिया और मासूम सा तर्क दिया, कि ये पश्चिमी लोग इसी तरह तो समझेंगे!

सम्मोहन के साथ भी ऐसा ही रहा। सम्मोहन का अत्यन्त व्यापक क्षेत्र स्पष्ट नहीं हो सका, क्योंकि उसका आकर्षक पक्ष, कि हम किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं, बस यही प्रचलित किया गया और वह लोकप्रिय हुआ। सम्मोहन अपने-आप में एक सम्पूर्ण विधा है। सम्मोहन के द्वारा किसी एक को या दो को वश में करना तो उसका बहुत छोटा उपयोग है। सम्मोहन के उपयोग से तो हजारों-हजारों की भीड़ को अपने वशवर्ती किया जा सकता है। यह कायाकल्प की भी सम्पूर्ण विधा है, सम्मोहन तन्तुओं के पुनर्गठन की व्यवस्था है, एक सर्वथा नवीन व्यवस्था है और एक सर्वथा नवीन रचना कर देने का आधार भी है।

सम्मोहन के क्षेत्र में प्रविष्ट होते ही हम चाहें या न चाहें हमारा प्रवेश भारतीय विद्या की आधारभूत **"प्राण विद्या"** में हो जाता है। इस जगत में जो कुछ भी है, वह प्राण ही तो है। इसी प्राण विद्या का आधार लेकर और योग्य गुरु के निर्देशन में इसका प्रयोग कर, पूर्ण यौवन की प्राप्ति भी संभव है।

सम्मोहन विज्ञान का यह रहस्य कोई जटिल रहस्य नहीं है, जब व्यक्ति सम्मोहन ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़कर शरीर की चुम्बकीयता बढ़ाने के क्षणों में इस ब्रह्माण्ड में बिखरे अणुओं का एकत्रीकरण करता है या दूसरे शब्दों में कहें, कि अपने अंदर के ब्रह्माण्ड का पुनः संयोजन

करता है, तो वे बिखरे अणु जहां एक ओर संघटित होकर चुम्बकत्व बढ़ाते हैं, वहीं शरीर में विघटित हो गये ऊतकों को एकत्र कर युवावस्था भी प्रदान कर जाते हैं। युवावस्था और वृद्धावस्था इन्हीं ऊतकों के संघटन और विघटन की दशायें विज्ञान के मत में भी तो हैं।

पूज्यपाद गुरुदेव ने एक बार इसी तथ्य को स्पष्ट रूप से बताया था, कि **"मनुष्य की आधारभूत शक्ति, उसकी 'प्राण-शक्ति' होती है, जो 'आत्म-शक्ति' को जाग्रत करती है, और इन दोनों शक्तियों के जाग्रत होने पर जो ऊर्जा उत्पन्न होती है, वही व्यक्ति की सम्मोहन शक्ति को जाग्रत्न करती है, यदि एक शक्ति का उपयोग दूसरी शक्ति को जाग्रत करने में करते हैं, तो ऊर्जा का सदुपयोग होता है अन्यथा एक ऊर्जा दूसरी ऊर्जा से टकरा कर नष्ट भी हो सकती है।"** क्रमबद्ध रूप से गुरु के निर्देशन में की गई साधना व्यक्ति के अन्दर सम्मोहन की स्थाई दशा प्रदान करती है।

सम्मोहन केवल अणुओं का संघटन-विघटन या ऊतकों का पुनर्गठन ही नहीं है। सम्मोहन जब अपनी आभा के रूप में भी व्यक्ति के चेहरे पर, उसकी वाणी में उतर आता है, तो उसे ऐसा आह्लाद और ऐसा आत्मविश्वास दे जाता है, कि व्यक्ति के अन्दर मनोवैज्ञानिक रूप से नवीन आशाएं, सृजन की नई कामनाएं सब कुछ उभर आती हैं। युवावस्था भी शारीरिक अवस्था से अधिक मानसिक अवस्था ही तो है।

सम्मोहन साधना सम्पन्न कर चुके साधक की अदाओं से या सम्मोहन दीक्षा प्राप्त कर चुके सौभाग्यशाली के नेत्रों से, उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में ही कोई थिरकन सी जो आ जाती है। वह चलता है, तो लगता है, कि कोई सिंह अड़ला कर वन में घूम रहा हो, और इन्हीं अदाओं पर बिछ-बिछ जाती हैं युवतियां। सम्मोहन साधना का अर्थ और सम्मोहन से मिले यौवन का तात्पर्य यही नहीं, कि आपके चेहरे पर प्रकाश बढ़ जाय, सम्मोहन तो यौवन तब बना, जब आपकी एक-एक अदा अलमस्ती वाली हो गयी, और यही अलमस्ती तो पूरे जीवन का सार है।

❋
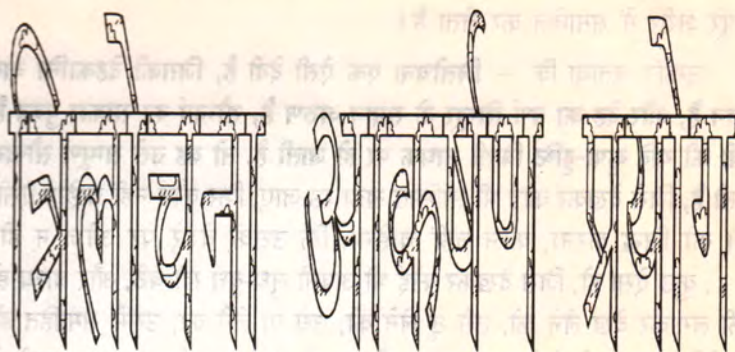
- **क्या आप में आत्मविश्वास की कमी है?**
- **क्या आपका इच्छित कार्य पूरा नहीं होता है?**
- **क्या आपका पति किसी और के प्रति अनुरक्त है?**
- **क्या आपके व्यक्तित्व से सामने वाला प्रभावित नहीं हो पाता?**

इन्हीं प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत है . . .

जब चारों ओर ओस की बूदें पत्तों पर मोती की तरह दिखाई दे रही थीं, जब चारों ओर धुंध छाई हुई थी और ठंडी शीतल पवन मन को आह्लादित कर रही थी, तभी उस सुनहरे वातावरण के बीच एक प्रकाश सा चमकता हुआ दिखाई पड़ा, पास आने पर अनुभव हुआ, कि यह तो एक शिला पर कोई साधु अपनी साधना में लीन कुछ मंत्र अपने होठों से बुदबुदा रहा है, और एक प्रकार की विचित्र आभा सी उसके चारों ओर बिखरी हुई है, दिखने में वह बड़ा तेजस्वी एवं पराक्रमी दिखाई दे रहा था, **उन्हें देखकर तो कोई भी अपनी सुध-बुध खो बैठे, एक अद्भुत सौन्दर्य, जो आंखों को मोहित कर रहा था, वे थे एक उच्चकोटि के योगी ''स्वामी श्रेयानन्द जी''**, जिन्होंने अपने जीवन काल में अनेक दुर्लभ तांत्रिक साधनाएं सिद्ध कर रखी थीं और उन्हीं साधनाओं के बल पर ही उनका सौन्दर्य इतना अद्भुत और अद्वितीय बन सका।

उन्हीं से प्राप्त उस दिव्य साधना को यहां विवेचित किया जा रहा है, जो कि अपने-आप

में श्रेष्ठ एवं अद्वितीय साधना है, औरं जिसे सिद्ध कर साधक एक प्रकार के आकर्षण को अपने पूरे शरीर में समाहित कर लेता है।

उन्होंने बताया कि – **त्रिलोचना एक ऐसी देवी है, जिसकी देहकान्ति बाल सूर्य के समान है, और देह का वर्ण सिन्दूर के समान अरुण है, सौन्दर्य का साकार पुञ्ज है वह। इस देवी की यदि कृपा-दृष्टि किसी साधक पर हो जाती है, तो वह उसे सम्पूर्ण सौन्दर्यशाली बना देती है,** जिसे देखकर कोई भी स्तम्भित खड़ा रह जाए, फिर कौन नहीं चाहेगा ऐसी श्रेष्ठ साधना को सिद्ध करना, कौन नहीं चाहेगा, कि उसके चेहरे पर ओज न हो, तेज न हो. . . कुछ ऐसा हो, जिसे देखकर कोई भी अपनी सुध-बुध खो बैठे, और बाध्य हो जाए टकटकी लगाकर देख लेने को, उसे छू लेने को, उसे पा लेने को, उसमें समाहित हो जाने को. . . ऐसे सौन्दर्य को, ऐसे प्रभावयुक्त व्यक्तित्व को, ऐसे आकर्षण को प्राप्त करने के लिए तो सभी उत्सुक रहते हैं, और साधारण मानव ही नहीं अपितु अप्सराएं एवं गन्धर्व भी ऐसी आकर्षण युक्त देह की प्राप्ति के लिए सर्वथा लालायित रहते हैं।

. . . और त्रिलोचना ऐसी ही देवी हैं, जो अपने भक्त एवं साधक पर प्रसन्न हो उसे ऐसी देह, ऐसा व्यक्तित्व प्रदान कर देती हैं, जो दूसरों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

त्रिलोचना आकर्षण एक तांत्रोक्त प्रयोग है, जिसकी **"त्रिपुरा तंत्र"** तथा **"भूत डामर"** में विस्तृत रूप से विवेचना की गई है, जो कि अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ प्रयोग है, और जिसको सम्पन्न करने से व्यक्ति का कायाकल्प तक हो जाता है।

इस श्रेष्ठ प्रयोग को सम्पन्न करने पर निम्न लाभ साधक को प्राप्त होते ही हैं–

१. यदि किसी स्त्री का पति दूसरी स्त्री के चक्कर में हो, तो इसे सम्पन्न कर उसे अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है।

२. कैसा भी रुग्ण शरीर हो, उसे पूर्णरूप से स्वस्थ किया जा सकता है।

३. कमजोर व वृद्ध व्यक्ति भी इसे सम्पन्न कर पुनः यौवनवान बन सकता है।

४. इस प्रयोग को सम्पन्न कर किसी को भी अपने वश में किया जा सकता है।

५. इस प्रयोग द्वारा साधक सुन्दर, बलशाली, पराक्रमी और तेजस्वी व्यक्तित्व प्राप्त कर लेता है।

६. इस प्रयोग को करने से उसके मन में किसी भी प्रकार की कोई हीन भावना नहीं रह जाती है।

७. यह आत्मविश्वास को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण प्रयोग है।

८. जिस स्त्री को प्राप्त करने की चाह साधक के मन में हो, यह प्रयोग सम्पन्न कर लेने पर वह स्वतः ही आकर्षित होकर उसके समक्ष उपस्थित हो जाती है।

६. इसे सम्पन्न करने पर वह साधक जिस किसी भी व्यक्ति से चाहे अपनी बात आसानी से मनवा सकता है, और वह जो भी कहता है, लोग उसी को सही मान बैठते हैं।

१०. इसे सम्पन्न कर मनचाहा कार्य सिद्ध किया जा सकता है।

११. साधक जब इस प्रयोग को सिद्ध कर लेता है, तो उसके शरीर के चारों ओर एक प्रकार की आभा सी दिखाई देने लगती है।

१२. यह एक अद्भुत एवं गोपनीय प्रयोग है, जिसे सम्पन्न करने पर इसके परिणाम स्वतः ही साधक को अनुभव होने लगते हैं, किसी को भी वश में करने का अचूक प्रयोग है यह।

इस दिव्य साधना के प्रभाव से जब रम्भा और उर्वशी को भी आकृष्ट किया जा सकता है, तो फिर मनुष्य के आकर्षण में क्या आश्चर्य !

यह ऐसा ही श्रेष्ठ एवं आश्चर्यचकित कर देने वाला प्रयोग है, जिसे प्रत्येक साधक को सम्पन्न करना ही चाहिए, और पुरुषों की अपेक्षा यदि स्त्री इस प्रयोग को सम्पन्न कर ले, तो वह पूर्ण यौवनवान, आकर्षित एवं सम्मोहित कर देने वाला सौन्दर्य प्राप्त कर लेती है, फिर उसके सारे शरीर में यौवन का ऐसा सागर लहराने लगता है, कि उसे देखकर कोई भी पुरुष अपने-आपे में नहीं रह पाता, फिर वह एक बार भी यदि किसी को पलक उठा कर देख ले, तो वह उससे प्रभावित व आकर्षित हुए बगैर नहीं रह पाता।

इस प्रकार इस दुर्लभ साधना को कोई भी स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकता है। यह अपने-आप में ही एक अद्वितीय एवं श्रेष्ठ साधना है। यह अपने-आप में एक चमत्कारिक प्रयोग है, जिसे साधक को किसी भी **शुक्रवार** या **रविवार** के दिन सम्पन्न करना चाहिए।

साधना विधि

साधकों को चाहिए, कि वे ब्रह्म मुहूर्त में उठकर या फिर मध्य रात्रि को, इस साधना को सम्पन्न करें, और स्नान आदि से निवृत्त होकर, सफेद रंग की धोती पहिन कर तथा सूती अथवा ऊनी सफेद आसन पर उत्तराभिमुख होकर सुखासन में बैठ जाएं। फिर अपने सामने पूजागृह में **"त्रिलोचना आकर्षण यंत्र"** और **"सम्मोहन गुटिका"** को एक लकड़ी के बाजोट पर स्थापित कर दें। इसके पश्चात् साधक गुरु पूजन, यंत्र पूजन तथा सम्मोहन गुटिका का पूजन धूप, दीप, कुंकुम आदि से करें तथा पुष्प चढ़ाकर नैवेद्य आदि का भोग लगायें।

इसके पश्चात् साधक तीन बार "ॐ" का उच्चारण कर गुरु ध्यान सम्पन्न करें तथा अपनी इच्छानुसार गुरु मंत्र-जप सम्पन्न करें। इसके बाद गुरुदेव से मन ही मन साधना में पूर्णता प्राप्त करने के लिए प्रार्थना कर उनका आर्शीर्वाद ग्रहण करें, और तब **"त्रिलोचना माला"** से ११ माला निम्न मंत्र का जप सम्पन्न करें –

मंत्र-

ॐ हूं आकर्षण वशीकरणाय फट्

मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न कर पूरे परिवार में भोग वितरित करें, तथा कम-से-कम बात करें।

इस साधना को सम्पन्न करने के पश्चात् उस यंत्र, गुटिका तथा माला को किसी नदी अथवा तालाब में विसर्जित कर दें। यह विसर्जित करने की क्रिया साधना सम्पन्न करने के दूसरे दिन करें।

अत्यन्त तीव्र वशीकरण प्रयोग

यों तो तंत्र विद्या में सैकड़ों सम्मोहन प्रयोग और वशीकरण प्रयोग हैं, पर यह प्रयोग अपने-आप में अत्यन्त ही तीक्ष्ण और तुरंत प्रभाव पैदा करने वाला है, यह मुझे औघड़ कपालनाथ से ही प्राप्त हुआ था। इसके माध्यम से कठोर से कठोर हृदय वाले पुरुष या स्त्री को पूर्णरूप से सम्मोहित किया जा सकता है, और उससे जीवन भर मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

अमावस्या की रात्रि को बगीचे या घर के किसी कोने में बैठ जायं, और अपने आसन के नीचे श्मशान से लाकर थोड़ी-सी राख रख दें, आसन लाल रंग का होना चाहिए, फिर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सामने उसका चित्र रख दें, जिसे पूर्ण वशीभूत या सम्मोहित करना है।

इसके बाद उस चित्र के सामने **वशीकरण माला** से मात्र २१ माला मंत्र-जप करना है, और ऐसा करने पर आश्चर्यजनक रूप से चमत्कार देखने को मिलता है, तथा जो सर्वथा विरोधी होता है, वह भी आपके अनुकूल होकर आपके कहे अनुसार कार्य सम्पन्न करने लग जाता है।

मंत्र

ॐ ऐं ऐं अमुक वश्यमानाय मम आज्ञा परिपालय ऐं ऐं फट्।

यह प्रयोग दिखने में अत्यन्त सरल है, परन्तु इसका प्रभाव अचूक होता है, और तुरन्त ही हम जिसे सम्मोहित करना चाहें, उसे अपने वश में करने में समर्थ हो पाते हैं।

उसकी आंखों के तेज से इस्पात पिघल जाता था

विज्ञान से भी परे प्रकृति के कुछ ऐसे रहस्य हैं, जहां तक मानव पहुंचने में अक्षम रहा है। क्या ऐसा हो सकता है, कि क्षण भर के दृष्टिपात से कुछ ऐसा घटित हो जाए, जो अपने-आप में ही आश्चर्यजनक एवं अद्भुत हो, जिसे देखकर आंखें खुली की खुली रह जायें. . . ? और मैं कहता हूं, कि हां! ऐसा सम्भव है, यह एक सच्चाई है, जिसे मैंने स्वयं अपनी आंखों से देखा है, अनुभव किया है।

एक ऐसी घटना, एक ऐसा अद्भुत दृश्य है, जिसे देखकर मैं भौचक्का सा रह गया, और जो हाथ की सफाई या कोई जादू नहीं था, अपितु वैज्ञानिकों के मुंह पर एक करारा तमाचा था. . . **उन्होंने अपने नेत्रों की ज्योतिदाह को इतना अधिक उग्र किया, कि सामने रखा इस्पात भी पिघल कर द्रव हो गया।**

यह घटना कोई चमत्कार नहीं है, क्योंकि चमत्कार तो वह होता है, जो आंखों को भ्रमित करता हो, परन्तु यह तो बिलकुल सत्य है, और अपनी आंखों से देखी हुई घटना है।

चूंकि मैं शुरू से ही अध्यात्म प्रेमी रहा हूं, इसीलिए मेरा रुझान उन गोपनीय तथ्यों, उन महत्वपूर्ण रहस्यों को उजागर करने में रहा, जो आज समाज से अनभिज्ञ हैं या जो ज्ञान प्रायः लुप्त सा हो गया है। मेरा सदैव ही ऐसा चिन्तन रहा है, कि मैं समाज में उस आध्यात्मिक चेतना का विस्तार करने में सक्षम हो सकूं, जिस आध्यात्मिक शक्ति के आगे आज विज्ञान भी नतमस्तक हो गया है, और इसी चिन्तन, इसी विचार को अपने मानस में संजोये मैं जगह-जगह की यात्राएं करता रहा।

इसी यात्रा के दौरान मैंने एक सिद्ध योगी की चर्चा सुनी, जो कि एक उच्चकोटि के योगी थे, जिन्होंने आंखों के माध्यम से इस्पात को भी पिघला कर रख दिया था, और जिसे देखने दूर-दूर से लोगों की भीड़ आया करती थी। उस योगी को देखने की इच्छा मेरे मन में भी बलवती हो उठी, और इसी जिज्ञासा को मन में लिए, कि क्या ऐसा भी हो सकता है. . . मैं नैनीताल पहुंचा, जहां एक रास्ता रानी खेत की तरफ जाता है, और यहीं वह योगी हर समय एक छोटी सी पहाड़ी के अन्दर धूनी जमाये रहता था।

रानी खेत प्राकृतिक दृष्टि से अत्यन्त ही रमणीय स्थल है, जहां का प्राकृतिक सौन्दर्य देखते ही बनता था, जहां लोग दूर-दूर से गर्मियों की छुट्टियां बिताने आया करते हैं। मैं वहां कुछ दिन रहा, क्योंकि मैं उस गोपनीय एवं दुर्लभ विद्या को प्राप्त कर लेना चाहता था, जिसकी चर्चा मैंने यात्रा के दौरान किसी व्यक्ति के मुंह से सुनी थी, और जिस विद्या के बल पर वह योगी नित्य नये चमत्कार दिखाया करता था।

कई लोगों ने बताया, कि वास्तव में ही वे उड़ते हवाई जहाज को रोक देते हैं। कुछ ने बताया, कि वे उड़ते पक्षियों को जबरदस्ती उतार कर अपने पास बिठा लेते हैं, और जब चाहें उन्हें उड़ा देते हैं। कुछ ने कहा, कि वे जिसे भी अपनी उग्र दृष्टि से देख लेते हैं, वह उसी क्षण भस्म हो जाता है। मैं यह सब बातें सुनकर बड़ा ही आश्चर्यचकित था, और सोचने लगा, कि क्या आंखों में इतनी क्षमता आ सकती है? किन्तु यह सत्य ही था, जो मेरे सामने भी कई बार घटित हुआ।

देखने में तो वह योगी कोई ज्यादा बलशाली दिखाई नहीं देता था, और मुझे तो वह एक सामान्य सा मानव ही प्रतीत हो रहा था, दुबली-पतली काया, सांवला रंग, लम्बी दाड़ी, नग्न शरीर पर केवल मात्र एक मृगचर्म लपेटे हुए तथा कुछ मालाएं अपने कंठ में हर क्षण धारण किये हुए रहता था, किन्तु उसकी आंखों से हर क्षण एक विशेष प्रकार का तेज दिखाई देता रहता था, जो किसी को भी अपनी ओर आकर्षित होने के लिए बाध्य कर देता था।

मैं उस विद्या को सीखने के लिए कई दिनों तक उनकी सेवा में लगा रहा और अपने दिन-रात सेवा में एक कर दिये, एक बार भी चैन की सांस नहीं ली, मेरी सेवा से प्रसन्न हो उन्होंने एक दिन स्वयं ही उस गूढ़ विद्या का रहस्य मेरे सामने उजागर करते हुए कहा, कि "इस साधना को किसी और को मत देना, क्योंकि यह एक दुर्लभ एवं गोपनीय साधना है, जिसे अपने किसी विश्वासपात्र को ही दिया जाना चाहिए।"

और तब उन्होंने मुझे उस "हिडिम्बा साधना" का ज्ञान दिया, जिसके माध्यम से इस्पात को भी पिघलाया जा सकता है, और जो एक प्रकार की तांत्रोक्त साधना है, जिसका प्रभाव अचूक एवं तुरंत फलप्रद है।

उन्होंने बताया, कि मानव इस साधना को सम्पन्न कर अपने शत्रुओं पर आसानी से विजय प्राप्त कर सकता है, उन्हें अपने अनुकूल बना सकता है, और किसी को भी अपने वश में कर सकता है।

उन्होंने कहा – **इस "हिडिम्बा साधना" द्वारा आंखों में एक विशेष प्रकार की तीव्रता और अग्नि प्राप्त की जा सकती है, जिसके माध्यम से इस्पात तो क्या इस पृथ्वीतल की उच्चकोटि की धातु को भी पिघलाया जा सकता है, और जब नेत्रों में अग्नि स्फुलिंग आ जाता है, तो आकर्षण भी स्वतः बन जाता है, क्योंकि अग्नि किसी भी पदार्थ या प्रकृति के किसी भी तत्व को अपनी ओर खींचती है।**

यह साधना अपने-आप में ही एक महत्वपूर्ण साधना है, जिसे सिद्ध कर साधारण मानव अपनी सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक सभी प्रकार की परेशानियों एवं उलझनों से आसानी से छुटकारा पा सकता है, और यही नहीं अपितु इसके माध्यम से वह ब्रह्माण्ड में घटित घटनाओं में भी हस्तक्षेप करने में सक्षम हो सकता है।

इस साधना के द्वारा साधक को अपने जीवन में आने वाली विपत्तियों और दुर्घटनाओं का पहले से ही आभास होने लग जाता है, और वह शीघ्र ही उन पर विजय प्राप्त कर लेता है, जिससे कि उसका आगामी जीवन सुखी व समृद्ध बन जाता है, और सूर्य का पूर्ण स्वरूप उसकी आंखों में साकार हो उठता है।

इन सब बातों को सुनकर मैंने उस साधु के बताये अनुसार इस दिव्य साधना को सम्पन्न किया, और तब मुझे ज्ञात हुआ, कि यह कितनी अद्‌भुत एवं आश्चर्यजनक साधना है।

यह पूर्णतः प्रामाणिक साधना है, जो स्वयं मेरी अनुभव की हुई है, और जिसके आश्चर्यजनक एवं चमत्कारिक परिणाम भी मुझे प्राप्त हुए, जिसके आधार पर मैं यह कह सकता हूं, कि वास्तव में ही यह एक श्रेष्ठ एवं अद्वितीय साधना है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति क्षण भर के दृष्टिपात से ही अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम हो सकता है. . . और मैंने ऐसा किया भी।

मैं उस योगी को हृदय से नमन करता हूं, जिसने मुझे ऐसी गोपनीय साधना के बारे में विशेष जानकारी प्रदान की, और जिसके माध्यम से मैं उस दिव्य एवं अद्‌भुत साधना को सिद्ध कर अपने जीवन में विजयी हो सका।

वास्तव में हिडिम्बा साधना अपने-आप में एक उच्चकोटि की साधना है, जिसके माध्यम से शत्रुओं पर विजय प्राप्त ही नहीं कर सकते, वरन् किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर, उसे जब तक चाहें अपने वश में कर मनचाहा कार्य सम्पन्न करवा सकते हैं।

यह तंत्र की एक बेजोड़ साधना है, जिसे तिब्बती लामा **"बोंग चू"** ने भी सम्पन्न

किया, और इसे सम्पन्न कर उन्होंने लोहे को पिघला कर द्रव कर दिया था। आज भी रानी खेत में २४ किलोमीटर दूर उसी पहाड़ी के नीचे वे योगी विराजमान हैं, जिनसे मुझे यह अद्वितीय साधना प्राप्त हुई, और आज भी लोग उनके दर्शनों के लिए वहां जाते हैं, तथा उनके दर्शन कर अपने-आप को धन्य समझते हैं।

साधना विधि

किसी भी गुरुवार की रात्रि को ६ बजे के बाद इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है। सर्वप्रथम साधकों को चाहिए, कि वे स्नान आदि कर पीली या सफेद किसी भी रंग की धोती धारण कर लें, उसके अतिरिक्त किसी और वस्त्र को धारण करने की आवश्यकता नहीं है।

इसके पश्चात् अपने सामने एक बाजोट रखें और उस पर सफेद रंग का एक नया वस्त्र बिछा दें, फिर **"हिडिम्बा यंत्र"** और **"गुरु यंत्र"** को उस बाजोट पर बिछे सफेद वस्त्र पर स्थापित कर दें, तथा उस यंत्र पर मौली बांध कर पांच कुंकुम की बिन्दियां लगा दें, इसके बाद पांच तेल के दीपक उस यंत्र और चित्र के आगे प्रज्वलित करें। दीपक का मुंह साधक की ओर होना चाहिए, फिर कुंकुम, अक्षत से यंत्र व चित्र का पूजन प्रारम्भ करें, साथ ही एक पुष्पमाला गुरु चित्र पर चढ़ा दें, और इसके पश्चात् उन पांचों दीपों का कुंकुम, अक्षत आदि से मंत्र उच्चारण कर पूजन सम्पन्न करें।

साधकों को चाहिए, कि वे उन पांचों दीपकों का पूजन इस प्रकार से सम्पन्न करें— पहले दीपक का पूजन करते हुए **"ॐ सूर्याय नमः"** बोलकर कुंकुम व अक्षत उस दीपक पर चढ़ायें, दूसरे दीपक का पूजन करते हुए **"ॐ तेजस नमः"** बोलें, तीसरे में **"ॐ अग्नि नमः"** बोलें, चौथे में **"ॐ मरुद्गण नमः"** और पांचवें में **"ॐ क्षं नमः"** बोलें, इस प्रकार इस पूजन को सम्पन्न करने के पीछे तात्पर्य यह है, कि वे पांचों देवता उस साधक के शरीर में समाहित हो सकें, और ये दीपक इन्हीं पाचों देवताओं के प्रतीक रूप हैं।

इस पूजन के पश्चात् साधकों को चाहिए, कि वे "हिडिम्बा यंत्र" पर त्राटक करते हुए **"हिडिम्बा माला"** से निम्न मंत्र की ५ माला मंत्र-जप करें—

मंत्र -

ॐ हूं हिडिम्बायै फट्

मंत्र-जप सम्पन्न करने के पश्चात् गुरु आरती करें और प्रसाद परिवार के सभी सदस्यों में वितरित कर माला और यंत्र को किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें, ध्यान रहे, यह माला एवं यंत्र पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं मंत्र-सिद्ध होना आवश्यक है, तभी साधक को इस साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकती है, अन्यथा नहीं।

❋

तो हजारों सुन्दरियों की धड़कन बढ़ा देता है

रूस के रासपुतिन से ऐसा कौन होगा, जो परिचित न हो, उसका व्यक्तित्व, उसका पुरुषोचित सौन्दर्य इतना भव्य था, कि उसने जिस सुन्दरी पर निगाह डाल दी, वह उस पर मर मिटी। इसका रहस्य उसके किसी धन या पद में नहीं, वरन् उसकी उन दो आंखों में छिपा था, जो कि विचित्र सी चमक और चकाचौंध से भरी हुई थीं। रासपुतिन ने अपनी आत्मकथा "ए स्टोरी माइसेल्फ" में विस्तार से वर्णित किया है, कि किस तरह हिमालय यात्रा में उसकी भेंट "स्वामी अनुस्वरानन्द जी" से हुई और वह उनसे सम्मोहन विद्या सीखकर सैकड़ों युवतियों के हृदय की धड़कन तो बना ही, साथ ही ग्यारह वर्षों तक रूस का बेताज बना रहा।

इस भारतीय विद्या के क्या-क्या उपयोग और दुरुपयोग हुए इन्हीं को खोजता यह लेख. . .

पाश्चात्य चिंतनों में इस विज्ञान के प्रति इतनी गहनता से चिंतन नहीं किया गया, जितना कि भारतीय पद्धति में। उन्होंने निष्कर्ष निकाला, कि प्रत्येक मनुष्य में एक चुम्बकीय शक्ति होती है, जो किसी में कम और किसी में ज्यादा होती है, और यह भी अनुभव किया, कि इसे बढ़ाया जा सकता है। इस तथ्य को इस बात से स्पष्ट किया जा सकता है, कि जब कोई स्त्री अपने प्रिय पुरुष को देखती है, तो उसकी आंखें झुक जाती हैं और चेहरे पर लालिमा दौड़ जाती है। इसका कारण यह होता है, कि उस क्षण विशेष में उसके अंदर एक प्रकार का विद्युत प्रवाह सा उत्पन्न होकर दौड़ जाता है।

पाश्चात्य विद्वानों में इसे जिस विद्वान् ने गम्भीरता से समझा और अपने ढंग से सूत्रबद्ध किया, उनका नाम **डॉ० एन्टन मेस्मर** है, जो स्विटजरलैंड के थे, और जिनके नाम पर पश्चात्य देशों में इसे 'मेस्मरिज्म' कहा गया। उन्होंने व्यक्ति की चुम्बकीय शक्ति की व्याख्या की, और प्रयोगों से पाया, कि यह चुम्बकीय शक्ति उस समय प्राणियों में बढ़ जाती है, जब दो प्राणी परस्पर मिलते हैं।

उन्होंने इसे "एनीमल मेग्नेटिज्म" की संज्ञा दी और बताया, कि यह पुरुषों में धनात्मक एवं स्त्रियों में ऋणात्मक होती है। इनके परस्पर मिलने से जो पूरा वृत्त बन जाता है, वह इस शक्ति का पूर्ण परिचय देता है। यह तो दैनिक जीवन में देखने को मिलता ही है, कि किसी स्त्री को देखते ही पुरुष की आंखों में एक अनोखी सी चमक आ जाती है। सारे शरीर में हल्की सी सनसनी फैल जाती है। वास्तव में होता यह है, कि वह धनात्मक चुम्बक ऋणात्मक छोर को स्पर्श करने की एक सहज प्रक्रिया में आ जाता है। यह प्रायः विरल रहने वाली शक्ति घनीभूत भी की जा सकती है।

मेस्मरिज्म

डॉ० मेस्मर ने अपने प्रयोगों और निष्कर्षों के आधार पर एक चिकित्सालय की स्थापना की, जिसकी व्यवस्था अत्यन्त रोचक थी। उन्होंने दीवारों पर चुम्बक लगा दिए, जो अगोचर होते हुए भी पूर्ण प्रभाव डालने में समर्थ थे। कमरे की व्यवस्था सुखद करके उसमें ऐसे मधुर संगीत की व्यवस्था की, जो अत्यन्त कर्ण प्रिय हो तथा इत्र की हल्की सुगन्ध से अतिरिक्त वृद्धि की।

इस कमरे में वे प्रायः असाध्य रोगियों को तन्द्रावस्था में भेज, ऐसे मानसिक विचारों की तरंगें प्रेषित करते थे, कि वे रोगी स्वस्थ हो रहे हैं। मनोरंजक बात यह है, कि वे अपने रोगियों को केवल सादा पानी ही देते थे, यद्यपि उसे भरते थे बड़ी-बड़ी बोतलों में, और उस पर जो लेबल लगाते थे, उसमें छद्म किन्तु बड़े-बड़े गूढ़ार्थ से लगने वाले नाम लिखे होते थे, जिसका रोगी के ऊपर अत्यन्त अनुकूल प्रभाव पड़ता था, और वह सोचता था, कि अवश्य

ही कोई विशिष्ट औषधि दी जा रही है। कहना न होगा, कि उनकी यह पद्धति सफल तो हुई ही, साथ ही लोकप्रिय भी हुई।

डॉ० मेस्मर ने इस प्रकार अनुभव तो भारतीय ज्ञान का ही किया, किन्तु वे उसकी चुम्बकीय व्याख्या ही कर सके, और इसी कारण एक सीमित क्षेत्र चिकित्सा विज्ञान तक ही सीमित होकर रह गए।

उनके शिष्यों में **डॉ० मॉर्क्विस** ने विशेष विकास कर यह क्षमता अर्जित की, कि वे अपनी उंगलियों के स्पर्श से उन रोगियों को एक विशेष नींद में सुला देते थे, जिनकी शल्य चिकित्सा होनी होती थी। उस युग में क्लोरोफार्म का आविष्कार न होने के कारण यह प्रयोग रोगियों के लिए जहां अपार पीड़ा से मुक्ति दिलाने वाला था, वहीं आश्चर्यजनक भी था। ऐसा उन्होंने अपनी उंगलियों के पोरुओं में चुम्बकत्व बढ़ा कर सम्भव किया।

हिप्नोटिज्म

पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने सम्मोहन विज्ञान के निरन्तर विकास के क्रम में पाया, कि यह मानसिक विकृति के रोगियों के लिए विशेष सहायक है। सन् १८४१ में **डॉ० जेम्सब्रेड** के द्वारा एक नवीन प्रयोग किया गया, और यह सिद्ध किया गया, कि व्यक्ति अपनी उंगलियों के स्पर्श से, किसी रोगी को विशेष प्रक्रियाओं से गुजार कर स्वस्थ तो कर ही सकता है, साथ ही वह स्वयं को भी रोगमुक्त कर सकता है।

उन्होंने बताया, कि किसी एक बिंदु पर या दीपक की लौ पर अपनी आंखों को स्थिर कर मस्तिष्क को विचार शून्य कर देने से धीरे-धीरे उसकी आंखों में चुम्बकीय शक्ति बढ़ने लगती है, और कुछ समय बाद वह स्वयं हिप्नोटिक नींद में से वही लाभ प्राप्त कर सकता है, जो कि उसके ऊपर प्रयोग करने से होता है। उन्होंने इस सदंर्भ में ग्रीक भाषा का शब्द **"हिप्नास"** लिया, जिसका अर्थ 'नींद' होता है।

डॉ० ब्रेड के विचारों को पूरे यूरोप में सम्मानित किया गया है, तब से मेस्मरिज्म का नाम बदल कर **"हिप्नोटिज्म"** हो गया जो आज तक प्रचलित है।

वर्तमान में अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक **इयान ऑर्थर** ने यह स्पष्ट किया है, कि प्रत्येक मनुष्य के शरीर में तीन प्रकार की शक्तियां होती हैं— शारीरिक शक्ति, भौतिक शक्ति और मनःशक्ति। सम्मोहन भी मनःशक्ति का ही तो एक रूप है। जापान के प्रसिद्ध वैज्ञानिक **डॉ० हिरोसीमोतोयामा** ने अपनी पुस्तक **"सिक्स्थ सैंस"** में बताया है, कि मनःशक्ति की एकाग्रता के माध्यम से दूसरे के मन में स्थित विचारों को पढ़ा जा सकता है, और यदि व्यक्ति अपने समस्त चक्रों को जाग्रत कर ले, तो ऐसी अतीन्द्रिय शक्ति, जिसे **'अल्फा तरंगें'** कहते हैं, जाग्रत हो जाती है, जिसके माध्यम से व्यक्ति सैकड़ों मील दूर बैठे व्यक्ति को देख सकता है, उसके

मन की गोपनीय बातों को जान सकता है, उसे मनचाहा आदेश देकर सुधारा जा सकता है या इसी तरह के अन्य कार्य कर सकता है।

यदि हम उपरोक्त सिद्धान्तों की खोज भारतीय पक्ष से जोड़ कर करें, तो पायेंग, कि निष्पक्षतः ये भारतीय विचार ही हैं, जो उनके सामाजिक परिप्रेक्ष्य व जीवन शैली से जुड़ कर परिवर्तित हो लोकप्रिय हुए। आज आवश्यकता इस बात की है, कि हम अपने विविध ज्ञान-विज्ञान के पक्षों को, जो तेजी से लुप्त हो रहे हैं, और जिन्हें विदेशी ललक से अपना रहे हैं, उसके प्रति हृदय में रुचि जाग्रत करें और समय रहते उन्हें संजो सकें, अन्यथा वर्षों बाद जब हमारा ही मूल ज्ञान उनके द्वारा पुनर्पादित किया जाएगा, तो उसका स्वरूप उनकी जीवन शैली के अनुसार परिवर्तित और कदाचित् विकृत होगा। कम-से-कम उसमें वह व्यापकता, वह विशिष्टता, वह गहनता और सबसे बड़ी बात मानव के प्रति आत्मीयता, जो हमारे देश की विशिष्टता है, शायद न हो।

❋

आप भी अपनी आंखों में अग्नि भर सकते हैं

यह तो सर्वविदित है, कि अग्नि प्रत्येक पदार्थ को अपनी ओर खींचती है, और यही अग्नि तत्व या अग्नि स्फुलिंग जब व्यक्ति के चक्षु-गोलकों में उतर आता है, तो वह संसार में चेतना तो क्या, जड़ पदार्थ तक को अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ हो जाता है।

यह कोई दुर्लभ क्रिया नहीं है, व्यक्ति कुछ दिनों के नियमित अभ्यास एवं साधना से इसमें सफल हो सकता है। इस हेतु उसे **"अर्हत यंत्र"** पर त्राटक करते हुए नित्य प्रति अपने जीवन का एक विशिष्ट समय प्रदान करना ही होगा। यह साधना मूलतः सूर्य तत्व की ही साधना है, अतः आप प्रातः सूर्योदय के समय इस क्रिया को सम्पन्न करें, तो उचित रहेगा। इस मंत्र का नित्य ११ माला जप **रक्त स्फटिक माला** से करें –

मंत्र -

।। ॐ ह्रीं ह्री सूर्याय नमः ।।

अभी तक के जीवन में हमने जो कुछ सीखा, वह तो दूसरों से सम्बन्धित था, और कहा जा सकता है, कि फिर भी सहज था, कठिन तो होता है तब, जब हम अपने को ही संजोने का प्रयास करते हैं।

दूसरों पर प्रभाव डालकर हम अपना जीवन जितना सुगम बना सकते हैं, उससे कहीं अधिक तो अपने को सम्मोहित करके ही कर सकते हैं, तो क्यों न हम अपने से ही प्रारम्भ करें. . .

स्व सम्मोहन कोई अलग प्रक्रिया नहीं है। वास्तव में अलग तो कहीं कुछ होता ही नहीं, और विशेषकर भारतीय ज्ञान-विज्ञान के संदर्भ में। जब हम एक बार परस्पर सम्बन्ध समझ जाते हैं, तो कोई जटिलता नहीं रहती है, और सभी कुछ सहज हो उठता है। स्व सम्मोहन भी यद्यपि कहने को एक अलग विषय है, किन्तु क्या स्वयं को सम्मोहित कर हम सम्मोहन के क्षेत्र में और अधिक सफल नहीं हो जायेंगे।

स्व सम्मोहन का सीधा सा अर्थ है, कि हम अपने व्यक्तित्व को और निखारें, अपने को व्यर्थ की चिंताओं से मुक्त करें, अपने अन्दर जो हीनता की भावना है, उसे दूर करें, अपनी मानसिक गुत्थियों को, जिन्हें हम गोपनीय रखना चाहते हों, उन्हें स्वयं सुलझायें। उसी तरह

अनेक दुर्व्यसन, जिन्हें हम चाह कर भी छोड़ नहीं पाते और जानते हैं, कि वे हमारा शरीर खोखला ही कर रहे हैं, उन्हें छोड़ने का उपाय स्व सम्मोहन ही है। यह सम्पूर्ण व विशुद्ध रूप से अपने-आप का निर्माण करने की कला है।

इस पद्धति की खोज, इसका मूलतः उपयोग तो आत्म-साक्षात्कार से सम्बन्धित था, अपने अंदर की यात्रा से सम्बन्धित था। व्यक्ति अपने अंदर जाकर अपने को परखता था, और अपनी न्यूनताओं को दूर करता था, जिससे कि वह पूर्ण शुद्ध, निर्मल होकर उस आनन्द में लीन हो सके, जिसे 'ब्रह्मानन्द' की संज्ञा दी गई है। इसी का शोधित रूप वर्तमान में, हम अपने दैनिक जीवन में अपना कर विविध लाभ प्राप्त कर सकते हैं, अनिद्रा जैसी असाध्य व्याधियों से छुटकारा पा सकते हैं। हम में जो आत्मविश्वास की न्यूनता होती है, अपनी बातों को सामने रखने में प्रायः जो हिचकिचाहट होती है, अधिकारी के सामने हतोत्साहित हो जाने की जो स्थिति होती है, ऐसी अनेक बातों से हम सफलता पूर्वक सदैव के लिए छुटकारा पा सकते हैं।

यह मात्र वर्णन का विषय नहीं है। यदि हम केवल किसी व्यंजन के स्वाद के बारे में सुन लें, तो पूर्ण तृप्ति नहीं मिल सकती, उसके लिए तो सम्पूर्ण प्रक्रिया अपना कर ही उसका स्वाद मिल सकता है। स्व सम्मोहन हेतु भी कुछ निश्चित प्रक्रियाओं को अपनाना पड़ता है। इनमें कोई उबाऊपन नहीं है, और न ही शरीर को मोड़ना-तोड़ना है, केवल कुछ दिन दृढ़ता पूर्वक कुछ क्रियाएं एक नियमबद्ध ढंग से करने की आवश्यकता है, फिर तो ये उसी प्रकार आपके लिए सहज हो उठेंगी, जैसे कि प्रतिदिन आप सुबह उठ कर टूथपेस्ट करते हैं या स्नान करते हैं।

प्रथम विधि

इस हेतु आप प्रातः या सायं जब भी उचित अवसर पायें, अपने सारे कार्यों से निवृत्त हो बिना किसी हड़बड़ाहट के सहज भाव युक्त हो सकें, तब शवासन में लेट जाएं, और कल्पना करें, कि आपको निद्रा युक्त होने के, शांत होने के संकेत मिल रहे हैं। आप इस हेतु किसी ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें, जिससे आप सहज आत्मीय हों या जिसकी वरिष्ठता का आपके हृदय में विशेष स्थान हो, कि वह आपको ऐसा निर्देश दे रहा है। ऐसा करने से प्रभाव द्विगुणित हो उठेगा और आप पाएंगें, कि आप गहन निद्रा में जा रहे हैं।

इस अवस्था में यह चिंता करने की आवश्यकता नहीं, कि मैं देर तक सोता रह गया, तो क्या होगा या ऑफिस के लिए लेट हो गया, तो क्या होगा? यह तो सम्मोहन निद्रा होगी, जिससे आप सहज ही एक घंटे बाद जग जायेंगे। आपको बस इतने ही समय को समायोजित करना होगा, और अपने-आप के लिए इतना समय निकालना कोई महंगा सौदा नहीं, आपको अपने तनाव से मुक्त होने की यह कोई विशेष कीमत नहीं।

द्वितीय विधि

यह विधि वास्तव में उपरोक्त विधि का परिष्कृत रूप है, क्योंकि इसमें आप किसी काल्पनिक माध्यम की अपेक्षा नहीं रखते वरन् स्वयं अपने को निर्देशित करते हैं। यह करना आपके लिए आवश्यक है, क्योंकि इससे जहां एक ओर आपका मन एकाग्र होता है, वहीं आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इस प्रकार से आप अपने को निर्देश दीजिए, कि आपकी पलकें भारी हो रही हैं, और आपके निर्देश से आपको नींद आ रही है। कुछ दिनों के अभ्यास के बाद आप इस प्रयास में सफल भी होने लगेंगे। ऐसे व्यक्तियों को जो अनिद्रा रोग के मरीज हों, उनके लिए तो यह एक विशेष उपचार होगा। यह प्रयोग रात्रि में करना अधिक उपयुक्त रहता है।

तृतीय विधि

यह विधि तृतीय विधि है, और पहली बार पढ़ने पर आपको हंसी भी आ सकती है। इस विधि में मात्र इतना करना होता है, कि अपने थके मस्तिष्क में कुछ और विचार जोड़ दीजिए। ध्यान रखिये, कि विचार कम न होने पायें! इसका प्रभाव यह होगा, कि विचारों के घात-प्रत्याघात से आपका मस्तिष्क शीघ्र ही थक जायेगा और फलस्वरूप स्वाभाविक प्रतिक्रिया होगी, कि वह सोने का प्रयत्न करेगा। यह भी मन को विचार शून्य करने की एक प्रक्रिया है, क्योंकि कुछ काल बाद आपका अन्तर्मन इतना थक जायेगा, कि वह विचारों का संग्रहण बंद ही कर देगा।

चतुर्थ विधि

यद्यपि यह कोई नवीन विधि नहीं है, और पूर्ववर्ती विधियों का ही एक परिमार्जित स्वरूप है, किन्तु इस प्रकार से आप स्व सम्मोहन के क्षेत्र में और भी परिपक्वता से प्रविष्ट हो जायेंगे। इस हेतु यदि सम्भव हो, तो सांयकाल जब वातावरण लयबद्ध होता है, तब कुछ अवधि के लिए शीर्षासन कीजिए। प्रारम्भ में शीर्षासन कठिन लगने की दशा में व्यक्ति सर्वांगासन एवं उसके पूरक के रूप में मत्स्यासन भी कर सकता है। आप इस रूप में विचार कर सकते हैं, कि आप आकाश के समान विस्तृत एवं शुभ्र हो उठे हैं।

इस विशालता को ग्रहण करने के बाद आप स्वयं को भावना दें, कि आप इस आकाश की सुखद विशालता में धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं, और लहरों पर तैरते हुए उसी प्रकार विचरण कर रहे हैं, मानो आकाश में तैरने वाला बादल का कोई टुकड़ा हो। आप इस कल्पना लोक में खोकर धीरे-धीरे सम्मोहन निद्रा में भी जा सकते हैं। आपको नींद आने की दशा में अपने अन्तर्मन में भावना देनी है, कि मैं एक या आधे घंटे बाद जग जाऊं और इसके बाद अन्तर्मन को भी विस्मृत कर देना है। यह स्व सम्मोहन की एक विद्या तो है ही, साथ ही विशेष आनन्द

पाने की प्रक्रिया भी है।

उपरोक्त नियमों में से कोई एक विधि चुनकर अथवा क्रम से एक के बाद एक विधि अपनाकर हम स्व सम्मोहन के क्षेत्र में भी सफल हो सकते हैं। इसका सर्वाधिक लाभ यह होता है, कि हमारे थके हुए स्नायु विश्राम पाते हैं, जिससे चेहरे पर ओज आ जाता है, और असमय पड़ती झुर्रियां, आंखों के नीचे स्याहपन आदि समाप्त हो जाता है, व्यक्ति उमंग और उत्साह से भर उठता है, तथा वह जीवन का नवीन ढंग से रसास्वादन करने में अपने को समर्थ पाता है।

❋

प्रत्यंगिरा वशीकरण सिद्धि

यह दो दिन की साधना है और सरल है। यह साधना सप्ताह के किसी भी **गुरुवार** को प्रारम्भ की जा सकती है।

साधक सफेद आसन पर उत्तर की ओर मुख करके बैठ जायं और सामने प्राण-प्रतिष्ठित **"प्रत्यंगिरा वशीकरण यंत्र"** स्थापित कर दें, जो अनंग क्रिया से सिद्ध और रति साधना से सिक्त हो, फिर उसके सामने तेल का दीपक लगा कर ग्यारह माला मंत्र-जप करें, इसमें **"रुद्राक्ष माला"** का प्रयोग किया जाता है।

मंत्र

ॐ ऐं ऐं श्रीं ह्रीं वश्यमानाय सम्मोहनाय ह्रीं ह्रीं ऐं श्रीं फट्।।

जब मंत्र और तीन दिन की साधना सिद्ध हो जाय, तो अगले चालीस दिनों तक वह माला अपने गले में धारण किये रहें, यद्यपि इसका प्रयोग तीन दिन की साधना सम्पन्न होते ही किया जा सकता है।

जब किसी पर प्रयोग करना हो, तो उस पुरुष या स्त्री का बिम्ब अपनी आंखों के सामने लायें या उसका फोटो अथवा चित्र हो, तो उसे अपने सामने रखें, और फिर भावना दें, कि यह चौबीस घण्टों के भीतर-भीतर पूर्णतः मेरे वश में हो जाय, और उस चित्र या बिम्ब के सामने ही ११ माला मंत्र-जप करें, पर हर मंत्र में बाद में और पहले इस शब्द को अवश्य दोहरायें, कि "अमुक" व्यक्ति मेरे वश में हो जाय और जीवनभर वश में बना रहे, इसे 'सम्पुटित प्रयोग' कहा जाता है, अर्थात् मंत्र के पहले और मंत्र के बाद उपरोक्त पंक्ति को दोहराना है। इस प्रकार मात्र एक रात्रि में ही ११ माला अर्थात् ११०० मंत्र-जप पूरा कर लें, ऐसा करते ही जिस पर वशीकरण प्रयोग किया जाता है, वह सिद्ध होता ही है, और पिछले दस हजार वर्षों में भी यह प्रयोग असफल नहीं हुआ है।

सम्मोहन विज्ञान के विभिन्न पक्षों, उसके क्रियात्मक पहलुओं को समझने के बाद उनका संक्षिप्त विवेचन पुनः करना आवश्यक ही है। सम्पूर्ण ज्ञान अर्जित कर लेने के बाद भी मन में कुछ शंकाएं और जिज्ञासाएं बच ही जाती हैं, यह स्वाभाविक भी है। जिस किसी ने भी सम्पूर्णता से किसी ज्ञान को समझने का प्रयास किया है, वह जिज्ञासु होगा ही।

सम्मोहन विज्ञान चूंकि भारत के मध्यवर्ती काल में कुछ ऐसे परिवारों की सम्पत्ति बन गया, जो स्वस्थ चिन्तनों से युक्त नहीं थे, अतः समाज में इसकी धारणा भी अच्छी नहीं रह गयी। इस विषय में व्यक्ति की पहली शंका यही होती है, कि क्या इसमें कुछ हानिकारक तो नहीं? इसका सीधा सा उत्तर तो यही है, कि क्या सड़क पर चलना भयप्रद नहीं!

फिर भी यह निश्चित जानिए, कि सम्मोहन विज्ञान में कुछ भी हानिकारक या भयप्रद नहीं है, बस कुछ बातों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है, जैसे—आप माध्यम को सम्मोहन की तीसरी अवस्था तक तब ही ले जाइए, जब आप सिद्धहस्त हो जाएं। बहुधा होता यह है, कि व्यक्ति की सम्मोहन निद्रा गहरी हो जाने पर उसे स्वाभाविक नींद आ जाती है, और वह स्वाभाविक निद्रा पूरी कर सहज भाव से उठ जाता है, फिर भी गहन सम्मोहन निद्रा तभी देनी चाहिए, जब आप जगाने के बारे में पूर्ण सिद्धहस्त हो जाएं।

एक व्यक्ति को सम्मोहन की दशा में, बार-बार भेजने में भी कोई हानि नहीं, किन्तु उससे सम्मोहन अवस्था में ऐसा कोई कार्य नहीं कराना चाहिए, जो कि आगे चल कर वह

समाज में उपहास का विषय बने। व्यक्ति के अन्तर्मन से खेलने का प्रयास नहीं करना चाहिए, बाह्य मन को असावधानी पूर्वक सम्मोहन निद्रा में भेजने से उसके व्यक्तित्व का संतुलन गड़बड़ा सकता है, इस तथ्य का ध्यान रखें।

सम्मोहन में तो आवश्यक है, कि आपका माध्यम सामान्य बुद्धि का अवश्य हो, मूर्ख अथवा पागल सम्मोहित नहीं किए जा सकते। एक दृढ़ चित्त व्यक्ति अधिक कुशलता से सम्मोहन कर्ता के निर्देशों को ग्रहण कर सकता है, क्योंकि उसके अन्दर मस्तिष्क को एकाग्र करने की क्षमता होती है।

सम्मोहन कर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण सूत्र यह है, कि वह सदैव अपने को सम्मोहन युक्त अवस्था में रखने की कला जानता हो, आपके चेहरे पर कुछ ऐसी कशिश, कुछ ऐसा भोलापन, कुछ ऐसी गहनता और सब कुछ परस्पर मिला-जुला हुआ होना चाहिए, कि आपसे कोई मिलते ही आधे से अधिक सम्मोहित तो स्वतः हो उठे। हमारे शास्त्रों में ऐसी कई विधियां हैं, जिनके माध्यम से व्यक्ति सदैव अपने को पूर्ण सम्मोहन युक्त एवं चुम्बकत्व युक्त बनाए रख सकता है।

स्व सम्मोहन की विधि भी एक उपयोगी कला है।

समूह सम्मोहन

सम्मोहन कर्ता को सम्मोहन की वैयक्तिक सफलता के बाद और आगे बढ़कर समूह सम्मोहन का अभ्यास करना चाहिए। **'समूह सम्मोहन'** कर व्यक्ति एक कुशल नेता, प्रचारक या अभिनय के क्षेत्र में सफल हो सकता। 'समूह सम्मोहन' का आधार व्यक्ति की दृढ़-इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है। उसकी दृढ़-इच्छा शक्ति से उसके मानस की प्रबल तरंगें पूरे-पूरे समूह को अपने अनुरूप देखने या अपने अनुरूप सुनने को बाध्य कर सकती हैं। लगभग सभी श्रेष्ठ जादूगर अपने प्रदर्शनों में जिन घटनाओं को दिखाकर चमत्कृत कर देते हैं, उसके मूल में 'समूह सम्मोहन' का ही रहस्य छिपा होता है।

ऐसे व्यक्ति जिन्हें सभाओं आदि में निरन्तर जाना पड़ता हो या व्यक्तियों के समूह से निरन्तर मिलना पड़ता हो, उनके लिए समूह सम्मोहन का अभ्यास विशेष उपयोगी रहता है।

"समूह सम्मोहन" के इन व्यावहारिक और मनोरंजनात्मक उपयोगों के अतिरिक्त रचनात्मक उपयोग भी सम्भव हैं। उदाहरण के लिए हिंसा पर उतारू क्रुद्ध समूह को इसके माध्यम से रोका जा सकता है या सभाओं में पूरे के पूरे समूह को एक साथ सम्मोहित कर परिवार नियोजन के विषय में शिक्षित किया जा सकता है। इस विषय में जो शोध चल रही है, उनके शीघ्र ही सुखद परिणाम मिलने की आशा है।

पोस्ट हिप्नोटिज्म

इन्हीं शोधों के प्रक्रम में **'पोस्ट हिप्नोटिज्म'** नामक एक पृथक शाखा बन चुकी है, जिसमें व्यक्ति को सम्मोहन की अवस्था में जो निर्देश दिए जाते हैं, उसका प्रभाव स्थायी होता है। सम्मोहन समाप्त करने के बाद भी व्यक्ति आज्ञा का पालन करता रहता है। कदाचित् पाठकों को भ्रम हो सकता है, कि सम्मोहन द्वारा शायद व्यक्ति से बलात् रूप से कार्य लिए जाते हैं, किन्तु वास्तविकता तो यह है, कि सम्मोहन के द्वारा व्यक्ति के अन्तर्मन की सुप्त ग्रन्थियों को इस प्रकार से स्पर्शित व आघातित कर दिया जाता है, कि वह अपनी पूर्ण क्षमता से सक्रिय हो उठती हैं।

फलस्वरूप सम्मोहित व्यक्ति तन्द्रा में नहीं, अपितु अपनी क्षमताओं के पूर्ण उपयोग से कार्य करने लगता है, इससे कोई हानि होने की सम्भावना तो बनती ही नहीं। 'पोस्ट हिप्नोटिज्म' का सहारा लेकर व्यक्ति की अनेक दुर्बलताएं, नशे आदि की आदतें छुड़ायी जा सकती हैं। उसे निर्देश दिया जा सकता है, कि भविष्य में तुम जब-जब सिगरेट पीओगे, तो तुम्हें अरुचिकर लगेगी या शराब की गन्ध से भविष्य में तुम्हें उबकाई आ जाएगी।

कई बार व्यक्तियों को विचित्र सी आदतें पड़ जाती हैं, जैसे नाखून चबाना, नींद में बड़बड़ाना, उंगलियां चटकाना आदि, जो उनके व्यक्तित्व में हल्कापन ले आती हैं, इसका सफल उपचार 'पोस्ट हिप्नोटिज्म' के माध्यम से ही सम्भव है।

श्रद्धा

विदेशों में डॉक्टर इसका उपयोग कर अपने रोगी को निर्देशित कर देते हैं, कि वह उनकी अनुपस्थिति में भी कैसे रहेगा, दवाइयां कब-कब खाएगा, भोजन आदि कैसे लेगा? एक प्रकार से उसके अन्दर सब टेप सा कर दिया जाता है, जो स्वतः ही बज कर निर्देशित करता रहता है।

प्रत्येक साधना के मूल में श्रद्धा ही सफलता की कुंजी है। यह श्रद्धा हमें अपनी साधना के प्रति, अपने गुरुदेव के प्रति और स्वयं के प्रति होनी चाहिए, इस प्रकार से एक पूरा चक्र बन जाता है। जाने-अनजाने में हमारे शरीर और मस्तिष्क में श्रद्धा से ऐसे तन्तु जुड़ जाते हैं, जो साधना में सिद्धि का आधार बन जाते हैं।

साधना क्या है? शरीर का एक विकास ही तो! सम्मोहन के प्रति भी यही बात पूर्णरूप से व्यवहृत होती है, यदि हम इस भावना से सम्मोहन ज्ञान-प्राप्ति में हों, कि यह सब प्रभु की ही अनन्त शक्तियां हैं, जिसका बस एक अंश मैं अपने शरीर में जाग्रत कर रहा हूं, तो आप पाएंगे, कि मार्ग बहुत सहज हो उठा है। घमण्ड हमारी आन्तरिकता को भंग कर देता है। हमारी एकाग्रता भंग न हो और सदैव मन में विनम्र भाव बना रहे, इसके लिए आवश्यक है, कि आपका

अवश्य ही कोई इष्ट हो, जिनसे आप-अपने सब कर्म अर्पित कर सहज बन सकें। होता तो यह है, कि हम सहज भाव धारण करने के नाम पर और अधिक ईर्ष्यालु और अधिक घमण्डी बन बैठे हैं। हमारे पूर्वजों ने अपने इष्ट की मानस पूजा का विधान रचा था, यद्यपि वह उनका एकान्तिक चिन्तन था और उनकी भावभूमि अलग थी, किन्तु उसी पद्धति को हम अपने जीवन में अपनाएं तो पाएंगे, कि हमारा मन-मस्तिष्क शान्त और एकाग्र हो उठा है।

इस मानस पूजन में कोई बाह्य सामग्री आवश्यक नहीं होती, एकमात्र अपने इष्ट का बिम्ब अपनी आंखों के सामने रख उन्हें हृदय पूर्वक पुष्प, सुगन्ध, नैवेद्य इत्यादि उपचार समर्पित करने होते हैं, और कालान्तर में यही हमारी एकाग्रता को पुष्ट कर जाता है।

अन्त में इतना ही कहना पर्याप्त होगा, कि सम्मोहन विज्ञान, आधुनिक विज्ञान के मापदन्डों के अनुसार भी एक निश्चित विज्ञान है। व्यक्ति थोड़े से प्रयास से कुछ निश्चित प्रक्रियाएं अपनाकर सफलता प्राप्त कर सकता है, यह कोई ईश्वर प्रदत्त गुण नहीं है। कोई भी व्यक्ति क्रमशः विकास कर कुशल सम्मोहन कर्ता बन सकता है, केवल उसे प्रयासों में सघनता लानी होगी और भारतीय साधना-विज्ञान के जो नियम हैं, उनकी परिपालना करनी होगी।

❋

आत्मविश्वास वृद्धि प्रयोग

यदि आप में आत्मविश्वास है, तो आप जिस कार्य को करने जाते हैं, वह आधा कार्य तो ऐसे ही सम्पन्न हो जाता है। अपने मन के हीन भाव को दूर करने हेतु यह एक सिद्ध प्रयोग है। आत्मविश्वास में शरीर गौण है, और जो भावाभिव्यक्ति होती है, वही महत्वपूर्ण है।

इसके लिए **रविवार** के दिन साधक प्रातः एक तांबे के लोटे में जल भर लें और उस जल में **"सिद्ध कुलाल चक्र"** डाल दें, तथा सूर्य के सामने मुंह कर इस जल का तीन बार अर्घ्य दें, फिर दाएं हाथ में कुलाल चक्र लेकर मुट्ठी बन्द कर लें, और सात बार इस जल गिरे स्थान की प्रदक्षिणा करें, तथा केवल दूध का प्रसाद लें, और इस कुलाल चक्र को सफेद रेशमी वस्त्र में लपेट कर अपनी जेब में रख दें। जब भी कोई महत्वपूर्ण कार्य हो, इसे अपनी जेब में रखकर घर से बाहर निकलें, तो आश्चर्यजनक परिणाम आप स्वयं अनुभव करेंगे।

अनुपमा नेपाल की अद्वितीय सौन्दर्यवती

वशीकरण विद्या भारतवर्ष की प्राचीन और महत्वपूर्ण विद्या रही है, यदि हम इतिहास के पन्ने टटोलें, तो वैदिक काल में भी ऋषियों व मुनियों ने वशीकरण का प्रयोग किया है, और मनचाही वस्तु प्राप्त की है।

पुराणों में भी इस बात के सैकड़ों उदाहरण मिलते हैं, कि उन श्रेष्ठ योगियों, सिद्धों, राजाओं और व्यक्तियों ने वशीकरण का प्रयोग तीन कारणों से किया है—

(१) शत्रु को अपने वश में करके पूर्णरूप से पराजित कर देना।

(२) अपने-आप को वशीकरण प्रयोग से सिद्ध करके अत्यन्त सौन्दर्यमय बना लेना, जिससे कि देखने वाला उस पर पूर्णतः सम्मोहित हो जाए।

(३) किसी भी वयस्क सुंदरी पर वशीकरण कर उसका हृदय जीत लेना और अपने प्रणय सूत्र को आगे बढ़ाना।

और यह कोई मर्यादा के विरुद्ध बात नहीं है, हां! यदि किसी को झूठा आश्वासन दिया जाय, सब्ज बाग दिखाया जाय, लालच दिया जाय, पैसों के बल पर कुकृत्य किया जाय या मजबूरी का फायदा उठाया जाय, तो यह सब गलत है, अन्यथा यह पुरुष और स्त्री की एक स्वाभाविक आंतरिक परिवर्तन प्रक्रिया है, कि वे एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हों, प्रणय निवेदन करें, और यदि यह प्रणय बढ़ता है, तो विवाह के लिए प्रस्ताव रखें।

प्रश्न तो यह उठता है, कि क्या किसी पर वशीकरण प्रयोग करना उचित है? और मैं प्रश्न करता हूं, कि क्या किसी का दिल जीतना अनुचित है?

किसी को पाने के लिए समाजोचित और न्यायोचित कुछ भी कार्य करके दिल जीतने की प्रक्रिया को शास्त्र सम्मत माना गया है। हम यदि किसी का प्यार पाना चाहते हैं, तो उससे मधुर बात कहना, उसका दिल जीतना या उसके दिल में अपने-आप को स्थापित करना कोई गलत प्रक्रिया नहीं, जिस प्रकार से हम मधुर और उसको प्रिय लगने वाली बात कह कर उसका दिल जीतने की कोशिश करते हैं, उसी प्रकार वशीकरण भी दूसरों के हृदय को प्रिय लगने की प्रक्रिया से सम्बन्धित मंत्र है, इसलिए वशीकरण प्रयोग किया जा सकता है। यह अलग बात है, कि यदि आप में मानवता है, यदि आप में उच्चता और श्रेष्ठता है, तो आप उससे कह दें, कि मैंने तुम्हें पाने के लिए ऐसे प्रयोग भी किये हैं।

खैर, मैं बात कर रहा था वशीकरण की, मुझे प्रारम्भ से ही यह धुन सवार थी, कि मैं अपने जीवन को एक मामूली सा जीवन नहीं रहने दूंगा, समाज में अपना सम्माननीय स्थान बनाऊंगा, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता प्राप्त करूंगा और श्रेष्ठ सौन्दर्यवती से विवाह कर अत्यन्त सुंदर बालकों को जन्म दूंगा। मैं यह भी समझता था, कि मेरे जैसे निर्धन और गरीब घर का बालक होने के कारण यह सब कुछ शायद संभव नहीं है, बहुत जोर लगाऊंगा, तो किसी मामूली सी लड़की से मेरी शादी हो जाएगी, यों मैंने बी० ए०, एम० ए० कर भी लिया, तो किसी दफ्तर में कलम घसीटता मर जाऊंगा और मेरे जीवन के सारे सपने चकनाचूर हो जाएंगे, इसके लिए मुझे आवश्यकता थी एक योग्य और समर्थ गुरु की, जो अपने-आप में तेजस्वी हो, समस्त विद्याओं का जानकार हो और उनके सान्निध्य में रह कर, साधना सम्पन्न कर जीवन की उन श्रेष्ठताओं को प्राप्त करूंगा, जिससे जीवन संवर सकता है, सज सकता है, पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

मैं जब बीस वर्ष का था, तो अपना घरबार छोड़ दिया और भारत छोड़ कर नेपाल की ओर चला गया। पहले छः महीने मैं नेपाल के आस-पास भटकता ही रहा, पशुपतिनाथ जी के मंदिर को देखा, वाग्मती नदी में स्नान किया, बूढ़े नीलकण्ठ को जल चढ़ाया और सुदूर पहाड़ों में रहने वाली दक्षिण काली जी के मंदिर में जा कर काली की पूजा-अर्चना, साधना सम्पन्न की।

– और उन्हीं दिनों नेपाल के पास में ही एक योगी से मेरी भेंट हो गई, जिसको देखते ही मेरे अवचेतन मन ने कहा, यह जरूर जानकार व्यक्ति है, इसके पास पाखण्ड नहीं है, ढोंग नहीं है, दिखावा और प्रदर्शन नहीं है, मगर इसके पास ऐसा अवश्य है, जो अपने-आप में अद्वितीय हो सकता है। मैं उसके साथ हो लिया, वह नेपाल में काण्ठमाडू से बाहर बूढ़ा नीलकण्ठ से आगे बिरचीन गांव के पास जो पहाड़ी है, उसी के पास एक झोपड़ी में निवास

करता था। मैंने लगभग महीने भर तक उसकी सेवा की और ज्यों-ज्यों मैं उसके सम्पर्क में आता गया त्यों-त्यों मुझे अनुभव होता गया, कि जरूर यह अपने-आप में सिद्ध पुरुष है, और इससे कुछ महत्वपूर्ण विद्याएं प्राप्त हो सकती हैं।

इस दो महीने की अवधि में मेरी सेवा से वह काफी प्रसन्न हुआ, और पूछा "कहां के रहने वाले हो?" आश्चर्य की बात तो यह है, कि पिछले दो महीनों में उसने मेरे बारे में, मेरे निवास स्थान के बारे में, मेरे परिवार के बारे में एक भी प्रश्न नहीं पूछा था, आज जब पहली बार उसने प्रश्न किया, तो मैंने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, "मैं राजस्थान में जयपुर जिले के घरूडा गांव का रहने वाला हूं, और साधनाओं के द्वारा ही अपने जीवन को पूर्णता देने के प्रयास में भटक रहा हूं।"

स्वामी जी ने एक क्षण मेरी आंखों में झांका और कहा, "मैं तुम्हें अवश्य ही कुछ विद्याएं सिखाऊंगा, क्योंकि तुम राजस्थान के रहने वाले हो, और राजस्थान में ही जोधपुर में मेरे पूज्य गुरुदेव का निवास स्थान है, तुम्हें पा कर मुझे ऐसा ही लगता है, जैसे मैं अपने पूज्य गुरुदेव के चरणों में बैठ गया हूं।"

मैंने श्रीमाली जी का नाम सुन रखा था, परंतु मैं यह भी जानता था, कि उन तक पहुंचना अत्यधिक कठिन है, इसलिए मैंने नेपाल का रास्ता पकड़ा था। मैंने पूछा, "आप श्रीमाली जी के बारे में तो कुछ नहीं कह रहे हैं?"

उन्होंने साष्टांग दण्डवत करते हुए भक्ति-भाव से उन्हें प्रणाम किया और कहा, "तुम मूर्ख हो, विशाल समुद्र को छोड़ कर एक छोटी सी तलैया के पास प्यास बुझाने आए हो, तुम्हें चाहिए था, कि तुम वहीं से कुछ प्राप्त करते, पर खैर मुझे तुमसे स्नेह है, और मैं तुम्हें अवश्य ही सिखाऊंगा, तुम मुझे बताओ, कि तुम क्या सीखना चाहते हो।"

इन पक्तियों को लिखते समय मैं सच्चे हृदय से कह रहा हूं, कि मेरे मन में कोई भावना या विचार नहीं था, न जाने क्यों अकस्मात् मेरे मुंह से यह निकल गया, कि "मैं सम्मोहन विद्या सीखना चाहता हूं, और मैं चाहता हूं, कि कुछ ही मिनटों में वशीकरण क्रिया के द्वारा उसे हमेशा-हमेशा के लिए अपना बना लूं।"

स्वामी जी ने एक क्षण मेरी ओर ताका और फिर जोरों से खिलखिला पड़े, ऐसा लगा, कि स्वच्छ पानी का झरना छलछला आया हो, फिर बोले तुम्हारी उम्र के बालकों की ऐसी ही इच्छा होती है, यह मैं जानता हूं, मगर कोई बात नहीं, अगर तुम्हें यही सीखने की इच्छा है, तो मैं तुम्हें जरूर उच्चकोटि की वशीकरण विद्या सिखाऊंगा, जिससे कि तुम इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सको।

मैं जानबूझ कर उन स्वामी जी का नाम स्पष्ट नहीं कर रहा हूं, क्योंकि वे प्रचार-प्रसार से बहुत दूर हैं, और उन्होंने मुझे मना किया था, कि किसी भी हालत में मेरे नाम का विवरण

देना उचित नहीं है, और उन्होंने मुझे उसी दिन से वशीकरण विद्या सिखानी प्रारम्भ कर दी।

मैं सप्ताह में दो बार काठमाण्डू जाता और वहां से राशन-पानी, आटा, चावल, घी आदि खरीद कर ले आता, स्वामी जी मुझे कुछ रुपये दे देते और सामान खरीद कर लाने को कहते। एक दिन मैं पशुपतिनाथ मंदिर की परिक्रमा कर वाग्मती नदी के किनारे उदास मन से बैठा हुआ था, कि अचानक मेरी थोड़ी दूर पर नजर पड़ी, एक अत्यन्त सुंदर बालिका नदी के किनारे पत्थर के एक बड़े से ढोके पर बैठी हुई थी, और उसके दोनों पैर पानी में पड़े हुए थे, उन पैरों से वह पानी उछाल रही थी, उसे इस बात का कोई भान नहीं था, कि कोई उसको देख भी रहा है।

पहली ही बार में वह अत्यन्त सुंदर, अल्हड़ नेपाली बालिका मेरे मन को छू गई, लगभग सत्रह-अठारह वर्ष की तरुणी अपने-आप में बेखबर बैठी हुई पैर हिला रही थी, **उसे शायद इस बात का ज्ञान नहीं था, कि उसके शरीर में चुपके से यौवन ने आकर घर कर लिया है, चेहरे पर एक भोलापन, लम्बा सा कद, गोरा रंग और बड़ी, सुंदर आंखें . . . सब कुछ एकबारगी ही मन को छू गया, ऐसा लगा, कि जैसे कोई देवकन्या हो, और कुछ क्षणों के लिए पृथ्वी पर विचरण करने के लिए आई हो।**

मुझे अपने-आप पर हमेशा गर्व रहा है, और अपने संयम पर, अपने आत्मविश्वास पर जरूरत से ज्यादा भरोसा रहा है, किसी भी स्त्री या बालिका को देखकर कभी भी मेरा मन विचलित नहीं हुआ, पर इस बार पता नहीं क्यों मेरा मन अटक गया, और मैं वहीं मूर्तिवत खड़ा रहा।

अचानक उसे लगा, कि कोई उसे देख रहा है, और ज्यों ही उसकी नजर मुझ पर, पड़ी, तो वह अचानक उठ खड़ी हुई और एक तरफ को चली गई, मैं हताश, खिन्न सा सामान खरीद कर आश्रम में लौट आया।

पर मैं उस रात आराम से सो नहीं सका, और दूसरे दिन मैं वापिस उसी जगह जा पहुंचा। मैंने देखा, कि वह बालिका वहीं कपड़े धोने के लिए आई थी, शायद उसका मकान नदी के आस-पास ही कहीं पर था, इस प्रकार दो-तीन दिन बीत गए। एक दिन मैंने हिम्मत कर उसका नाम पूछ लिया, तो उसने भोलेपन से अपना नाम बता दिया, यही नहीं धीरे-धीरे मुझे यह भी पता चला, कि वह किसी ऊंचे खानदान से सम्बन्धित कन्या है, पर परिस्थितियों ने उसे गरीब बना दिया है।

मैं लगभग उखड़ा सा, उदास रहने लगा, शायद स्वामी जी ने मेरी मनःस्थिति को भांप लिया था, पर वे बोले कुछ नहीं। एक दिन मैं सामान खरीदने के लिए काठमाण्डू गया हुआ था, मैं सीधा वाग्मती नदी के किनारे चला गया, मुझे वह वहां कहीं पर भी दिखाई नहीं

दी, मैं लगभग दो घंटे तक उसकी प्रतीक्षा करता रहा. पर उसका कुछ भी पता नहीं चला।

उस दिन मैं अत्यन्त भग्न हृदय से आश्रम में लौट आया, मुझे कुछ ऐसा लगने लगा, कि जैसे मेरा सब कुछ छिन गया हो, न मुझे खाना अच्छा लगता न मंत्र-जप, पहली बार ऐसा लगा, कि मैं किसी को चाहने लगा हूं, परंतु आज बीस दिन हो गए थे, और इन बीस दिनों में मैं रोज काठमाण्डू के चक्कर लगा लेता, पर वह मुझे कहीं पर भी दिखाई नहीं देती और मैं रोज भारी कदमों से आश्रम की ओर लौट आता।

लगभग एक महीना बीत गया था, उसके बिना जीवन निस्सार और व्यर्थ सा अनुभव होने लगा था। एक दिन स्वामी जी साधना करने के लिए दोपहर के समय कहीं बाहर गए, तो मेरे कदम सीधे वाग्मती नदी की ओर बढ़ गए, दोपहर का समय था, और मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, मैं ज्यों ही नदी के किनारे पहुंचा, वह वहां पर खड़ी थी, साथ में एक और कोई पुरुष भी खड़ा था, जिससे वह हंस-हंस कर बातें कर रही थी, यह दृश्य देख कर मेरे तन-बदन में आग लग गई, और मैं एक अजीब सी आग में झुलसने लगा। मैं वहां खड़ा रहा, कुछ ही मिनटों के बाद उसने मुझे देखा भी, पर देखकर के भी अनदेखा कर दिया, उससे तो मैं पूरी तरह से जल गया।

मैं वहां लगभग पौन घण्टे तक बैठा रहा और चुपचाप नदी को देखता रहा, मेरा सारा शरीर आग की तरह दहक रहा था, मगर मैं विवश था, लाचार था, मेरे सामने ही मेरी दुनिया लुट रही थी, और मैं खड़ा-खड़ा अपने-आप को लुटता हुआ सा अनुभव कर रहा था।

कुछ ही समय बाद वह युवक वहां से चला गया, तो मैंने साहस कर उसके पास जाकर पूछा, कि "वह कौन था, जिससे तुम इतनी हंस-हंस कर बातें कर रही थीं", और यह मुझे पूछने का अधिकार भी था, क्योंकि पिछले एक महीने में हमने एक-दूसरे को काफी कुछ पहिचान लिया था।

पर मेरी बात सुनकर वह भड़क उठी, बोली– "तुम्हें क्या मतलब, कि मैं किससे बातें कर रही थी? मैं उससे शादी करने का विचार कर रही हूं, और आइन्दा से मेरे पास आने की जरूरत नहीं है।

इससे तो मैं और भी तिलमिला उठा, **एक लड़की अपने रूप और यौवन के घमण्ड में मेरा ऐसा अपमान कर दे, यह मेरे लिए सर्वथा असहनीय था,** इच्छा तो हुई, कि मैं एक जोरों का थप्पड़ उसके गाल पर रसीद कर दूं, पर मैंने अपने-आप को जज्ब कर लिया।

मैंने कहा, "मैं भी अच्छे घराने का लड़का हूं और तुम्हें चाहने लगा हूं। मैं तुम्हारे

साथ शादी करने की इच्छा रखता हूं, तुम विश्वास रखो, कि मैं तुम्हें बहुत अधिक खुशियां जिन्दगी में दूंगा।"

उसने घृणा भरी आंखों से मेरी ओर देखा और तिरस्कार पूर्ण स्वर से बोली, "तुम प्यार-व्यार को भूल जाओ, तुम उसके सामने हो भी क्या? मैं तुम्हारी सूरत भी नहीं देखना चाहती।"

मैं क्रोध, आवेश और अपमान की ज्वाला में दहक उठा, मैंने देखा, कि वह तिरस्कार पूर्ण ढंग से मुझे देखती हुई एक ओर चली गई।

मैं आश्रम चला आया, और निश्चय कर लिया, कि मुझे इसको प्राप्त करना ही है, और हर हालत में प्राप्त करना है, **जब विश्वामित्र जैसे ऋषि ने इन्द्र की अप्सरा को साधना के बल पर, अपनी उंगलियों पर नचा लिया था, तो फिर मैं ऐसा क्यों नहीं कर सकता** और मैं आश्रम में आकर बैठ गया, मेरा सारा शरीर लाल सुर्ख हो गया था।

मैंने उस दिन से "वशीकरण साधना" प्रारम्भ कर दी, और चौबीस घण्टों तक उस क्रिया में संलग्न रहा। स्वामी जी भी मेरे परिश्रम को, मेरी लगन और योग्यता को देख कर खुश थे। मैंने तीन दिन की इस साधना को पूर्ण कर उस दुर्लभ **"प्रत्यंगिरा वशीकरण सिद्धि"** को प्राप्त कर लिया था, जिसके माध्यम से किसी को भी वशीभूत किया जा सकता है। इस साधना में सामने वाले की उपस्थिति आवश्यक नहीं होती, केवल बिम्ब आंखों के सामने लाकर सिद्धि होने के बाद केवल एक घण्टा मंत्र-जप करते ही वह बिम्ब, जिसे हम वशीभूत करना चाहें, वश में हो जाता है, और मैंने साधना सम्पन्न करने के बाद ऐसा ही किया।

शायद आप विश्वास नहीं करेंगे। यह मेरे जीवन की सुखद घटना है, कि दूसरे दिन नौ बजे जब मैं सामान लेने गया, तो वह मुझे बाजार में दिख गई, परंतु मैंने उससे बात नहीं की, और मैं वापिस लौट आया, जब मैं आश्रम में पहुंचा, तो मुझे पदचाप सुनाई दी, मैंने मुड़ कर देखा, तो वही अनुपमा खड़ी थी, सौन्दर्ययुक्त, यौवन भार से सिक्त।

उसने क्षमा-याचना करते हुए मेरे सामने विवाह का प्रस्ताव रखा, **मैं समझ रहा था, कि यह वशीकरण साधना का अचूक प्रयोग है, जिसके बल पर मुझ जैसे गरीब, सामान्य रूप-रंग वाले व्यक्ति के सामने ऐसी अद्वितीय अप्सरा खड़ी है, और विवाह का प्रस्ताव रख रही है।**

मैं अपमान को भूला नहीं था, झटक कर कहा "तुम जैसी घटिया लड़की से शादी करने की मैं बात भी नहीं सोच सकता, तुरंत यहां से चली जाओ अन्यथा मैं धक्के मार कर निकाल दूंगा।"

वह मेरे चरणों में गिर पड़ी, पूरा सौन्दर्य मेरे पैरों में बिखरा हुआ था, यह मेरी जीत नहीं अपितु उस उत्तमकोटि की साधना की विजय थी। मैं कुछ मिनटों तक उसी प्रकार से खड़ा रहा, उसने अपना चेहरा ऊपर उठाया, तो उसकी आंखें और चेहरा आंसुओं से तर-बतर था, वह क्षमा-याचना करती हुई बोली, "कल से मैं अपने-आपे में नहीं हूं, और ऐसा लगता है, कि यदि आप मुझे पति या प्रेमी के रूप में प्राप्त नहीं हुए, तो मैं सीधे यहां से जाकर, वाग्मती नदी में कूद कर अपने प्राण विसर्जित कर दूंगी।

उसके कथन में सच्चाई झलक रही थी, वह वास्तव में ही मुझे चाहने लगी थी, मैंने पूछा भी, कि "मैं तो घटिया हूं, तुम तो मेरी सूरत भी नहीं देखना चाहतीं, फिर यहां तक क्यों आ गई हो?"

उसने कहा, कल से पता नहीं क्या हुआ, कि मैं पागल सी हो उठी, हर क्षण आपका चेहरा आंखों के सामने नाचने लगा, आपका मैंने अपमान किया था, इस पश्चाताप की आग में मैं रात भर झुलसती रही। मुझे मालूम था, कि आप शुक्रवार को बाजार में सामान खरीदने आते हैं, इसीलिए मैं आपको ढूंढ़ने के लिए ही बाजार के चक्कर लगा रही थी, और ज्यों ही आपको देखा मैं आपके पीछे-पीछे चल पड़ी।

मैंने अपने माता-पिता की अनुमति प्राप्त कर ली है, मैं उनकी इकलौती संतान हूं, और मेरे दादा नेपाल के प्रसिद्ध कुलीन राणा वंश से सम्बन्धित हैं। मैं खानदानी और सर्वथा पवित्र लड़की हूं, आप मुझे अपना लें अन्यथा मैं पशुपतिनाथ जी की सौगन्ध खाकर कहती हूं, कि एक घण्टे के भीतर-भीतर मैं नदी में कूद कर अपने प्राण त्याग दूंगी।

तब तक स्वामी जी लौट आए थे, उन्हें इस बात का कुछ पता नहीं था, क्योंकि मैंने उन्हें कुछ बताया नहीं था, पर आज मैंने उन्हें उसके सामने ही सब कुछ खुल कर बता दिया। स्वामी जी ने शादी करने की स्वीकृति दे दी, बोले– "मैं इसका भविष्य देख रहा हूं, आगे चल कर यह भी एक श्रेष्ठ साधिका बनेगी।"

दूसरे दिन वह अपने मां-बाप को आश्रम में बुला लाई, उनके सामने बातचीत हुई, वे स्वयं इस शादी के लिए तैयार थे, उन्होंने कहा, "जिस बात से हमारी बेटी को सुख मिलता है, हमारे लिए वही सुख है," और स्वामी जी के सामने ही हम दोनों विवाह सूत्र में बंध गए।

आज इस घटना को बीस वर्ष से भी ज्यादा हो गए हैं, इस अवधि में उन स्वामी जी से और प्रातः स्मरणीय उनके पूज्य गुरुदेव से हम दोनों ने काफी कुछ विद्याएं, साधनाएं सीखीं, पर **मुझे आज भी सबसे पहले सम्पन्न की हुई वशीकरण साधना भली प्रकार से ज्ञात है, जिसके बल पर मैं अद्वितीय सौन्दर्यवती अनुपमा को अपनी पत्नी बना सका,** यद्यपि विवाह से पूर्व उसके मां-बाप, स्वामी जी और उसके सामने मैं यह कबूल कर चुका था, कि "तुमसे अपमानित होकर मैंने तुम पर 'प्रत्यंगिरा वशीकरण प्रयोग' किया था, जिसकी वजह से ही तुम

मुझे प्राप्त हो सकीं।"

उसने हंस कर जवाब दिया, "तुमने क्या किया और क्या नहीं इस बात की मुझे चिन्ता नहीं है, पर तुमने मुझे पागल बना दिया है, इस बात को मैं जान गई हूं, और यह उस वशीकरण साधना का ही प्रभाव है, कि बीस वर्षों के बाद भी हम दोनों के बीच कभी किसी प्रकार का कोई मतभेद या तनाव नहीं हुआ।

और मैं यह निश्चयात्मक स्वर में कहने में समर्थ हूं, कि इस प्रत्यंगिरा वशीकरण सिद्धि से, इस साधना को सिद्ध करने के बाद कोई भी स्त्री किसी भी पुरुष को या कोई भी पुरुष किसी भी स्त्री को मात्र एक घण्टे में अपने वश में कर सकता है, अपने पीछे पागल बना सकता है और उसे जीवन भर वशीकरण युक्त बनाए रख सकता है। यदि कोई अन्य व्यक्ति भी इस सिद्धि का जानकार है, तो वह किसी के लिए भी ऐसा प्रयोग कर उन दोनों को परस्पर वशीकरण आबद्ध कर सकता है।

व्यक्तित्व संवारिये सम्मोहन साधना से

❀ ❀ ❀

जीवन में उन्नति का प्रमुख आधार आपका व्यक्तित्व होता है। आपके पास कितनी धन-दौलत है, आपका कितना प्रभुत्व है, यह सब अलग बात है। मूल बात तो यह है, कि आप जब किसी दूसरे से मिलते हैं, तब आपका व्यक्तित्व सामने वाले पर कितना हावी होता है, और आपका व्यक्तित्व कितना बलवान है। आपको देखते ही यदि सामने वाला निस्तेज हो जाता है या दूसरे शब्दों में, आपका व्यक्तित्व उस पर हावी हो जाता है, तभी आप-अपने व्यक्तित्व की पूर्णता समझें।

आज के युग में हमें नित्य सैकड़ों लोगों से मिलना पड़ता है, जिसमें पुरुष होते हैं, स्त्रियां होती हैं, अधिकारी होते हैं, व्यापारी होते हैं, और भी कई तरह के लोग होते हैं, उन सब पर अपना प्रभाव जमाने के लिए यह जरूरी है, कि हमारे व्यक्तित्व में कोई विशेष बात हो, हमारे चेहरे में कोई चुम्बकीय आकर्षण हो, जिसकी वजह से सामने वाला देखते ही प्रभावित हो जाए, तथा हम उससे जो भी बात कहें, उसका उस पर सीधा असर हो, और वह हमारी बात मान ले।

यदि ऐसा होता है, तो हमारे जीवन के कई कार्य आसानी से सम्पन्न हो जाते हैं, हम जीवन के कई क्षेत्रों में सफलता पा लेते हैं, हमें अपने जीवन में जिस लक्ष्य तक पहुंचना होता है, जल्दी से और आसानी से हम वहां तक पहुंच जाते हैं, यह सब तभी हो सकता है, जबकि आपका व्यक्तित्व चुम्बकीय और सम्मोहन युक्त हो।
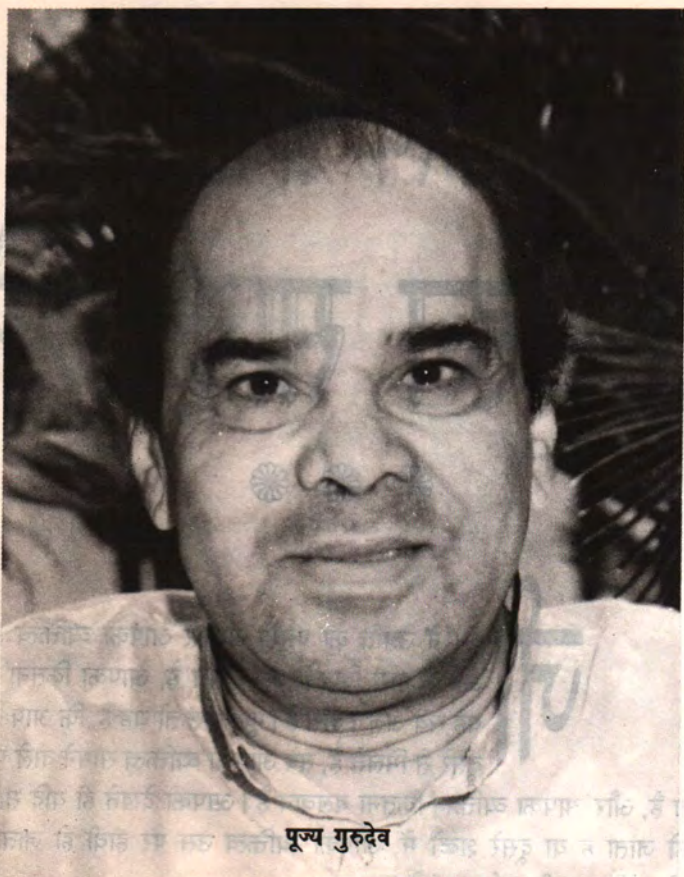
पूज्य गुरुदेव

पर यदि ऐसा नहीं है, **आपका शरीर कमज़ोर है, यदि आप बात करते हुए, अधिकारियों से मिलते हुए घबराते हैं, यदि आप अपने-आप को हीन महसूस करते हैं, तो आप जीवन में सफल नहीं हो सकते,** यदि आपके चेहरे पर ओज या प्रभाव नहीं है, यदि आप-अपने व्यक्तित्व से सामने वाले पर हावी नहीं हो सकते, तो आप जीवन में पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त कर सकते, पर **यह सब कुछ प्राप्त हो सकता है, ''सम्मोहन साधना'' के द्वारा।**

यदि आप पुरुष हैं तो

आपको तो अपने जीवन में नित्य कई लोगों से मिलना-जुलना पड़ता है, उनसे वातचीत करनी पड़ती है, फिर भले ही वह व्यापारी हो, आपका नौकर हो, आपका पुत्र या पिता हो, पत्नी या रिश्तेदार हो, **आपके लिए यह जरूरी होता है, कि आपका प्रभाव सामने**

वाले पर पड़े, वह आपकी बातों से और आपके व्यक्तित्व से प्रभावित हो, और आप उसको जो भी बात कहें, वह उसे पूरी तरह से माने।

इसके लिए यह सम्मोहन साधना आपके लिए जरूरी है, जिससे कि आपके चेहरे पर निखार आ सके, और सामने वाले व्यक्तित्व पर हावी होने की क्रिया ज्ञात हो सके।

ऐसा होने पर आप-अपने जीवन में ज्यादा सफल हो सकेंगे, और अपने जीवन में जो कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, वह जल्दी ही प्राप्त कर सकेंगे।

यदि आप स्त्री हैं तो

चाहे आप कुमारी हों, विवाहिता हों, सामाजिक कार्य करने वाली हों, सब जगह आपके व्यक्तित्व का प्रभाव सामने वाले पुरुषों पर पड़ना आवश्यक है।

और यदि ऐसा नहीं होता है, तो आपको पग-पग पर अपमानित होना पड़ता है, अपने-आप को दबोचना पड़ता है, और जीवन में जो प्रसन्नता, जो खुशियां और जो आनंद आपको प्राप्त होना चाहिए, वह प्राप्त नहीं हो पाता।

जब आप देखती हैं, कि आपके पति आपका कहना नहीं मानते, आपके पुत्र आपकी बात स्वीकार नहीं करते, ऑफिस में आपकी उपेक्षा होती है, समाज में आपको जो सम्मान मिलना चाहिए, वह नहीं मिल पाता, तो धीरे-धीरे आप कुण्ठाग्रस्त हो जाती हैं, एक प्रकार की हीन भावना आपके मन में घर कर जाती है, जिससे आपके चेहरे का रहा-सहा आकर्षण भी समाप्त हो जाता है।

इसलिए **आपको अपने व्यक्तित्व की पूर्णता के लिए, समाज में श्रेष्ठता और सम्मान प्राप्त करने के लिए, परिवार में प्रभुत्व बनाए रखने के लिए यह जरूरी है, कि आपके व्यक्तित्व में सम्मोहन अवस्था प्राप्त हो,** जिससे आप पुरुषों के दिलों पर शासन कर सकें, और अपने जीवन में जो कुछ चाहती हैं, वह सब आपको प्राप्त हो सके।

मोहिनी साधना

जब देवताओं और दैत्यों में युद्ध हुआ और समुद्र-मंथन के बाद अमृत-कलश निकला, तो उसे पाने के लिए देवताओं और दैत्यों में भयानक युद्ध छिड़ गया, ऐसी स्थिति में भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर उन क्रूर दैत्यों को अपने व्यक्तित्व से पूर्ण प्रभावित कर दिया और उनके सामन्ने ही वह अमृत-कलश देवताओं को सौंप दिया, यह घटना जिस दिन घटी, उस दिन को **मोहिनी एकादशी** के नाम से जाना जाता है, इसीलिए उच्चकोटि के साधक इस दिन को ही 'सम्मोहन साधना' सम्पन्न करते हैं, जिससे कि वे अपने जीवन में अपने व्यक्तित्व को पूर्णता दे सकें।

सम्मोहन साधना

इसको शास्त्रों में मोहिनी साधना या वशीकरण साधना भी कहा गया है, अर्थात् यह एक ऐसी साधना है, जिसको सम्पन्न करने पर व्यक्ति के चेहरे, उसके पूरे शरीर और उसकी वाणी में कुछ ऐसी चमक, कुछ ऐसा ओज और कुछ ऐसा प्रभाव पैदा हो जाता है, जिसकी वजह से वह अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति को भी अपने सम्मोहन से प्रभावित कर लेता है, और उसे अपने वश में कर लेता है।

यह एक दिन की साधना है, और सही अर्थों में कहा जाय, तो यह जीवन की श्रेष्ठ साधना है। आज के युग में तो प्रत्येक साधक के लिए यह एक अनिवार्य साधना है, क्योंकि इस साधना को सम्पन्न करने से उसके व्यक्तित्व में निखार आ जाता है, और वह अपने जीवन में जो कुछ पाना चाहता है, उसे सहज ही प्राप्त कर लेता है। दूसरों से काम निकालने में वह माहिर हो जाता है, और अपनी जिंदगी में वह पूर्ण सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।

इस साधना से धीरे-धीरे पूरे शरीर का कायाकल्प होने लगता है, चेहरे की झुर्रियां मिटने लगती हैं, और आंखों में एक विशेष प्रकार की लपक पैदा हो जाती है, जो सामने वाले पर पूरा प्रभाव डालने में समर्थ हो पाती है।

वास्तव में ही इस दिन हजारों-हजारों पुरुष और स्त्रियां इस साधना को सम्पन्न कर आगे के पूरे वर्ष को अपने लिए अनुकूल और उन्नतिदायक बना लेते हैं। इस साधना को सम्पन्न करने से परिवार में चल रहे मतभेद दूर हो जाते हैं, अधिकारियों की कृपा प्राप्त हो जाती है, और अपने मित्रों एवं सम्बन्धियों में उसका प्रभुत्व बढ़ जाता है।

और यदि आपका व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण है, तो भी इस प्रयोग को करने से उसमें और ज्यादा निखार आता है, सफलता के और नए द्वार खुलने लगते हैं, और जीवन में आप आसानी से उन सफलताओं को प्राप्त कर लेते हैं, जो आपके जीवन में आवश्यक हैं।

साधना समय

सप्ताह के किसी भी **शुक्रवार** को यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है। यह केवल एक दिन का प्रयोग है, और इसे दिन को या रात्रि को कभी भी अपनी सुविधानुसार सम्पन्न किया जा सकता है।

साधना सामग्री

इसके लिए साधक को केवल **''मोहिनी महायंत्र''** और **''मोहिनी माला''** की आवश्यकता होती है, जो कि पूर्ण मंत्र-सिद्ध एवं प्राणश्चेतना युक्त हो। यह यंत्र अपने-आप

में अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इस यंत्र पर पूर्ण सम्मोहन प्रयोग किया हुआ होता है, देखा जाय, तो यह महायंत्र सौभाग्यशाली व्यक्तियों को ही प्राप्त हो सकता है।

पिछले दिनों उच्चकोटि के योगी **स्वामी गिरधरानंद जी** पधारे थे, जो कि इस क्षेत्र के अन्यतम विद्वान और जानकार हैं, उनसे हमें इस प्रकार के श्रेष्ठ मोहिनी महायंत्र प्राप्त हुए थे, जो कि साधकों के लिए वरदान स्वरूप हैं। साधकों को चाहिए, कि वे इस प्रकार का महायंत्र प्राप्त करके इस दिन की साधना को सम्पन्न करें।

साधना प्रयोग

साधक स्नान कर, सफेद आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाए और सामने एक घृत का दीपक लगा दे, इसके बाद किसी पात्र में इस "मोहिनी महायंत्र" को स्थापित कर दे और "मोहिनी माला" से मोहिनी मंत्र का जप करे।

इस साधना में यंत्र की पूजा आदि की जरूरत नहीं होती, क्योंकि यह महायंत्र अपने-आप में ही सिद्ध किया हुआ होता है। मोहिनी माला अपने-आप में एक अद्‌भुत और अद्वितीय माला है, जिसे धारण करने से पूरे शरीर में धीमा-धीमा विद्युत प्रवाह सा होता रहता है, और पूरा शरीर निखर कर सम्मोहक बन जाता है, इसीलिए कई शास्त्रों में और साधना ग्रंथों में मोहिनी माला की विशेष प्रशंसा की हुई है।

मोहिनी महामंत्र

। । ॐ ह्रीं सर्व जनं में वश्य सम्मोहय सम्मोहय फट्। ।

जैसा कि मैं बता चुका हूं, कि मोहिनी माला से ही उपरोक्त मंत्र की ११ माला मंत्र-जप होना चाहिए, मंत्र-जप करते समय साधक को अपनी दोनों आंखों से एकटक मोहिनी महायंत्र को देखते रहना चाहिए, जिससे उसकी आंखों में सम्मोहन अवस्था आ जाएगी और इसी सम्मोहन प्रभाव से वह हजारों लोगों को प्रभावित कर सकेगा।

जब मंत्र-जप पूरा हो जाय, तब साधक वह माला गले में धारण कर ले और उस मोहिनी महायंत्र को किसी नदी, तालाब, कुंए या मंदिर में विसर्जित कर दे, इस प्रकार करने पर यह प्रयोग पूर्ण माना जाता है। आप स्वयं इस साधना को सम्पन्न कर इसका चमत्कार अनुभव कर सकते हैं, कि यह प्रयोग अत्यन्त प्रभावयुक्त और तेजस्वी है, तथा इससे लोगों की नजरें ही बदल जाएंगी, वे स्वयं आपके पास आने के लिए, आपसे बातचीत करने के लिए आतुर होंगे, और आपकी प्रत्येक आज्ञा को पूरा करने में प्रसन्नता महसूस करेंगे।

प्रेम, विवाह, सामाजिक सम्बन्ध, व्यावसायिक सम्बन्ध आदि सभी क्षेत्रों में यह प्रयोग चमत्कारिक है, और आपके पूरे जीवन को जगमगाहट देने में समर्थ है। ❋

सम्मोहन और सिद्धियां

यह स्पष्ट हो जाने के बाद, कि सम्मोहन अपने-आप में कोई जटिल प्रक्रिया नहीं है, वरन् प्राणों के विस्तार और मन के निर्विचार हो जाने का एक तालमेल है। व्यक्ति को इसी से जुड़ी कई ऐसी स्थितियां स्वतः हस्तगत हो उठती हैं, जिन्हें सामान्य व्यक्ति चमत्कार समझता है। 'चमत्कार' शब्द तो एक ऐसा अनिश्चित अर्थ वाला शब्द है, कि व्यक्ति अपनी सामान्य बुद्धि से या तर्क से जिस तथ्य की व्याख्या नहीं कर पाता, उसे चमत्कार कह देता है। इसी से साधना, सिद्धि, चमत्कार, अंधविश्वास यह सब शब्द आज अपने-अपने मूल अर्थों से विस्थापित गड्ड-मड्ड हो गये हैं, और इसका लाभ पाखण्डी, भगवें वस्त्रधारी भुना रहे हैं।

जब हम सम्मोहन की या अन्य किसी सिद्धि की बात सोचते हैं, तो प्रथम व अत्यावश्यक तथ्य हमारे मानस में स्पष्ट होना चाहिए, कि मुझे जैसे भी हो एक सुयोग्य मार्गदर्शक ढूंढ ही निकालना है। जब बात भारतीय ज्ञान-विज्ञान और साधना की होती है, तो मार्गदर्शक से तात्पर्य **"गुरु"** से होता है, किन्तु गुरु का पद वही नहीं है, जो मार्गदर्शक का होता है। मार्गदर्शक तो हमारा किसी एक विषय विशेष में व्यावहारिक मार्ग बताने वाला पथ प्रदर्शक सा ही होता है, जबकि गुरु हमारी आस्था, आन्तरिक प्रेम, श्रद्धा, सेवा का घनीभूत स्वरूप होता है, उसे धन या पद के दबाव से नहीं खरीद सकते।

हिन्दू चिंतन तो मानता है, कि प्रत्येक व्यक्ति अपने-आप में पूर्ण है। प्रत्येक के अन्दर सभी साधनाएं, सभी ज्ञान समाहित है, केवल उसे जाग्रत करना है। हमारी बोलचाल की भाषा में भी तो कहते हैं "पाठ स्मरण करना", क्योंकि अर्जित तो हम जन्म से ही कर चुके होते

हैं। यह ज्ञान जाग्रत करने का अत्यंत जटिल कार्य गुरु पद पर आसीन दिव्य पुरुष ही अपने स्पर्श से कर सकते हैं। जिस माध्यम से वे जाग्रत करते हैं, उसे ही आध्यात्मिक भाषा में **'दीक्षा'** की संज्ञा दी गई है, इसी से विभिन्न प्रकार से ज्ञान को इस शरीर में, इस मानस में स्पष्ट करने हेतु विभिन्न दीक्षाओं का विधान रचा गया।

सम्मोहन ज्ञान की बात करते समय बार-बार इस तथ्य का उल्लेख आता है, कि व्यक्ति निर्विचार हो, जिससे एक विचार को ही एक समय में लेकर, उस पर समस्त बल केन्द्रित कर सामने वाले पर फेंक उसे वश में कर सके। व्यक्ति निर्विचार नहीं हो पाता, उसका मन भटकता ही रहता है, साथ ही उसका मस्तिष्क उसे इस भटकने में और मदद करता है, जबकि व्यक्ति सोचता है, मैं कितना श्रेष्ठ हूं, कि हर बात पर पहले समझ-बूझ कर, विचार कर निर्णय लेता हूं। व्यक्ति के प्रयासों से साधना पद्धतियां, उपाय आदि को खोजने का बखेड़ा ही नहीं करना पड़ता।

यह सत्य है, कि विचार शून्यता, क्रिया योग और ध्यान योग के समन्वय से प्राप्त की जा सकती है, किन्तु इस मार्ग में कई ऐसे बिन्दु आते हैं, जबकि दैवी बल की नितान्त आवश्यकता होती है, और तब गुरु ही उसे जिस माध्यम से आगे बढ़ा सकते हैं, उसे योग की भाषा में **"दिव्य आघात"** की संज्ञा दी गयी है। उदाहरण स्वरूप क्रिया योग करते समय जिस स्तर पर बाह्य मन को शून्य कर अन्तर्मन से जोड़ना होता है, तो वह क्रिया केवल दिव्य आघात से ही सम्पन्न हो पाती है। क्रिया योग, ध्यान योग को **"दिव्य साधना"** भी कहा गया है, और ऐसे इस साधना में कई पड़ाव आते हैं।

अन्तर्मन और सिद्धियां

पूर्ण विचार शून्यता की स्थिति दैवी स्थिति होती है। जब व्यक्ति ईश्वर के या ब्रह्म के तुल्य हो उठता है, जिसका पारितोष होता है, कि ईश्वर के अनन्त विभूषित खजाने में से उसे कुछ रत्न मिल जाते हैं, तब वह सहज ही चमत्कारी पुरुष बन उठता है। सम्मोहन की क्रिया में हम निर्विचार हो किसी एक विचार को ही तो दूसरे पर प्रवाहित करते हैं।

सम्मोहन में जो अभ्यास हम सामने वाले माध्यम पर करते हैं, उसकी यदि सघनता में वृद्धि करें और उसे वहां तक प्रेषित कर सकें, जहां हमारी भौतिक उपस्थिति न भी हो, तो यही 'विचार संक्रमण दशा' होती है।

मूर्ति त्राटक अथवा चित्र त्राटक पर जब हमारा अभ्यास परिपक्व हो उठता है, तो हम यह क्रिया सहज में ही किसी का फोटो लेकर भी उसके माध्यम से कर सकते हैं। इसका कारण यह है, कि उस क्षण आपका मानस विचार शून्य है, और आप केवल एक ही बिम्ब अपने मस्तिष्क में रखे हैं, जब आप उसे विचारों की तरंगें तीव्रता से प्रेषित करेंगे, तो विश्व

में उस के सदृश्य कोई दूसरा व्यक्ति ही संदेश को ग्रहण करेगा और आदेश पालन को बाध्य हो उठेगा। प्रारम्भ में आप बगल के कमरे में बैठे व्यक्ति पर इसका अभ्यास कर प्रामाणिकता ज्ञात कर सकते हैं, और बाद में तो आप मात्र हुलिया सुनकर इच्छित व्यक्ति को आदेश पालन के लिए बाध्य कर सकते हैं, यही **'विचार संक्रमण सिद्धि'** है, और यही प्रकारान्तर से **'संकल्प सिद्धि'** है।

भविष्य काल का दर्शन भी अन्तर्मन के जागरण से किया जा सकता है। बहुधा ज्योतिष में ऐसे योग उपस्थित होते हैं, कि मात्र ज्ञान के आधार पर निर्णय नहीं दिया जा सकता, तब हमारा अन्तर्मन ही हमें सही निर्णय बताता है। जब सम्मोहन कर्ता किसी व्यक्ति को सम्मोहित करता है, और उसे तृतीय स्थिति तक ले जाता है, तो उस माध्यम का अन्तर्मन 'ईथर' के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो उठता है, और वह विश्व में कहीं भी घट रही कोई भी घटना न केवल देख सकता है, वरन् उसे उसी सम्मोहन अवस्था में अपने सम्मोहन कर्ता को ज्यों का त्यों बता भी सकता है।

ऐसी स्थितियों में जहां कोई बच्चा घर से भाग गया हो अथवा गायब कर दिया गया हो, किसी माध्यम के द्वारा उसका पता प्राप्त किया जा सकता है। यदि सम्मोहन कर्ता स्वयं कुछ विशिष्ट क्रियाओं को अपना कर अभ्यास करे, तो वह स्वयं अपना अन्तर्मन इतना विकसित कर सकता है। भारतीय योग शास्त्र में इसी को **'दूर दर्शन सिद्धि'** कहा गया है।

यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय, तो प्रायः सभी सिद्धियों के मूल में अन्तर्मन का विकास एवं उसका सुसंयोजन ही छिपा है। अन्तर्मन असीम बन्धन रहित होने के कारण सदैव ही उचित देखता है, उचित सुनता है, और व्यक्ति को उचित मार्ग भी बताता चलता है, किन्तु बुद्धि के अतिरेक में हम उसकी उपेक्षा कर बैठते हैं। अपने अन्तर्मन को जाग्रत करना और उसका स्वर समझना ही सिद्धि का रहस्य है, फिर हम चाहे 'विचार संक्रमण सिद्धि' प्राप्त करना चाहें अथवा 'संकल्प सिद्धि'। प्रायः सभी सिद्धियां परस्पर अन्तः सम्बन्धित अथवा एक-दूसरे के पूरक ही तो हैं।

आन्तरिक पक्ष में सम्मोहन जहां व्यक्ति के अन्तर्मन से सम्बन्धित होता है, वहीं शरीर की संरचना की दृष्टि से समझने पर स्पष्ट होता है, कि यह सुषुम्ना नाड़ी का जागरण योग विधि से अत्यन्त दुरूह एवं कष्टप्रद है, जबकि कुछ विशिष्ट क्रियाओं (दीक्षाओं) गुरु कृपा तथा गोपनीय मंत्रों की सहायता से उपेक्षा कृत सहज हो जाता है। जब व्यक्ति की सुषुम्ना जाग्रत हो जाती है, तो उसे किसी को सम्मोहित करना नहीं पड़ता, वरन् लोग उसकी आज्ञा-पालन करना अपना सौभाग्य समझते हैं। हमारे शास्त्रों में कुछ ऐसे गोपनीय मंत्र हैं, जिनमें आसन, दिशा, समय, माला का कोई बन्धन नहीं है, उन्हें केवल प्रतिदिन कुछ निश्चित समय के लिए जपना होता है, और स्वतः ही सुषुम्ना जागरण से व्यक्ति सम्मोहन के क्षेत्र में तो सफल होता ही है, उसे फिर अन्य सभी साधनाओं में भी सफलता तेजी से मिलने लग जाती है।

सम्मोहन और चिकित्सा विज्ञान

सम्मोहन विज्ञान को विश्वव्यापी ख्याति मिली, उसके पीछे चिकित्सा विज्ञान में उपयोग होना ही आधार है। भारत में इसका प्रयोग तो आध्यात्मिक जीवन तक ही सीमित रहा और कालान्तर में जनसामान्य इसे जादू-टोने से सम्बन्धित मान कर ललक के साथ अपना नहीं सके। **डॉ० मेस्मर** द्वारा इस विद्या की चुम्बकीय व्याख्या एवं चिकित्सकीय उपयोग के बाद पाश्चात्य देशों में क्रमबद्ध रूप से परम्परा बढ़ती रही एवं बाद में वैज्ञानिकों ने नवीन शोध कर इसमें नए आयाम जोड़े डॉ० मेस्मर के बाद **डॉ० जेम्स ब्रेड** और उनके बाद भारत के ही एक विद्वान सर्जन **डॉ० जेम्स एस्डेलर** ने तो चुनौती पूर्वक सम्मोहित कर न केवल शल्य क्रियाएं ही सफलता पूर्वक सम्पन्न कीं, वरन् प्रसव जैसे दुरूह विषय को भी हाथ में लिया, जिसमें तो अपार वेदना होती है।

इसके पश्चात् जिस विद्वान् ने इसको पर्याप्त लोकप्रियता दी, वे थे डॉ० चारकोट। उन्होंने अनुभव किया, कि **'हिस्टीरिया'** वास्तव में मन में दबी क़ाम-वासनाओं के कारण ही होता है, अतः यदि रोगी को सम्मोहित कर उचित भावना दे दी जाए, तो इसका निदान सम्भव है। बाद में तो **सिग्मंड फ्रायड** की महत्वपूर्ण और विश्व प्रसिद्ध थ्योरी विश्व के समक्ष आयी, जिसमें उन्होंने सिद्ध किया, कि किस तरह से सम्मोहन मानव के शैशव से लेकर वृद्धावस्था तक उपयोगी होता है। डॉ० चारकोट की व्याख्या के बाद ही वैज्ञानिक और डॉक्टर इसकी व्यापकता के विषय में सोचने को बाध्य से हो गए।

मानसिक चिकित्सा

यद्यपि विकसित होता सम्मोहन ज्ञान चिकित्सा के कई विभागों में अपनी विशिष्ट पहिचान बना चुका है, किन्तु जिस क्षेत्र में इसका सर्वाधिक ऋण है, वह है मानसिक समस्याओं

का क्षेत्र। मानव-मन अत्यन्त कोमल होता है, कब उसके मन पर जाने-अनजाने में कौन-सा आघात लग जाए और वह जीवन भर के लिए कुंठित हो जाए या मनोग्रंथियों में जकड़ जाए, इसका कोई निश्चित अनुमान नहीं लगाया जा सकता, और न ही इसका कोई निश्चित समाधान ही ढूंढा जा सका है। ऐसे में सम्मोहन ज्ञान ही ऐसा एकमात्र माध्यम बचता है, जिससे किसी के अतीत में झांककर उसके मन के रहस्यों को समझा जा सकता है, और तब उसके मन की गांठें सुलझाई जा सकती हैं, साथ ही यह भी निर्देश दिया जा सकता हैं, कि जब वह माध्यम सम्मोहन निद्रा से मुक्त हो, तो यह भूल जाए, कि उसे सम्मोहित किया गया था, अथवा उसे कोई निर्देश दिया गया था।

इसका प्रभाव यह होता है, कि व्यक्ति यह समझता है, कि उसने अपने प्रयासों से ही समस्या सुलझा ली। उसे ऐसा सोचने भी देना चाहिए, क्योंकि इस तरह से जहां एक ओर वह मानसिक रूप से स्वस्थ होता है, वहीं अपने आत्मविश्वास में भी वृद्धि करता है। अब मनोरोगियों को आवश्यक नहीं, कि मनोचिकित्सालय में कैदियों की तरह जीवन भर सड़ें या बिजली के झटकों की दुःसाध्य यंत्रणा सहें अथवा लम्बे-लम्बे उपचार के क्रमों से जीवन पर्यन्त उलझें।

मनोरोगियों की ही एक श्रेणी है, जिसमें वे व्यक्ति आते हैं, जो किसी दुर्घटना से अथवा किसी मानसिक पीड़ा से अपनी स्मरण शक्ति खो बैठते हैं, इसका सामान्य चिकित्सा पद्धति में प्रायः कोई उपचार नहीं है। यूं ही कई दवाइयों के सहारे जीवन एक प्रकार से घसीटा जाता है, जबकि सम्मोहन इस क्षेत्र में निश्चित उपाय देता है। ऐसी स्थिति में होता यह है, कि जो बाह्य आघात से या मनोघात से व्यक्ति की स्मरण शक्ति लुप्त हो जाती है, वह उसकी चेतन पक्ष से होती है, अन्तर्मन से नहीं। अतः सम्मोहन कर्ता यह उपाय करता है, और व्यक्ति के अन्तर्मन को स्पर्श कर उसे यह आदेश देता है, कि वह जगने पर बाह्य मन को भी समस्त बातें स्मरण करा दे, इस प्रकार से व्यक्ति धीरे-धीरे सन्तुलित हो जाता है।

शरीर की पीड़ा

सम्मोहन का जो दूसरा उपयोग है, वह व्यक्ति के शारीरिक पक्ष की पीड़ाओं के निवारण से सम्बन्धित है, और इस प्रकार से कई प्रकार की पीड़ाओं का समाधान सम्भव है। विदेशों में तो शल्य क्रियाएं तक व्यक्ति को सम्मोहित कर की जाने लगी हैं, क्योंकि मूर्छित कर की जाने वाली औषधियां जैसे **क्लोरोफार्म** आदि व्यक्ति के शरीर के बहुत अनुकूल नहीं होतीं। यदि इनकी बहुत कम मात्रा दी जाय, तो ऑपरेशन के मध्य ही व्यक्ति को चेतना आने का भय रहता है, और वहीं अधिक मात्रा प्राणघातक नहीं तो, तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) के लिए अत्यंत हानिकारक तो होती ही है।

शल्य के साथ-साथ अमेरिका में तो अब सम्मोहन के माध्यम से शत-प्रतिशत प्रसव भी सम्पन्न कराये जाने लगे हैं, क्योंकि गर्भवती महिला का मानस और शरीर क्लोरोफार्म जैसी तीव्र दवा सहने की स्थिति में नहीं होता, जबकि सम्मोहन से उसे पूर्ण अनुकूलता मिल जाती है।

यह आवश्यक नहीं है, कि व्यक्ति को प्रकट शारीरिक पीड़ाएं ही हों, उसे अन्य प्रकार की भी जो पीड़ाएं शरीर में व्याप्त होती हैं, उसमें हृदय रोग, ब्लड प्रेशर, हाईपरटेन्शन, नाड़ी की गति बढ़ जाना, बोलते समय घबराहट होना आदि जटिल बीमारियां आती हैं। इनका प्रचलित निदान तो **ट्रैंक्वलाईजर** ही है, और वे तो शरीर को ही खोखला बना जाती हैं।

इसके विपरीत सम्मोहन के माध्यम से व्यक्ति के मन को छूकर उपचार किया जाता है, यह रोग तो वास्तव में अस्वस्थ मन की शरीर पर प्रकट हुई प्रतिक्रिया होते हैं, जिनका उपचार भी मन पर नियंत्रण कर, उसे स्वस्थ कर सम्भव हो पाता है। व्यक्ति मानसिक तनाव के कारण ही पेट की कई जटिल बीमारियों से ग्रसित हो उठता है, जिसमें **अल्सर** जैसी गम्भीर बीमारियां भी आती हैं। इनका उपचार भी मात्र पेट की दवा लेने से ही नहीं, वरन् अन्तर्मन को स्वस्थ कर ही हो सकता है, और ऐसा केवल सम्मोहन विज्ञान के माध्यम से ही तो हो सकता है।

ग्रन्थियां

प्रायः व्यक्ति अच्छी कद-काठी का होते हुए भी अपनी वाणी या श्रवण की किसी भी ऐसी हीनता से ग्रस्त हो सकता हैं, जिसका कुप्रभाव उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर पड़ने लगता है और उसे सभी जगह झेंप का सामना करना पड़ता है। प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों में कोई निश्चित विकास मिल नहीं पाता, और मिल भी नहीं सकता।

इसका कारण होता है, कि इन ज्ञानेन्द्रियों के पीछे जो ग्रन्थि सक्रिय होनी चाहिए, वह किसी कारणवश दबी रह जाती है अथवा विकसित नहीं हो पाती, और चिकित्सा के माध्यम से सम्भव भी नहीं। यह तो व्यक्ति की प्रबल इच्छा-शक्ति अथवा भावना जाकर, उस ग्रन्थि का स्पर्श कर उसे उत्तेजित करती है, तभी विकास सम्भव हो पाता है। व्यक्ति की यह प्रबल इच्छा-शक्ति कोई कुशल सम्मोहन कर्ता उसके अन्तर्मन को स्पर्श कर अपनी भावना के माध्यम से ही दे सकता है। शरीर की अन्यान्य ग्रंथियों के विषय में भी यही बात सत्य है। हमारी लम्बाई, पुरुषोचित या स्त्रियोचित सुन्दरता के लक्षणों के उभरने के पीछे भी तो कई ग्रंथियों का ही महत्व होता है।

विदेशों में वैज्ञानिक प्रारम्भिक सफलताओं से उत्साहित हो नित्य नए क्षेत्र में सम्भावनाओं पर विचार व प्रयोग करते ही जा रहे हैं। आश्चर्यजनक परिणाम तो तब मिले,
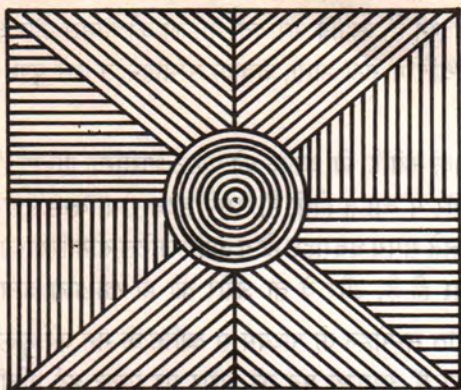
शक्ति चक्र

जब उन्होंने यह ढूंढ निकाला, कि सम्मोहन का उपयोग क्षय रोग, दमा व चर्म रोग जैसी प्रायः असाध्य मानी जाने वाली बीमारियों में भी सम्भव है। यह सर्वविदित तथ्य है, कि हमारा दुर्बल शरीर ही बीमारियों के कीटाणुओं से संक्रमण ग्रस्त हो, हमें रोगी बना देता है एवं उस दशा में फिर मन की दुर्बलता और निर्बल बना जाती है। इसी समय यदि व्यक्ति को बाह्य रूप से भावना देकर पर्याप्त अन्तर्बल प्रदान कर दिया जाय, तो कोई कारण ही नहीं, कि वह शीघ्र स्वस्थ न हो उठे। सम्मोहन के अनेक उपयोगों में यह भी एक उपयोग आता है, कि किसी रोगी को यदि किसी पदार्थ विशेष से घृणा हो, तो उसे वह पदार्थ खाने की प्रेरणा दी जा सके या कोई विजातीय पदार्थ छुड़वाया जा सके।

सम्मोहन विज्ञान का इस युग में जो सहयोग मिल रहा है, वह निरन्तर बढ़ती जा रही नशीले पदार्थों की समस्या के सन्दर्भ में है। नशा करने के पीछे अधिकांशतः व्यक्ति की कोई मनोग्रन्थि होती है, सामाजिक या घरेलू जटिलताएं हो सकती हैं, कार्य का बोझ हो सकता है या ऐसा ही अन्य कुछ और, जिसका सामान्य उपचार पद्धति में न तो कोई निदान सोचा गया है और न ही कोई उपचार। सम्मोहन विज्ञान ने इसे गहराई में जाकर समझा है, और उपचार दिया है, जिससे धीरे-धीरे यह सम्माननीय स्थिति प्राप्त करते-करते पूर्ण विद्या की श्रेणी में आ गया है। चिकित्सा विज्ञान में आज विभिन्न विषयों के साथ सम्मोहन विज्ञान स्वतन्त्र विषय के रूप में पढ़ाया जाने लग गया है।

❀

आप भी चमत्कारिक पुरुष बन सकते हैं

ऊपर मैंने इस लेख का शीर्षक देते समय "चमत्कारी" शब्द का प्रयोग किया है। यहां चमत्कार से मेरा तात्पर्य किसी प्रदर्शन अथवा इन्द्रजाल से नहीं है, न किसी विशिष्ट असर या प्रभाव को उत्पन्न करने से है, कि स्त्री या पुरुष बना देना, हवा में हाथ हिलाकर भभूत दे देना आदि, यहां मेरा तात्पर्य इस बात से है, कि आप अपनी वर्तमान जीवन शैली में परिवर्तन कर एक सुखी व श्रेष्ठ जीवन जी सकें, समाज, देश व इससे भी आगे बढ़कर समस्त संसार के प्रति एक सहायक बन सकें, और यह तभी सम्भव है, जब आपके पास जीवन ऊर्जा का अतिरिक्त प्रभाव हो, अतिरिक्त वेग हो। आपके पास एक ऐसा चुम्बकीय व्यक्तित्व हो, ऐसी शीतलता हो, कि लोग आपसे दो क्षण मिलकर तृप्ति अनुभव कर सकें, अपनी समस्याओं को भुला सकें।

आपने भी अपने जीवन में ऐसे व्यक्तित्व देखे होंगे, जिनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व इतना आकर्षक होता है, इतना हंसमुख व मिलनसार होता है, कि वे जिससे भी मिलते हैं, उसे या तो अपना बना लेते हैं या उसके बन जाते हैं।

आप अवश्य अपने मन में उन्हें देखकर सोचते होंगे, कि काश! मैं भी अपने जीवन को ऐसा ही ऊर्जावान, चैतन्य व आकर्षक बना सकता, मैं भी इसी तरह डाली पर झूमते पुष्प की तरह इठलाता ही रहता। शायद यह सब मात्र व्यक्ति के प्रयासों से सम्भव नहीं, क्योंकि वह तो सुंदर कपड़ों, अच्छे जूतों, अच्छे सेंट इन सभी से अपने को प्रभावशाली बनाना चाहता है, किन्तु कुछ कमी रह ही जाती है, आवश्यकता इस बात की है, कि हम खुले मस्तिष्क से

इस तथ्य पर विचार करें, क्योंकि सौन्दर्यवान बनने से जहां हमारे अंदर आत्मविश्वास और तृप्ति आती है, वहीं स्वच्छ, निर्मल सौन्दर्य सभी की तृप्ति का हेतु भी होता है।

मैंने अपने जीवन के समस्त अनुभवों को एकत्र कर जो निष्कर्ष पाया है, उन्हें कुछ सूत्रों में बांधा है, और ये सूत्र व्यक्तित्व निर्माण हेतु सम्पूर्ण व्याख्या हैं। यह भी साधना का प्रकार है, किन्तु शास्त्रीय नियमों-उपनियमों से सर्वथा मुक्त। इस पद्धति में कोई भी जकड़न नहीं है– यह किन्हीं परम्पराओं के किनारों से बंधी नहीं है, यदि आपने हिमालय से सीधे निकलकर आती हुई नदी का नर्तन देखा हो और उसके संगीत को समझा हो, तभी मेरी इस साधना पद्धति को समझ सकेंगे, इसमें समस्त रूढ़िवादी किनारों को तोड़कर स्वच्छ प्रवाह गतिशील मिलेगा।

मेरी इस पद्धति में, मेरे इन सूत्रों में किसी भी आसन, दिशा, माला, यंत्र का कोई भी विधान नहीं है। मेरा तो प्रयास ही इस बात का रहा है, कि समाज में जकड़े-जकड़े जो दुर्गन्ध आ चुकी है, उसे एक स्वच्छ नदी का संगीत और पवित्रता दे सकूं।

इस पद्धति में यह भी आवश्यक नहीं है, कि आप संन्यासी हों या सिद्ध साधक हों, आपको पद्मासन लगाना आता हो अथवा प्राणायाम ज्ञान की पूर्णता हो, आप चाहे नौकरी करते हों, चाहे व्यापारी हों, चाहे गृहस्थ, समान रूप से पात्र हैं, कि आप एक चुम्बकीय व्यक्तित्व के स्वामी बनें, समाज में यशस्वी बनें और अपने क्षेत्र में सफल हों।

इस हेतु प्रथम व आवश्यक तत्व यह है, कि आपके हृदय में छटपटाहट हो और प्रयासपूर्वक जीवन के इन्हीं क्षणों में किन्हीं चैतन्य, जीवित व जाग्रत गुरु की प्राप्ति कर लें। यहां मैंने तीन शब्द गुरु के प्रति दिए हैं– जीवित, चैतन्य एवं जाग्रत।

इसमें से प्रत्येक शब्द एक अर्थवत्ता से युक्त है। गुरु पद के अधिकारी व्यक्ति की पहिचान हेतु शास्त्रों में कई लक्षण बताए गए हैं, किन्तु मैं आपको सीधा सा उपाय बताता हूं, जहां पहुंचकर आपको एक तृप्ति सी मिले, मन में एक विश्वास सा आ जाय, कि यही मेरी समस्याओं का निदान दे सकेंगे, तो वही आपके गुरु हैं, यद्यपि आज के परिवेश में जो गुरुओं की भीड़ व्याप्त है, उसमें आपको सच्चा गुरु प्राप्त करने में कठिनाई तो हो सकती है, हो सकता है, कि आप किसी भव्य आश्रम व गुरु की चकाचौंध में थोड़ी देर के लिए खो भी जाएं, किन्तु आपके हृदय में यदि सच्ची लगन है, तो आप सच्चे गुरु को, योग्य गुरु को देर-सबेर खोज ही लेंगे। जब आपको सौभाग्य से ऐसे गुरु मिल जाएं, तो हृदय के समस्त बल से उनको तृप्त करने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि गुरु का मात्र एक अनुग्रह पूर्ण वाक्य ही समस्त वैभव प्रदान करने वाला होता है। प्रयास होना चाहिए, कि हम भावनाओं, चिंतन, सेवा के द्वारा उनके उस स्पर्श को प्राप्त कर सकें, जिसे शास्त्रों में लोहे की पारस से रगड़ की उपमा दी गई है, यह रगड़ प्राप्त करने की क्रिया 'दीक्षा' है।

दीक्षा

दीक्षा वास्तव में व्यक्ति का आत्मसंस्कार है, इस माध्यम से गुरुदेव अपने शिष्य पर जो मल-आवरण पड़ा रहता है, उसका क्षय अपनी विराट करुणा से करते हैं, जिससे व्यक्ति अपने शुद्ध स्वरूप का अनुभव कर पाता है एवं उसका व्यक्तित्व देदीप्यमान बन पाने में सफल होता है। दीक्षा मनुष्य के पशुत्व का हनन करने की प्रक्रिया है। दीक्षाओं के एक सौ आठ प्रकार वर्णित हैं, किन्तु क्रमबद्ध रूप में आठ दीक्षाओं का विधान है, यथा-**समय दीक्षा, ज्ञान दीक्षा, साधक दीक्षा, शांभवी दीक्षा, निर्बीज दीक्षा, भूति दीक्षा, शिष्याभिषेक एवं आचार्याभिषेक दीक्षा।**

यह मात्र आठ प्रकार के विधान ही नहीं, वरन् क्रमशः जीवन की एक-एक सीढ़ी चढ़ने की प्रक्रिया है, और उस बिन्दु पर पहुंचने की प्रक्रिया है, जिसे **'पूर्णमदः पूर्णमिदं'** कहकर अभिनन्दित किया गया है। इससे व्यक्ति न केवल आध्यात्मिक दृष्टि से वरन् भौतिक दृष्टि से भी एक श्रेष्ठता प्राप्त करने में समर्थ हो पाता है। सामान्य दीक्षा प्राप्त करने के बाद यह मान बैठना, कि हम सब कुछ प्राप्त कर चुके हैं, साधक की भूल होती है। सौभाग्यशाली व्यक्ति जीवन में सद्गुरु की तलाश करते हैं और प्रयास कर उनसे क्रमशः एक-एक करके आठों दीक्षाएं प्राप्त करते हैं। इसके लिए कोई जटिल या कठिन प्रक्रिया नहीं है, वरन् एक खालीपन लेकर गुरुदेव के पास जाना होता है और लबालब भर कर लौट आना होता है।

ध्यान

द्वितीय चरण में व्यक्ति या शिष्य के लिए आवश्यक होता है, कि वह अपने गुरुदेव के बताए मार्ग से ध्यान की गहराइयों में प्रवेश करे। ध्यान तो एक ऐसी प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को निरन्तर चैतन्यता, मानसिक विश्राम और एक गति प्रदान करती है। ध्यान करना तो ठीक इसी प्रकार है, मानो जल शांत हो और हम तलहटी तक झांक कर देख सकें।

ध्यान अपने अंदर की समस्त ऊहापोह, बेचैनी, छटपटाहट, व्यग्रता और तनाव को समाप्त करने की प्रक्रिया है। ध्यान के लिए बलात् आंख मूंद कर, एक कष्टप्रद अवस्था को धारण कर के नहीं बैठ जाना है, प्रारम्भ में हो सकता है, कि जब आप बैठें, तो आपको घर की समस्याएं दिखाई दें, ऑफिस की उलझनें सामने आयें, विकार और कुंठाएं उभर कर पीड़ा दें, किन्तु इससे घबराना व भागना नहीं है, शनैः-शनैः इसका अंत होता जायेगा और स्वतः ही मार्ग सूझने लग जाएगा।

आपको जब मात्र एक बिम्ब और वह भी आपके गुरु का हो, तो सर्वोत्तम, लेकर चुपचाप एक गहनता में खोजना है, चूंकि आपके गुरुदेव एक चैतन्य व प्रकट माध्यम हैं, अतः किसी भी देवी-देवता से अधिक प्रामाणिक हैं। उनका अवलम्बन लेने के पश्चात् आपको अनुभव

करना है, कि आप अपने ही अंदर प्रविष्ट हो रहे हैं, यदि आप ऐसा करने में कठिनाई अनुभव करें, तो चिन्तन करें, कि आपके गुरुदेव आपको गहनता में और स्वयं आपके अंदर आपको ले जा रहे हैं, फिर नाभि तक अभ्यासपूर्वक जाना है। नाभि तक की यात्रा के पश्चात् भी अंत नहीं कर देना है, वरन् और अंदर चिंतन पूर्वक लगभग दो अंगुल और नीचे जाना है। शरीर के इसी भाग में वह स्थान है, जिसे योगियों की भाषा में **'मूलाधार'** कहा गया है।

इसी मूलाधार में शक्ति सुप्त अवस्था में पड़ी रहती है एवं अधोगामी होकर संतानोत्पत्ति कर हम उसे व्यर्थ कर देते हैं। जब हम ध्यानपूर्वक वहां तक जाते हैं, उसे स्पर्श करते हैं, तो उसमें चेतना व्याप्त होती है और वह उर्ध्वमुखी होती है। मूलाधार में अवस्थित शक्ति का उर्ध्वगामी होना ही आनन्द की प्रतीति है, व्यक्ति का निखार है, तथा यही जब पूर्णता से जाकर सहस्रार मे अवस्थित हो जाती है, तो अखण्ड आनन्द की, पूर्ण कुण्डलिनी जागरण की दशा कहलाती है। पूर्ण कुण्डलिनी जागरण की स्थिति में व्यक्ति का सौन्दर्य अपूर्व तेज, सुगन्ध एवं सम्मोहन से आप्लावित सा हो जाता है।

वस्तुतः ध्यान कोई जटिल प्रक्रिया है ही नहीं, यह तो विद्वता के प्रदर्शन में कतिपय विद्वानों ने इसे जटिल घोषित कर दिया है। आवश्यकता इस बात की होती है, कि व्यक्ति प्रयास पूर्वक एवं चिंतन पूर्वक संलग्न रहे। प्रारम्भ की स्थितियों में जो भी संवेग आयें, चाहे वे क्रोध के हों, काम के हों, उन्हें उभरने दें, वे स्वतः ही निकलते जाएंगे और चित्त में अपूर्व शांति का प्रादुर्भाव होगा।

निर्विचार मस्तिष्क

ध्यान की गहनता में जाने पर मस्तिष्क में शून्यता की स्थिति आने लग जाती है। शून्य अपने-आप में शक्ति का उद्‌गम स्थल माना गया है। व्यक्ति के मस्तिष्क में प्रति सेकण्ड में लगभग तीन लाख विचार टकराते हैं। प्रत्येक क्षण हम एक साथ चेतन अथवा अवचेतन मन से भविष्य की योजनाओं में, भूत की स्मृतियों में, शोक में, पछतावे और ऐसे ही अन्य संवेगों में एक साथ डूबे रहते हैं, साथ ही वर्तमान की जटिलताएं तो व्यक्ति के साथ प्रति क्षण जुड़ी ही रहती हैं।

इसका प्रभाव यह होता है, कि मस्तिष्क के कोमल तंतुओं पर इतना अधिक दबाव व बोझ पड़ता है, कि व्यक्ति मानसिक रूप से पंगु सा हो जाता है। व्यक्तित्व का विकास करना तो दूर वह सामान्य व्यक्तित्व का भी स्वामी नहीं बन पाता, इसे वर्तमान परिप्रेक्ष्य का दोष कह लें या व्यक्ति की प्रवृत्ति में दोष, कि वह हर बात को तर्क से तोलता है, जिसका प्रभाव यह होता है, कि उसका चेतन मन पूर्णरूप से बुद्धि से प्रभावित हो जाता है, जबकि अवचेतन मन उपेक्षित सा पड़ निर्बल हो जाता है। इसका विपरीत परिणाम यह होता है, कि जीवन में कभी एकाएक कोई विपरीत परिस्थिति आ जाने पर उसका अवचेतन मन व्यक्ति का साथ नहीं देता, और 'नर्वस ब्रेक डाउन' की स्थिति बन जाती है।

इन सब दुःखद स्थितियों से बचने के लिए यह आवश्यक है, कि व्यक्ति एक विचार शून्य मस्तिष्क का निर्माण करे, वह सतत आत्म-निरीक्षण करे, कि उसे कौन से विचार चेतन रूप से, अवचेतन रूप से आक्रांत रखते हैं, और वह स्थिर चित्त होकर उनका उपाय सोच ले। व्यक्ति के अधिकांश विचारों के पीछे एक कल्पित भय होता है, जो कि आज के तीव्र, शोरगुल एवं छल युक्त वातावरण की देन कही जा सकती है। भूतकाल को लेकर चिंतन करना व्यर्थ है। भविष्य के चिंतन में भी अपने वर्तमान के क्षणों को नष्ट करना और उसके द्वारा जाने-अनजाने में जो अनुचित कार्य हुआ है, उसे प्रभु को समर्पित कर, क्षमा मांग तथा अगले दिन उसे न करने का निश्चय कर वह सुखपूर्वक, तनाव रहित जीवन व्यतीत करता है।

जैन धर्म की क्षमा-भावना में एक ग्राह्य वस्तु है। हम बहुधा किसी के दोष को लेकर तनाव में रहते हैं, जबकि यदि उसे हम सहज क्षमा कर दें, तो अपने जीवन को अधिक से अधिक शांति, उदात्तता व नए आयाम दे सकते हैं। सर्वोपरि तो दीक्षित व्यक्ति को यह दृढ़ विश्वास होना ही चाहिए, कि मेरे जीवन में अब एक सक्षम गुरु है, जो मुझे सब बाधाओं से पार निकालेंगे ही। क्रमशः इन्हीं सूत्रों का परिपालन कर एक समय ऐसा आयेगा, जब हम पूर्णरूप से विचार शून्यता की स्थिति में, भले ही निरन्तर नहीं किसी काल विशेष के लिए तो रह ही सकेंगे।

विचार शून्यता की स्थिति में व्यक्ति अपनी लघु देह व लघु परिवेश से कटकर समस्त ब्रह्माण्ड का एक अंग बनने की प्रक्रिया में होता है, और तब उसे भावना रखनी चाहिए, कि मैं असीम शक्ति के रूप में, एक पुंजीभूत रूप में, समस्त ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी व्याप्त है, उसमें विस्तारित हो रहा हूं। यह मात्र कल्पना का ही विषय नहीं है, वरन् इस समस्त ब्रह्माण्ड में ईश्वर तत्व का जो विस्तार है, और जिसके द्वारा ही तरंगों का संचरण सम्भव हो पाता है, उसके द्वारा व्यक्ति अपनी मानसिक तरंगों का भी विस्तार कर सकता है। एक स्थान पर बैठकर ही सैकड़ों मील दूर बैठे व्यक्ति को आज्ञा दी जा सकती है, सूक्ष्म शरीर के माध्यम से सैकड़ों मील दूर जाया जा सकता है, दूरस्थ स्थानों का वार्तालाप सुना जा सकता है तथा इसी प्रकार के कार्य, जो अचरज भरे प्रतीत होते हैं, मानसिक क्षमता के विस्तार मात्र से सम्भव हैं।

विराट सत्ता का एक अंग बनने पर साधक को कुछ घटनाएं या दृश्य भी दिख सकते हैं, जो उसके जीवन के लिए महत्वपूर्ण होते हैं अथवा जिनका महत्व वह अपने अंदर जो शक्ति संचरण प्राप्त करता है, उससे उसे आत्मविश्वास और प्रखरता निश्चित रूप से प्राप्त होती ही है। निर्बीज दीक्षा के बाद साधक सुगमता पूर्वक विचार शून्य मस्तिष्क के निर्माण की प्रक्रिया में स्वतः ही संलग्न हो जाता है।

उपरोक्त क्रमों का निरन्तर अभ्यास करते हुए एवं अपने अंतः पक्ष को पुष्ट करते हुए व्यक्ति को अपने बाह्य पक्ष को भी सफल बनाने का यत्न करना चाहिए, जिससे लोग आपसे प्रथम भेंट में ही प्रभावित हो सकें। बाह्य रूप से भी आपका प्रभावशाली व्यक्तित्व हो, इसके लिए विशेष कद-कादी या रंग नितान्त आवश्यक नहीं, नितान्त आवश्यकता तो इस बात की

है, कि आपके चुम्बकीय नेत्र हों, चुम्बकीय नेत्रों के माध्यम से तो संसार में वह कार्य किये जा सकते हैं, जो असम्भव ही क्यों न प्रतीत होते हों। हिंसक से हिंसक पशु तक को नेत्रों के माध्यम से शांत किया जा सकता है। सम्मोहन प्रक्रिया अपने-आप में एक सम्पूर्ण प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति न केवल अपने जीवन को संवार सकता है, वरन् अनेक प्रकार के समाजोपयोगी कार्य भी सम्पादित कर सकता है। इस विज्ञान के तो अत्यंत विशद क्षेत्र हैं और सम्भावनाएं हैं, वर्तमान में चिकित्सा विज्ञान के सहयोगी विज्ञान के रूप में इसे मान्यता प्राप्त हो ही चुकी है।

सम्मोहक व्यक्तित्व निर्माण

सम्मोहन ज्ञान की प्राप्ति, व्यक्तित्व निर्माण तथा चुम्बकीय नेत्रों की इच्छा रखने वाले साधक को नित्य बत्तीस मिनट का पूर्ण त्राटक अभ्यास शक्ति चक्र पर करना ही होगा। त्राटक का अर्थ होता है, मार्ग के अवरोधों को नष्ट कर देना और इसके अभ्यास से हम ऐसे किसी भी अवरोध को नष्ट कर सकते हैं, जो हमारे व्यक्तित्व के विकास में बाधक हो या जो परिस्थिति विशेष में बाधक हो।

सम्मोहन के पूर्ण ज्ञान के बाद यह आवश्यक सा हो जाता है, कि आपके पास यथार्थ में भी कोई विशेष विद्या या सिद्धि हो, उदाहरण स्वरूप आप जहां कर्ण पिशाचिनी सिद्ध कर, किसी का भूतकाल उसके सामने स्पष्ट कर अनुगामी बना सकते हैं। यह युग तो प्रदर्शन का है, और सफलता तभी सम्भव है, जब आप विशेष शक्तियों से युक्त हों, यदि आपके पास बगलामुखी सिद्धि है, तो ऊंचे से ऊंचा राजनेता भी आपके घर के चक्कर लगायेगा। यदि धूमावती साधना जैसी भूत-प्रेत नाश की विद्या आपने सिद्ध कर रखी है, तो आप कितना अधिक समाजोपयोगी कार्य कर सकते हैं और लोकप्रिय हो सकते हैं। ये विशेष साधनाएं, सिद्धियां व्यक्ति के अपने प्रयासों से इतनी सहज या सुगम नहीं है, जितनी कि गुरुदेव के आशीर्वाद एवं कृपा से, क्योंकि प्रत्येक साधना को सिद्ध करने का एक गुह्य सूत्र होता है, जो गुरु परम्परा में ही मौखिक रूप से अथवा गुप्त रूप से आगे बढ़ता है, और वह मात्र पुस्तकों के माध्यम से नहीं मिल सकता, यूं भी गुरु की तुष्टि ही साधना में पूर्णता का आधार होती है।

जो योग्य होते हैं, जिनकी सूक्ष्म बुद्धि होती है, वे शीघ्रता से अपना अहं त्याग कर, स्व को गुरुदेव में विसर्जित कर एवं व्यर्थ के द्वंद्वों व कुतर्कों से मुक्त हो, क्षणों को पकड़ते हुए तीव्रता से गुरु-चरणों में अपने को लीन कर विभिन्न दीक्षाओं के माध्यम से इन समस्त आयामों को, स्थितियों को प्राप्त कर सकते हैं, यह प्राप्ति कोई वर्षों की बात नहीं है, वरन् सत्य, निष्ठा पूर्वक पालन किये जाने पर मात्र पैंतीस दिनों में ही सम्भव है, मैं इस तथ्य का साक्षीभूत रहा हूं।

❋

हम प्रातः उठते हैं, दांतुन-कुल्ला, शौच, स्नान आदि कर सुबह के इन नित्यकर्मों से निवृत्त हो, अपने दैनिक कार्य पर चले जाते हैं। सुबह ही इन कुछ सामान्य सी क्रियाओं को निपटा हम अपने शरीर के प्रति अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। यहां 'कर्त्तव्य' शब्द को उल्लिखित करने का एक निश्चित ध्येय है, क्योंकि ईश्वर प्रदत्त इस देह की रक्षा करना, इसको स्वच्छ, सबल बनाए रखना हमारे भारतीय जीवन दर्शन में ईश्वर की आराधना ही मानी गई है। इसके उपरांत भी हम अपेक्षा रखते हैं, कि लोग हमसे आकर्षित हों, हमारे पास खिंच कर आयें। यह मात्र चिंतन से सम्भव नहीं होने वाला, इसके लिए तो हमें इस शरीर के विषय में नए ढंग से सोचना होगा और इसे सजाना व संवारना होगा।

वर्तमान में यौगिक आसनों को लेकर जो धूम मची है, वह आज के व्यस्त युग में बेमानी है, क्योंकि न तो उनकी जटिलता समझने की किसी के पास फुर्सत है और न जीवन के कीमती घंटे खपाने की। तब फिर हम क्या करें, कि अल्प समय में ही अपनी इस देह को सजा सकें, उसमें अतिरिक्त निखार ला सकें?

इस मानव-शरीर को संवारने के पहले हमें इसे समझना भी होगा, और समझ कर जब हम इसे आंतरिक बल देंगे, तो वही बाह्य रूप से सौन्दर्य बन कर छलकेगा। हमारे पूर्वज इसके प्रति पर्याप्त सचेत थे, फलस्वरूप उनके पास इस शरीर से कार्य लेने की क्षमता भी कहीं अधिक थी। आज जिसे हम सिद्धि और चमत्कार समझ कर अभिभूत होते हैं, वह उनके द्वारा

इस शरीर के सहज उपयोग से ही सम्भव थी। भविष्य ज्ञान, भूत ज्ञान आदि उनके लिए कोई कठिन क्रियाएं नहीं थीं।

हमारी परम्परा में इस सम्पूर्ण देह में कुछ केन्द्र निर्धारित किए गए, जिनके प्रति ध्यान देना दैनिक जीवन का एक आवश्यक अंग ही माना गया। इसके पीछे धारणा यह थी, कि हम यदि शरीर के किसी अंग की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देंगे, तो वह शनैः -शनैः निष्क्रिय हो जाएगा। इस हेतु प्रतिदिन शरीर के समस्त केन्द्रों का कुछ समय चिन्तन करने की, उन्हें चैतन्य रखने की व उनमें प्राण-शक्ति संचयित करने की परम्परा बनी। जब प्राण-शक्ति के संचय की बात आती है, तो यह सहज सी जिज्ञासा मन में उठती है, कि संचय कैसे और कहां पर? प्राणों का यह संचय इन्हीं विभिन्न केन्द्रों पर किया जाता है, इससे प्रत्येक अंग सबल होकर जहां एक ओर बीमारी, दुर्बलता से मुक्त रहता है, वहीं प्राण-शक्ति के संचयन से चुम्बकत्व भी बढ़ने लगता है।

शरीर के महत्वपूर्ण केंद्रों की संख्या १५ है। ये इस प्रकार से हैं–

१. पैरों की दोनों तलहटियां
२. दोनों पिण्डलियां
३. दोनों जंघाएं
४. गुप्तेन्द्रिय
५. नाभि
६. हृदय
७. दोनों फेफड़े
८. दोनों कंधे
९. दाहिना हाथ, भुजा, पंजा
१०. बायां हाथ, भुजा व पंजा
११. दोनों आंखें
१२. दोनों कान
१३. मुख
१४. नाक
१५. भृकुटि

इनके चिन्तन का क्रम भी यही है, जो उपरोक्त रूप से दिया है। इस हेतु अर्थात् इनको चैतन्यता देने हेतु आपको कोई विशेष तैयारी नहीं करनी है। आपको केवल सर्वप्रथम शवासन में चले जाना है, तथा कुछ समय तक उसी अवस्था में रहने के बाद धीरे-धीरे श्वास-प्रश्वास लेते हुए उपरोक्त क्रम से अर्थात् तलहटी से आरम्भ करके क्रमशः भृकुटी तक आना है, और यह भावना करनी है, कि इनमें बल संचार हो रहा है। प्रारम्भ में कुछ कठिनाई हो सकती है, क्योंकि बाह्य मन और अन्तर्मन एक न होने से मन केंद्र पर टिकता नहीं या क्रम गलत हो जाता है या क्रम भूल जाता है, किन्तु ऐसी स्थितियां नहीं, जिन पर सहजता से काबू न पाया जा सके।

शरीर का उपरोक्त ढंग से चिन्तन करने के बाद विलोम क्रम भी करना आवश्यक

होता है अर्थात् भृकुटी से आरम्भ कर तलहटियों तक आना होता है, तब एक चक्र पूर्ण होता है। इस अभ्यास को तभी करना उचित रहता है, जब आपके मन में हड़बड़ी न हो तथा वातावरण शांत हो।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रख **योगीराज स्वामी वासुदेव जी** द्वारा खोजी गयी विधि, जिसे उन्होंने 'योग अष्टक' की संज्ञा दी है, सर्वाधिक उपयुक्त है, क्योंकि उसमें वर्णित आठ यौगिक आसनों को करने में दस मिनट से अधिक समय नहीं लगता, और कोई विशेष बंधन भी नहीं होता। इन विधियों से जहां एक ओर शरीर सुडौल, आकर्षक होता है, वहीं आंतरिक रूप से भी चैतन्यता प्राप्त होती है। कुछ साधकों को तो यहां तक अनुभव हुए हैं, कि नियम पूर्वक करने से उनके शरीर से सुगंध आनी आरम्भ हो गयी, उनका क्रमबद्ध रूप इस प्रकार है–

प्रथम चरण

दोनों पैर मिलाकर खड़े हो एवं दोनों हाथ सीने पर दबाते हुए (प्रणाम मुद्रा में) नेत्र बंद कर मन को एकाग्र करें।

इससे मन की एकाग्रता में सहायता मिलती है तथा वीर्य सिंचित प्रवाहित करने वाली नाड़ी को पर्याप्त बल मिलता है, जिससे ओज में वृद्धि होती है।

द्वितीय चरण

सीधे खड़े होकर, गर्दन को पीछे झुकाकर दोनों नेत्रों के मध्य देखने की चेष्टा करें।

यह अपलक तब तक करें, जब तक आंखों से पानी न निकलने लगे, और इस क्रिया को दो-तीन बार दोहरायें।

इससे नेत्रों को बल तो मिलता ही है, साथ ही उनमें कटीलापन आ जाता है, जिससे कोई देखने वाला आपको एकटक देखता रह जाएगा। आंखों के नीचे के दाग, झुर्रियां भी कुछ ही दिनों के अभ्यास से गायब हो जाती हैं।

तृतीय चरण

सीधे खड़े होकर सिर को तेजी से पीछे एवं आगे फेंके। पीछे फेंकते समय यह ध्यान रहे, कि सिर पीठ से लगे एवं आगे की दशा में ठोढ़ी वक्षस्थल से लगे। कुछ देर यह करने के बाद गर्दन को बांए से दांए एवं फिर दाएं से बाएं गोल घुमायें तथा अंत में गर्दन को सीधी तान कर, एकदम कड़ा कर तेजी से श्वास-प्रश्वास लें।

इस अभ्यास का प्रभाव यह होता है, कि सभी नाड़ियों का पुञ्ज गर्दन में होने से एक आंतरिक शुद्धि तो आती ही है, साथ ही वाणी की अस्पष्टता, तुतलाहट, पतलेपन में भी सुधार हो मिठास आ जाती है।

चतुर्थ चरण

इसमें सीधे खड़े होकर, पहले दोनों हाथों की मुट्ठी बंदकर झटके से आगे व पीछे फेंके। कुछ देर तक ऐसा करने के बाद दोनों हाथों को सीधा कर, मुट्ठी बांध कर कलाइयों को बाएं से दाएं घुमायें। इसके पश्चात् उंगलियों को खोलें और जोर से मुट्ठी भींचें।

पंचम चरण

इस चरण में पहले दोनों हाथों को ऊपर तान कर कमर को पीछे झुकाते हैं, तथा फिर दूसरे भाग में गर्दन को पीछे फेंक दोनों हाथों से एड़ियों के पीछे वाले भाग को छूने का प्रयत्न करते हैं।

इस क्रिया से जहां एक ओर पुरुषों का वक्षस्थल चौड़ा होता है, वहीं स्त्रियों के स्तन सुडौल एवं आकर्षक बन जाते हैं। हृदय दौर्बल्य, दमा आदि के निवारण हेतु भी यही आसन उपयोगी है।

षष्ठम चरण

सीधे खड़े होकर, दोनों हाथ जंघाओं पर जमाकर जरा सा झुकें, पहले तो ढेर सी वायु अंदर भर लें, फिर उसे निकाल कर इस स्थिति तक आयें, कि पेट पिचक कर गड्ढा बन जाये, ऐसा लगभग पच्चीस-तीस बार करें।
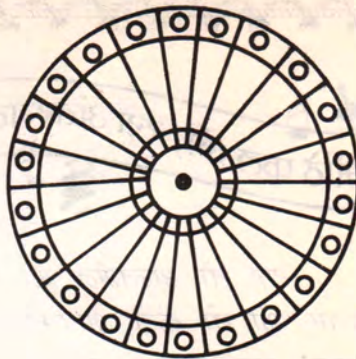
शक्ति चक्र

इस विधि से पेट की सुडौलता तो मिलती ही है, साथ ही पाचन शक्ति सुधर जाने से चेहरे पर लालिमा आ जाती है। नाभि पर जोर पड़ने से व्यक्ति के अंदर आध्यात्मिक शक्तियों का विकास सहज ही हो उठता है।

सप्तम चरण

सीधे खड़े होकर, हाथ पहले पीछे ले जाकर कमर पर रखें, पीछे झुकें, फिर उसी तरह हाथ जमाए हुए आगे झुक कर नाक को घुटनों से स्पर्श कराने का प्रयास करें।

इस अभ्यास से कमर की फालतू चर्बी छंट कर शरीर को दर्शनीय तो बनाती है, साथ ही वीर्य बल में बृद्धि भी होती है, और स्वप्न-दोष, नपुंसकता, डाईबिटीज, बवासीर जैसे रोगों का निदान भी सम्भव हो पाता है।

अष्टम चरण

इस क्रम में सीधे खड़े होकर, बांए पैर को उछाल कर कमर के समानांतर लांए, फिर दांए को। इस क्रिया को कुछ देर लगातार करें।

यह जंघाओं में रक्त संचार की विधि है, और उन्हें अतिरिक्त बल देने की प्रक्रिया है। इससे जंघाओं पर जमा चर्बी समाप्त होती है एवं यह विधि घुटनों के दर्द, गठिया में भी पर्याप्त लाभप्रद सिद्ध हुई है।

इस प्रकार अपने शरीर के प्रति थोड़ा सा सचेत होकर हम सहज ही प्राण संचय करने की श्रेष्ठ दशा बना सकते हैं। जब तक पात्र ही सबल नहीं होगा, तब तक उसमें कोई बहुमूल्य पदार्थ रखा भी कैसे जा सकेगा? हमारा-आपका शरीर ही वह पात्र है, जिसमें हम प्राण संचय कर, चुम्बकत्व भर आकर्षक व सम्मोहनकारी व्यक्तित्व के धनी बन सकते हैं।

❋

आनंद! . . . यह तो अन्तर्मन की विषय वस्तु है, हम बताएं भी तो कैसे आपको? खुद ही सुनकर 'कुछ' अनुभव कर लीजिए आप भी! पूज्यपाद गुरुदेव की आनंदमय स्वर लहरी में रचे इन कैसेट्स के माध्यम से कौन कह सकता है उस आनंद का स्वरूप, जो गुरु वचनों को सुनने के बाद उमडा हो मन में, पर हम बांध लाए है उसे, आपके लिए इन आडियो कैसेट्स के रूप में, आप विलग न रह पाएंगे इनसे . . .

प्रेम और जीवन

- प्रेम धार तलवार की
- प्रेम पंथ अति कठिन है
- प्रेम न हाट बिकाय
- अकथ कहानी प्रीत की
- पिव बिन बुझे न प्यास
- सूली ऊपर सेज पिया की
- घूंघट के पट खोल री
- गुरु मोरे जीवन प्रेम आधार
- प्यार के घुंघरुओं की खनक
- प्रेम गली अति सांकरी

* न्यौछावर प्रति कैसेट् - 30/-

सम्पर्क
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
डॉ श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट, कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291-32209,
फैक्स : 0291-32010

सद्गुरु हम सूँ रीझ के कह्या एक प्रसंग

. . . बस एक ही प्रसंग क्यों? सद्गुरु तो अपने प्रत्येक शिष्य से सदैव किसी नूतन प्रसंग की चर्चा करते रहते हैं, क्योंकि सद्गुरु किसी एक तथ्य पर, किसी एक शास्त्र या धर्मग्रंथ को पकड़ कर जीवन भर उसी पर प्रवचन देने वाले व्यक्तित्व होते ही नहीं

. . . उनके समक्ष तो बिखरे होते हैं
जीवन के विविध पक्ष, विविध आयाम।
भौतिक भी, आध्यात्मिक भी।
इसी को स्पष्ट कर रही हैं ये कृतियां
जिनमें एक ओर यदि ज्ञान व चेतना है, तो वहीं जीवन का उच्छ्वास, जीवन की धड़कन और जीवन की मधुरता का भी समावेश है . . .

ये अनमोल कृतियां

- भुवनेश्वरी साधना 15/-
- बगलामुखी साधना 15/-
- स्वर्ण सिद्धि 15/-
- तंत्र साधना 15/-
- मैं बाहें फैलाए खड़ा हूं 15/-
- मैं सुगंध का झोंका हूं 15/-
- हंसा उड़हूं गगन की ओर 15/-
- अप्सरा साधना 15/-

:: सम्पर्क ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ.श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट, कॉलोनी,
जोधपुर (राज.) फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010
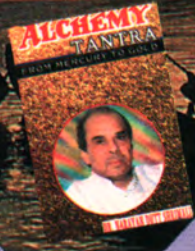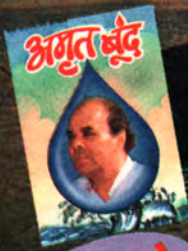
आपके जीवन के लिए अमूल्य

अमृत बूंद

अमेरिका के साधक हीच पोलर की डायरी में लिखित पूज्यपाद गुरुदेव के जीवन के कुछ दुर्लभ अन्तरंग क्षण, जिसके बारे में प्रत्येक व्यक्ति जानने का इच्छुक है, कि गुरुदेव कब गृहस्थ में रहे, कब संन्यास में रहे और किस प्रकार से विभिन्न संन्यासियों से मिलकर साधनाओं और सिद्धियों को प्राप्त किया।

न्यौछावर – ६०/-

ऐश्वर्य महालक्ष्मी साधना

महालक्ष्मी से सम्बन्धित अनेक साधनात्मक पुस्तकें हैं, लेकिन तांत्रोक्त व प्रत्येक व्यक्ति के लिए सरल, सहज, साध्य लक्ष्मी साधनाएं प्राप्त होनी दुष्कर हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में ऐसी ही साधनाओं का समावेश है।

न्यौछावर – ४०/-

Alchemy Tantra

पारद विज्ञान या स्वर्ण विज्ञान के संसार में यह ग्रन्थ अंग्रेजी भाषा में सर्वोत्कृष्ट ज्ञान समेटे है। पारद विज्ञान आज भारत में कुछ गिने-चुने व्यक्तियों के पास ही रह गया है, जो कि अपने आपमें दरिद्रता को कोसों दूर भगाने का विज्ञान है।

इस ग्रंथ में विभिन्न महत्वपूर्ण ग्रन्थों और श्रेष्ठ संन्यासियों से प्राप्त स्वर्ण बनाने की विधि संग्रहीत है।

न्यौछावर – २४०/-

:: सम्पर्क ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ.श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट, कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291–32209, टेली फैक्स : 0291–32010